''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र दिमागी संकटहारी है और ध्यान अमृत दायक है।

स्मारिका- २००९-१०

ॐ आनन्दमय
ॐ शान्तिमय

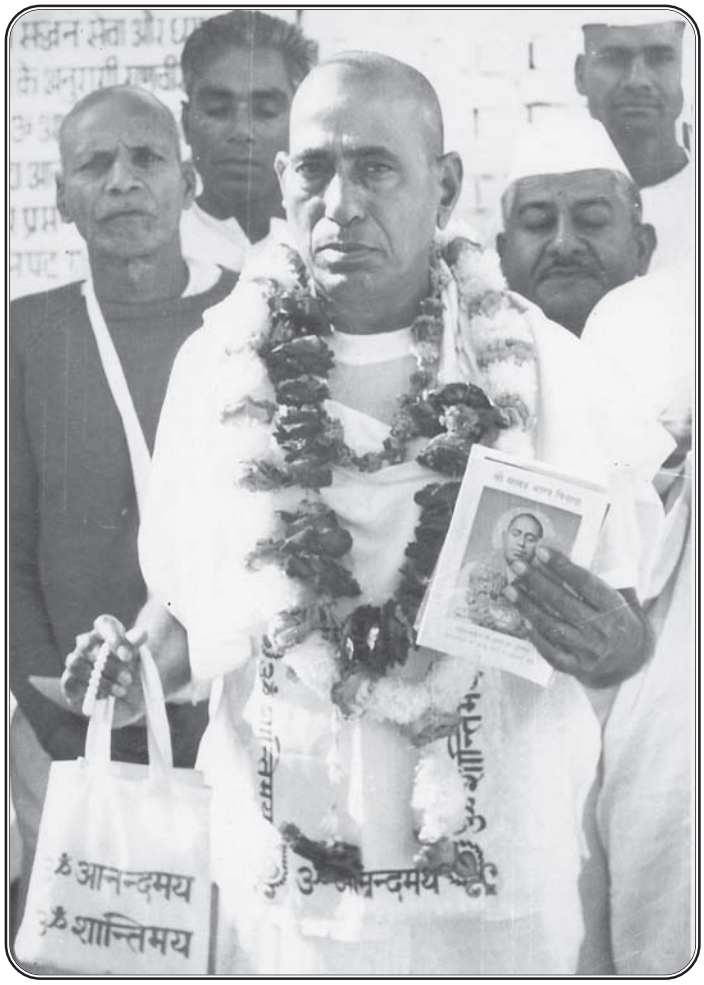

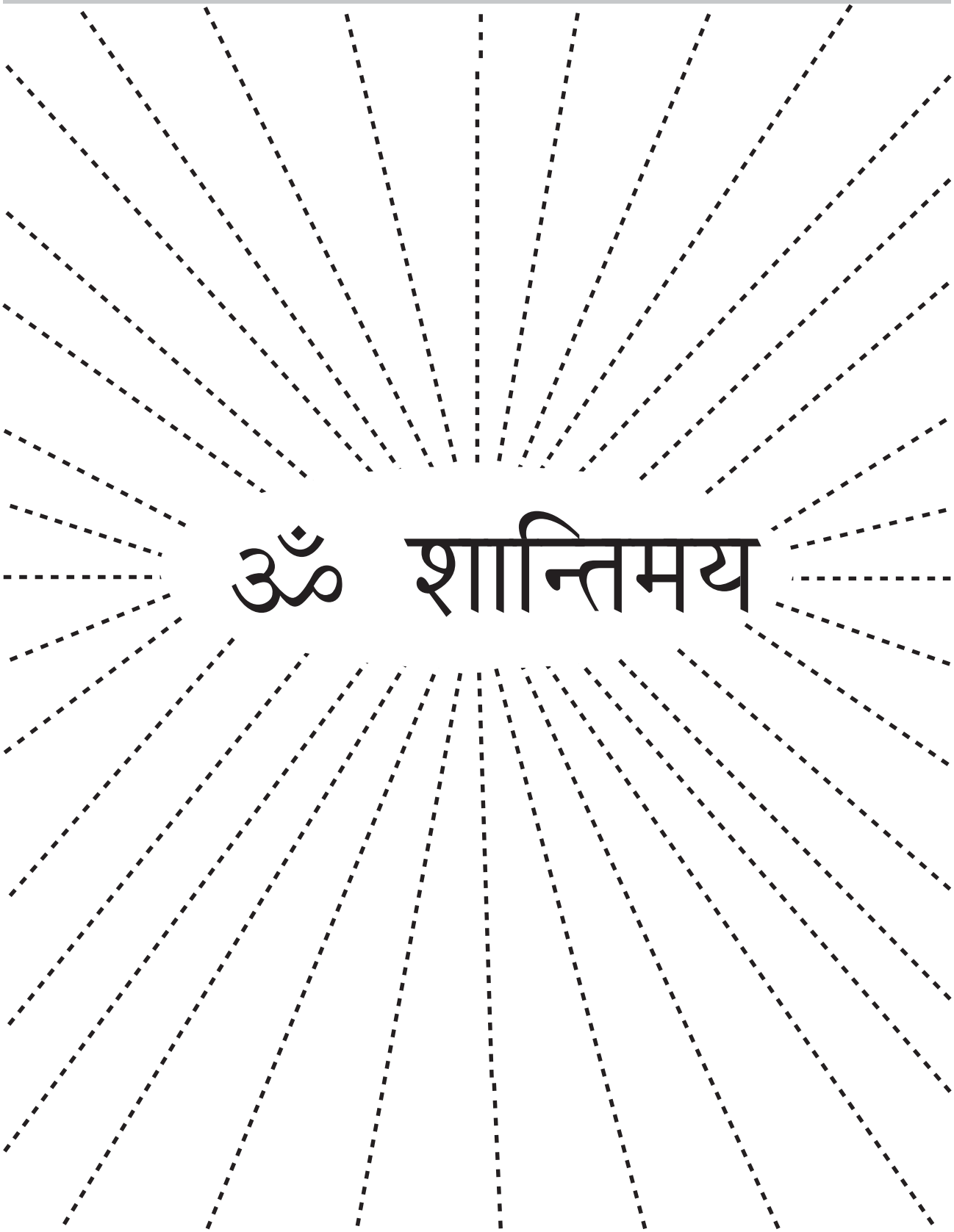
ॐ शान्तिमय

''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र दिमागी संकटहारी है और ध्यान अमृत दायक है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

स्मारिका- २००९-१०

प्रकाशक
श्री विश्वशान्ति आश्रम
झूँसी-इलाहाबाद

''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र दिमागी संकटहारी है और ध्यान अमृत दायक है।

ॐ आनन्दमय ***ॐ शान्तिमय***

ॐ श्री समाधिमग्न सृजनदेव शरणम्

प्रिय,

श्री सिद्ध-साधक, पाठक एवं भक्तगणों श्री विश्वशान्ति आश्रम, झूँसी-इलाहाबाद द्वारा प्रचारित-प्रसारित गीता-ज्ञान समस्त मानव जाति के लिए लाभकारी है, जिसे निष्काम रूप से आत्मसात् करके अपने दिलों-दिमाग को शान्ति और शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है। शक्ति-भक्ति और ज्ञान की गंगा गीता के मूल महामंत्र ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' में सारगर्भित है, जिसका जप-तप-ध्यान करके व्यक्ति-समाज और विश्व को लोककल्याणकारी बनाया जा सकता है। अत: मूलरूप से गीता-ज्ञान को विश्व के जन-जन तक पहुँचाना, उसके ज्ञान को पालन करने को उत्प्रेरित करना और महामंत्र ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' का महत्व बतलाना श्री विश्वशान्ति आश्रम का मूलभूत कार्य व कर्त्तव्य है। इस पत्रिका के माध्यम से लोगों के अनुभव व गीता-ज्ञान को विश्व के लोगों के समक्ष रखने का उत्साह पूर्वक प्रयास जारी है ताकि लोग इस महामंत्र के महत्व को आसानी से समझ सकें और लोककल्याण में सहभागी बन सकें। ***ॐ शान्तिमय*** ***-संपादक***

संपादक	आनन्दमय- नन्द लाल सिंह **E-mail takhtotaaz@rediffmail.com**
संयोजक	आनन्दमय- ओम प्रकाश सिंह
आशीर्वाद	सभी गुरुजन लोगों का
सहयोग राशि	**25 रुपये**
प्रकाशक	**श्री विश्वशान्ति आश्रम** त्रिवेणीपुरम, झूँसी, इलाहाबाद
कम्प्यूटर कम्पोजिंग	**शचि कम्प्यूटर्स** **381-ए, पुराना अल्लापुर, इलाहाबाद।** **Mo. 9838244448** **E-mail takhtotaazprakashan@gmail.com**

नोट- इस पत्रिका से प्राप्त धन का उपयोग पत्रिका के अगले अंक के प्रकाशन को और बेहतर बनाने व इसकी संख्या बढ़ाने में किया जायेगा। ताकि अधिक से अधिक लोग आश्रम के ज्ञान से परिचित हो सकें और ध्यान के महत्व व विधि को समझ सकें।

''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र दिमागी संकटहारी है और ध्यान अमृत दायक है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

प्रत्येक मनुष्य सुख शान्ति युक्त आनन्द सम्पन्न व शक्ति सम्पन्न होने के अभिलाषी हैं। तद्नुसार कोई विद्या अध्ययन से, कोई धन से, कोई श्रम से, कोई सन्तानों से, कोई अस्त्र-शस्त्र बल से व कोई धर्म इत्यादि विभिन्न प्रकार से मृत्यु पर्यन्त अनुष्ठान करते व करवाते रहते हैं परन्तु राजसी तामसी मनुष्यों के संग दोष के कारण वास्तविक आनन्द प्राप्ति का ज्ञान न होने से मनुष्य दु:खी अशान्त होकर अन्त में अपने भाग्य पर दोषारोपण करते हुये अमूल्य मानव शरीर का विसर्जन कर श्री भगवत् न्याय से अन्य योनियों को प्राप्त हो जाते हैं अस्तु!

मानव भाग्य विधाता अर्थात् आनन्द शक्ति के दाता श्री कृष्ण भगवान ने मनुष्य के आन्तरिक आनन्द-शक्ति के प्रभाव को जानते हुये श्री गीता अ० ४/३४ में उस आनन्द शक्ति की प्राप्ति के लिए श्री समाधिमग्न महापुरुषों की आज्ञापालन का आदेश दिया और मनुष्य श्रेष्ठ व कनिष्ठ किन-किन कारणों से होता है उनका विस्तार ज्ञान अ० १४ में बतलाया कि सात्त्विक, राजसी व तामसी तीन प्रकार के मनुष्य इस लोक में विद्यमान हैं उनमें से जिनके ज्ञान को धारण करता है वैसा ही मनुष्य दु:ख सम्पन्न व आनन्द सम्पन्न बनता जाता है।

भगवन्! मेरा पारिवारिक जीवन भी वैसा ही था जैसा कि वर्तमान के एम.ए., बी.ए. पढ़े हुये धनी-मानी लोगों का है। बनावटी पण्डित-महात्माओं के आदेशानुसार प्रतिदिन नये-नये धर्मों का अनुष्ठान तथा धन और सन्तान तैयार करते हुये अपना विषयी जीवन क्रमश: दु:खी-अशान्त अर्थात् चिन्तित-क्रोधित होता जा रहा था। दूर देश-वासियों की संस्कृति को आदर देने वाले न्याय व्यवहारी श्री पिता देव को धार्मिक पिपासा व उनके पूज्य प्रभाव से श्री महापुरुष देव आनन्दयोगी जी का श्री भगवत् कृपा से रेलगाड़ी में ही समागम हुआ। गुण परीक्षक श्री पिता जी ने रेलगाड़ी की यात्रा करते हुए ही श्री महापुरुष देव के मुखारबिन्दु से योग सिद्ध वैदिक सनातन महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय को धारण किया। तत्कालीन मन:शान्ति का अनुभव करते हुए श्री आपका अनुभूति श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग (१) प्राप्त किया। उस श्री ग्रन्थ का अध्ययन करते हुए श्री महापुरुषों की यद्किंचित सेवा-सुश्रुषा करना प्रारम्भ किया। श्री पिता देव जी की कृपा से मुझे भी श्री गुरू भगवान का दर्शन प्राप्त हुआ और मैंने प्रतिदिन दो घंटा प्रात: ६ बजे से ८ बजे तक श्री महापुरुष देव का अमृत ज्ञान श्रवण किया तद्नुसार प्रतिदिन कर्तव्य व अकर्तव्य का ज्ञान होने लगा। ॐ श्री महापुरुष भगवान के प्रेम प्रभाव से मुझे व मेरे साथी प्रेमियों को मन: शान्तियुक्त आत्मिक आनन्द का अनुभव होने लगा। अधिक क्या लिखूं प्रथम सप्ताह में ही मेरा ध्यान लगने लगा जिसके कारण मेरी श्रद्धा एक निष्ठ हो गई क्योंकि बनावटी गुरूओं के मुख से मैंने सुन रक्खा था कि मन की एकाग्रता युक्त ध्यान की मग्नता सतयुग में ही होती है परन्तु अब तो प्रत्यक्ष आनन्द का अनुभव कर पिता और पुत्र दोनों ही एकत्व श्रद्धा-प्रेम की रस्सी में बँध गये। हम लोगों की सुख-शान्ति युक्त आनन्द मग्नता का दर्शन-श्रवण कर राजसी आनन्द में मग्न रहने वाली मेरी धर्म-पत्नी भी श्रद्धालु हो गई जो वर्तमान समय में तो श्री विश्व सेवा पद की पढ़ाई में अपने से भी आगे बढ़ी हुयी है। उनके सद्गुण-सदाचार युक्त भाग्य की महिमा गायन करना अनिर्वचनीय होना सम्भव है।

मुझे अत्यन्त गौरव है कि हम एक परिवार के तीनों ही शरीर सात्विक धारणायुक्त एकमत हो गये। हम लोगों ने मिलकर निवास स्थान प्रयाग नगर में ही श्री महापुरुष देव के प्रत्यक्ष आनन्द-शान्ति दायक गुण ज्ञान युक्त प्रभाव का प्रचार करना प्रारम्भ किया। ॐ श्री महापुरुष भगवान के प्रेम-प्रभाव से तीन ही वर्ष के अन्दर प्रयागराज में सैकड़ों ही परिवार दु:ख अशान्ति दायक चिन्ता-क्रोध को त्यागते हुए श्री भगवत् ध्यान आनन्द शान्तियुक्त प्रेम-प्रसन्नता का दर्शन दे रहे हैं।

—श्री आनन्द कृष्ण जी आनन्दमय, इलाहाबाद

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

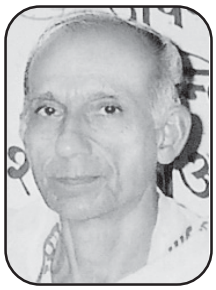

संसार में प्राय: सभी मनुष्य बहुत अशान्त रहते हैं कारण कि उनके हृदय में बहुत से मानसिक रोग व्याप्त हैं उनके कारण ही वह परेशान रहते हैं। मन हर समय कुछ न कुछ संकल्प करता रहता है। क्योंकि वह बिना संकल्प किए रह नहीं सकता, यदि संकल्प देना ॐ आनन्दमय प्रभु जी बन्द कर दें, तो शरीर द्वारा कोई क्रिया ही नहीं हो सकती। अब रहा कि संकल्प वैसा ही ॐ शान्तिमय श्री प्रभु जी देते हैं जैसा कि दिन भर दर्शन-श्रवण प्राप्त होता रहता है। इसलिये महापुरुषों का आदेश है कि सात्त्विक दर्शन श्रवण पठन द्वारा सात्त्विक संकल्पों को ग्रहण करें, और राजस - तामस दर्शन - पठन द्वारा राजस तामस संकल्पों का त्याग करें, जिससे मनुष्य का जीवन आनन्दमय हो सकता है। जिस प्रकार भोजन बनाने के यंत्र में लकड़ी के कोयले से भोजन बनता है, उसमें यदि खान से निकाला हुआ पत्थर का कोयला या लकड़ी ही जला दी जाय, तो वह भोजन विष रूप हो जायेगा। ज्ञानवान ज्ञाता उसे खाने से मना ही करेंगे और कहेंगे कि लकड़ी के कोयले की गैस निकालने के बाद जो कोयला रह जाता है, उसे जलाकर भोजन बनाओ तब वह खाने लायक होगा।

इसी प्रकार मन में शुद्ध संस्कार देने का विधान है, परन्तु दिये जाते हैं अशुद्ध संस्कार, जिससे दु:ख, अशान्ति, परेशानी बढ़ती रहती है और मनुष्य परेशानी के बन्धनों से जकड़ जाता है। हमें आवश्यकता है- फल-पुष्पों की और यदि हम बीज बोतें हैं विष का और उसकी सेवा-रक्षा करते हैं तो वह हमारे लिये सदा हानिकारक ही होगा। इसी प्रकार हम चाहतें हैं कि हमारे मन में आनन्द-शान्ति बनी रहे। परन्तु अपने मन में संस्कार ऐसे भर लेते हैं कि परिणाम स्वरूप दु:ख - अशान्ति की ही वृद्धि होती रहती है। और जीवन भर राग-द्वेष, कलह-क्लेश, नाराजगी-क्रोध-भय-रूदन आदि मानसिक तापों से देह - दिमाग चौपट ही बना रहता है।

अब प्रश्न यह होता है, जिज्ञासा होती है, कि जो संस्कार हमारे हृदय में भर गये हैं, उनको हम कैसे परिवर्तन करें?

इसके लिये श्री विश्वशान्ति आश्रम से प्रकाशित श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में मानसिक - चिकित्सा का ज्ञान लिखा है, इसको दैनिक पढ़ते रहने से यह ज्ञान होता है कि कौन से संस्कार श्री विश्वपिता ॐ आनन्दमय प्रभु के अनुकूल है व कौन से प्रतिकूल हैं। किनका हमें ग्रहण करना है और किनका हमें त्याग करना है।

इस प्रकार १२५ सूत्रों में अर्थात् मंत्रों में दिमागी आनन्द-शान्ति दायक संस्कारों को अपने अन्दर जाग्रत करने की विधि-विधान का ज्ञान प्रकाशित है यही धर्म है, यही अमृत है, यही ज्ञान है, यही भगवत् भाव है। यदि भगवत भाव न हो तो हर सेवा कार्य में हर प्रेमी पदार्थ, वातावरण में कलह - क्लेश, चिन्ता-नाराजगी ही मिलेगी। सदा विपरीत ज्ञान का प्रवाह ही बहता रहेगा।

त्रिकाल संध्या की दैनिक प्रार्थना में प्रथम सूत्र में लिखा है कि हे श्री विश्वपिता भगवान सम्पूर्ण विश्व में शान्ति प्रदान करें। परन्तु मनुष्य मात्र मैं और मेरी की उन्नति चाहता है । यही स्वार्थ भाव है, यही विष का बीज है। परमार्थिक भाव ही श्रेष्ठ जीवन है, यही परोपकारी जीवन है एवं यही आनन्द - शान्ति प्राप्त करने का मार्ग है। ॐ शान्तिमय

– आनन्द किरन आनन्दमय

दैनिक-प्रार्थना

ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नमः

श्री गुरु वन्दना

नमो नमो गुरु आनन्दकन्दम्
नमो नमो गुरु शान्तिकन्दम् ।।
मायारहितं त्रिगुणातीतम्
स्थितप्रज्ञं गुरु परमानन्दम् ।।
हो कैवल्यं हो अवधूतम ,
ज्ञानमूर्ति आत्मानन्दम् ।।
नित्यं, एकम्, स्वच्छं शुद्धम्
सदा उदीतं निज आनन्दम् ।।
नत मस्तकं आनन्द नमामी,
सद्गुरु तव चरणार्विन्दम ।।

हिन्दी अर्थ–

हे श्री गुरू भगवान आपको बारम्बार नमस्कार है, आप शान्ति और आनन्द के भण्डार हैं अर्थात् समुद्र हैं, माया से रहित हैं, गुणों से अतीत हैं और आप सर्वशक्तिमान ॐ आनन्दमय भगवान में स्थित हैं, जो परमानन्द हैं। आप उस पद को प्राप्त हैं और अवधूत हैं।

आप आत्मज्ञान और आत्मिक सुख के स्वरूप हैं, आप ॐ आनन्दमय भगवान में अभिन्न भाव से स्थित हैं। भीतर बाहर से शुद्ध हैं और स्वयं प्रकाश देने वाले हैं। आप आनन्द के आचार्य हैं।

हे सद्गुरू भगवान मैं आपके श्री पावन चरणों में बारम्बार नमस्कार करता हूँ।

ॐ त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।
कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयःस्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।।

हिन्दी अर्थ–

हे श्री ॐ आनन्दमय भगवान, आप ही हमारे माता-पिता, भाई-बन्धु, सखा हैं। आप ही विद्या एवं आप ही हमारे धन हैं तथा आपही हमारे सभी देवों के देव हैं।

हे श्री आनन्दमय भगवान मैं कायरता रूप दोष से उपहत हुये स्वभाव वाला तथा धर्म के विषय में मोहित चित्त हुआ। मैं आपसे पूछता हूँ जो धर्ममय साधन निश्चित कल्याण-कारक हों, वह मेरे लिये कहिये, मैं आपका शिष्य हूँ, आपके शरण हूँ, मुझको शिक्षा दीजिये।

प्रेमी भक्त की प्रार्थना

*- भगवन्! यह चिन्ह (*) वक्ता और श्रोताओं के उच्चारण की सुविधा के लिए विश्राम के रूप में समझना चाहिए।

१- हे श्री विश्वपिता भगवान् ! * सम्पूर्ण विश्व में – ''*'' शान्ति प्रदान करें !

२- हे दयासिन्धु भगवान् ! * सम्पूर्ण मनुष्यों की बुद्धि को * सत्यव्यवहार में * प्रेरित करें।

३- हे पतितपावन भगवान् ! * सम्पूर्ण जीवों के * दु:ख-पापों का * नाश करें !

४- हे श्री आनन्दमय भगवान् ! * सम्पूर्ण प्राणियों को * आनन्द प्रदान करें।

५- हे श्री आनन्दमय प्रभो ! * सम्पूर्ण मनुष्यों को * समता, प्रेम, * और सात्त्विक ज्ञान प्रदान करें !

६- हे दीनदयालु भगवान् ! * सम्पूर्ण जीवों को * उपयोगी अन्न, वस्त्रादि प्रदान करें!

७- हे श्री ज्ञानस्वरूप भगवान् ! * हमारे मन-बुद्धि को * निरहंकारी श्रद्धा-प्रेमयुक्त सेवा-पूजा के कार्यों में * संलग्न करें।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के आदेश

८- हे प्यारे प्रेमियों ! * मेरे ॐ आनन्दमय * ॐ शान्तिमय * नाम-रूप को मत भूलो, * मुझे सर्वत्र, सब रूपों में * और अपने हृदय (दिमाग) में मानो ।

९- हे परम प्यारे देवी-पुरुषों ! * तुम तन धन से * विश्वशान्ति दायक * ध्यान-समाधिमग्न * गुणवानों की * उदारता पूर्वक सेवा करो !

१०- हे प्रेमियों ! * श्रद्धा, प्रेम, विश्वास करो * मैं तुम्हारा * परम हितैषी हूँ।

११- हे मित्रों ! * आसुरी अहंता, ममता युक्त प्रेम, * तथा दु:ख, चिन्ता, * कामना, क्रोध, * ईर्षा, द्वेष * और कलह मत करो, * अपनी आठ इन्द्रियों को * वश में करते रहो !

१२- हे प्रेमी प्यारो ! * विश्वास करो * मैं सुख, शान्ति * और आनन्द, शक्ति * प्रदान करूँगा !

१३- हे प्रेमी भक्तों ! * ध्यानयोग * और सेवायोग का अभ्यास करो * मैं पूर्णानन्द प्रदान करूँगा !

१४- हे परम प्यारे देवी-पुरुषों ! ध्यान समाधिमग्न * सत्य महापुरुषों का * संग, सेवा, स्मरण * आज्ञापालन * करो और कराओ * ज्ञान होगा !

प्रेमी भक्त की प्रतिज्ञा

१५- हे ज्ञानदाता भगवान ! * मेरे ज्ञान में * चराचर * सब कुछ श्री आप ही हैं * (एक श्री आनन्दमय भगवान् ही * अनेक रूपों में हैं) !

१६- हे श्री विश्वपिता भगवान् ! * मैं बुद्धि से अपना शरीर * तथा सम्पूर्ण प्रेमी-पदार्थ * श्री आपके ही मसझूँगा !

१७- हे श्री आनन्दमय भगवान् ! * मैं श्री आपके दिव्य नाम * ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय * महामंत्र को * हर समय मन से मनन * तथा वाणी से उच्चारण करता रहूँगा !

१८- हे श्री गुरुदेव भगवान् ! * मैं तन एवं पदार्थों से * श्री आपके प्रेमियों की सेवा * और आनन्द शक्ति दायक * ॐ आनन्दमय भगवान् के विधान का * प्रचार करता रहूँगा !

१९- हे समदर्शी भगवान् ! * मैं लाभ-हानि, * जीवन-मरण, * मान-अपमान, * स्तुति-निन्दा * अनुकूलता-प्रतिकूलता * तथा सुख-दु:खों की प्राप्ति में * राग-द्वेष एवं हर्ष-शोक रहित * सहनशीलता *

धीरता, वीरता, * गम्भीरता व निर्भयता * और समता, प्रसन्नता, * शान्ति सन्तोष पूर्वक * हर समय * निरहंकारी दया-प्रेम युक्त * भगवत् आनन्द में मग्न रहूँगा !

२०- हे श्री आनन्दमय भगवान् ! * मैं ध्यान-समाधिमग्न * महापुरुषों का * संग, सेवा, स्मरण, * आज्ञापालन करता रहूँगा !

२१- हे श्री न्यायकारी भगवान् ! * मैं राजसी-तामसी मनुष्यों के अनुकूल * संग-सेवा का त्याग करूँगा * तथा ममता-अहंकार बुद्धि से * अन्न, धन, * वस्त्र, भवन, * जमीन आदि पदार्थों का संग्रह नहीं करूँगा। * सात्त्विक पदार्थों का भोजन * एवं सात्त्विक वस्त्र धारण करूँगा ।

(क) सकल पदार्थ हैं जग माहीं।
श्री प्रभु मर्यादा हीन नर पावत नाहीं।।

(ख) आठ पदार्थ अन्दर माहीं।
ध्यान हीन नर पावत नाहीं।।

(ग) संयम, सेवा, स्मरण सादगी।
ध्यान-योगी का ध्यान।।

(घ) पाँचों से अति शीघ्र हो।
आनन्द पद का ज्ञान।।

ॐ श्री आनन्दमय भगवान् की जय !

ॐ श्री महापुरुष भगवान् की जय !!

ॐ श्री सतगुरू देव भगवान् की जय !!!

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

– हुकुमचन्द्र जी आनन्दमय

यह नाम बड़ा सुखकारी है,
इस नाम की महिमा भारी है।।
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय,
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय।
इस नाम को जो जपते हैं,
भवसागर से वह तरते हैं।।
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय,
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय।
इस नाम को जो मन भजते हैं,
सारे संकट उनके मिटते हैं।।
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय,
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय।
इस नाम को जो जन रटते हैं।
सारे रोग उनके मिटते हैं।।
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय,
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय।
इस नाम को जो जन सुनते हैं।
सारे विघ्न बाधायें उनके हटते हैं।।
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय,
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय।
इस नाम के जो मतवाले हैं।
वह सेवक किस्मत वाले हैं।।
यह नाम बड़ा सुखकारी है,
इस नाम की महिमा भारी है।।

ॐ श्री गुरुदेव भगवान शरणम्
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं बचपन से ही प्रभु जी की पूजा करती रही हूँ। किन्तु नियमित और निष्काम भाव से नहीं। जनवरी २००६ में प्राथमिक विद्यालय में मुझे सेवा प्राप्त हो गयी किन्तु उसमें आत्मसंतुष्टि नहीं थी। जून में ही मा० शिक्षा सेवा चयन बोर्ड द्वारा इण्टरमीडिएट कालेज मोढ़ झाँसी में चयन हो गया। वहाँ से रिफ्यूजल कराया गया, किन्तु तभी समायोजन पर रोक लग गयी। एक वर्ष पश्चात रोक हटने पर सारी व्यवस्था करने के बाद मेरा समायोजन फिर से मऊरानीपुर झाँसी में हो गया। मैं वहाँ सर्विस नहीं कर सकती थी क्योंकि मेरा परिवार यहाँ रहता है। मैं बहुत परेशान चिन्तित रहती थी। तभी किसी ने बताया कि वैभव लक्ष्मी का व्रत रखने से कार्य पूरा होता है। भगवन मैं भटक गयी, यह भूल गई कि प्रभु जी कहते हैं कि– ''हे प्रेमियों श्रद्धा, प्रेम, विश्वास करो मैं तुम्हारा परम हितैषी हूँ।''

मैंने ११शुक्रवार का व्रत रखा फिर भी कार्य पूरा नहीं हुआ।

सितम्बर में ओमप्रकाश भगवन मेरे घर आए सूचना देने के लिए कि २१सितम्बर २००८ से झूँसी आश्रम में सत्संग शुरू हो रहा है। मैंने उनको अपनी उलझन बताई। उन्होंने कहा कि धन दौलत तो बहुत लोगों के पास है किन्तु मानसिक शान्ति ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र के जपने से ही मिलती है। उनकी बातों ने ऐसा प्रभाव किया कि उनके जाने के बाद मैंने ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र जपा। बहुत आनन्द आया। मैंने प्रण किया कि २१ को सत्संग में जाऊँगी। सौभाग्य से २१,२२,२३ को मेरी छुट्टी थी। २४ को मैं स्कूल गयी वहाँ बच्चों को जप कराया। बच्चों को मानव भाग्य विधाता ग्रन्थ बाँटा और नियमित पूजा कराती थी। पूरा एक महीना अक्टूबर का बीत गया। मेरे प्रयास करने पर भी, मेरी परीक्षा प्रभु जी ले रहे हैं। दूने उत्साह से ध्यान करती थी। अब कुछ पाना शेष न था। मेरे साथी कहते, प्रभु जी से प्रार्थना करो काम बन जाय। मैंने कहा जो मेरे हित में होगा प्रभु जी वही करेंगे। एक महीने बाद नवम्बर माह में, मैं १५ मिनट के लिए सत्संग में पहुँची। मैंने प्रभु जी को धन्यवाद दिया। मेरा कार्य जो कि असम्भव था लगभग पूरा हो गया। १३ दिसम्बर को मैंने शिवाजी इण्टर कालेज सहसों में ज्वाइन कर लिया। मुझे आश्चर्य होता है कि निष्काम कर्म, और भटकाव दूर करने के लिए ऐसा हुआ। मैं छः महीने से निष्काम भाव से पूजा-ध्यान-स्मरण कर रही हूँ। मेरी माता जी पहले से ही अनुभवी थीं और अब मेरी दो बहनें जिनमें एक कोलोफोर्निया (अमेरिका) में दंत चिकित्सक है और दूसरी बहन एमडी की पढ़ाई अमेरिका में ही कर रही है, वह भी पूर्ण अनुभवी है और अमेरिका में भी प्रचार-प्रसार करती हैं।

– डॉ० नीलम सिंह (अध्यापिका)

श्री गुरु-देव का आदेश

उत्तम साधक अपने हृदय को आजीवन ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के अनुकूल संयम, सेवा और जप-ध्यानयुक्त सर्वगुण सम्पन्न निष्कामी बनावें !

भगवत् - सृष्टि में दो ही आदर देने योग्य वस्तु हैं-
१- महात्मा २- खाद

महात्मा– आत्मा को स्वस्थ और बलवान बनाता है।

खाद– शरीर को स्वस्थ और बलवान बनाती है।

जैसे ध्यानमग्न महात्मा से रहित इस ब्रह्मवाटिका से सम्बन्ध करने वाले जीव क्रमशः दुर्बल होकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। वैसे ही खाद रहित ऊसर भूमि से सम्बन्ध करने वाले बीज नष्ट - भ्रष्ट हो जाते हैं।

भोजन सम्बन्धी वनस्पति का विकास हो और अकर्मण्यता का त्याग हो।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

इस महामंत्र की महिमा इतनी अपरम्पार है कि जो भी इसका जाप करता है वो ही इसका तुरन्त लाभ पाता है। हमारे पड़ोस में एक गरीब और अनपढ़ महिला रहती है, नाम है उनका ग्यासो देवी। उन्ही का ये अनुभव मैं उन्ही के शब्दों में आपके सामने रख रही हूँ।

भगवन! मैं एक अनपढ़ महिला हूँ, मेरे पतिदेव मन्द बुद्धि के हैं, ऐसी स्थिति में समाज में मेरी क्या हालत होगी यह आप सब भगवतभक्त शीघ्रता से समझ गए होंगे। भगवन् गरीबी तो अपने आप में ही एक बड़ी विकराल समस्या है ऊपर से पतिदेव रोग से ग्रसित हो गए, आजीविका चलाने के लिए ही बड़े पापड़ बेलने पड़ते थे और पतिदेव का इलाज भी करवाना था। शारीरिक चिकित्सा के साथ, तांत्रिकों और पीर पैगम्बरों पर भी ले जाते हुए २५ वर्ष व्यतीत हो चुके थे, परन्तु कहीं से भी कोई लाभ नहीं मिल पा रहा था। हाँ, मैं यहाँ बताना चाहूँगी कि पतिदेव को तांत्रिकों के पास क्यों ले जाना पड़ता था–

भगवन्! आस-पास गाँव में अथवा रिश्तेदारियों में जहाँ कहीं भी कथा-कीर्तन या धार्मिक अनुष्ठान होते थे तो मेरे पतिदेव वहाँ जाकर उछल-कूद मचाते थे, हुड़दंग करते थे यहाँ तक कि रोकने पर गाली-गलौज भी करने लगते थे, ४-५ आदमी मिलकर बड़ी मुश्किल से इनको अपने नियन्त्रण में लेते थे, यह देखकर सभी लोग कहते थे कि इनके ऊपर बाहरी हवाओं का साया है, कोई कहता भूत-प्रेत का साया है, कोई सलाह देता इनको तांत्रिक के पास ले जाओ, कोई कहता कि ओझा से झाड़-फूँक करवाओ कोई कुछ कहता और कोई कुछ। इसी तरह मैं इनको लेकर यहाँ से वहाँ और वहाँ से यहाँ भटकती रही, ऐसा करते-करते लगभग २५वर्ष बीत गये और इन २५वर्षों की गाढ़ी कमाई भी तांत्रिकों, ओझाओं की भेंट चढ़ गई।

ऐसे ही जीवन चल रहा था कि एक और नई समस्या ने आकर जीवन रूपी गाड़ी को ही रोक दिया, साँसे थम गई थी, प्राण पखेरु उड़ने को तैयार लग रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो कोई भूचाल आ गया हो, मृत्यु रूपी राक्षस मुँह फैलाए सामने खड़ा था। कोई रास्ता न सूझते हुए ॐ आनन्दमय प्रभु की कृपा ही कहूंगी कि मुझे पद्मा बहन की याद आई, मैं तुरन्त पद्मा बहन के पास गई, उन्होंने मेरी इस भयातुर व दुखद स्थिति का अन्दाजा लगा कर तुरन्त बड़े प्रेम से अपने पास बैठाया, दिलासा दिया और प्रेम-पूर्वक मेरी समस्या के बारे में पूछने लगी पद्मा बहन के प्यार भरे व्यवहार से मेरे दिल का गुबार बाहर निकल आया, मैं फूट-फूट कर रो पड़ी और बताया कि, ''बहन जी मेरा लड़का तो गया''। पूछा कहाँ गया, तो बताया कि, ''आज रात में ही मेरे लड़के पर छोड़ यानि हाँडी आयेगी और वह मर जायेगा, अब मैं अपने लड़के को कैसे बचाऊँ, तांत्रिक को देने के लिए कहाँ से ३०००रु० लाऊँ जबकि घर में ३रु० भी नहीं है।'' पद्मा बहन ने मुझे फिर बल-पूर्वक आश्वस्त करते हुए कहा कि, ''तुम चिंता न करो न तो कोई हाँडी आयेगी और ना ही तुम्हारे लड़के को कुछ होगा, रोना-धोना विल्कुल बन्द करो मेरे साथ-साथ यहीं बैठ कर जोर-जोर से ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय उच्चारण करो, मैं शपथ पूर्वक कह रही हूँ कि तुम्हारे लड़के को कुछ नहीं होगा।''

मैंने तुरन्त ही बहन के कहेनुसार मंत्र जपना प्रारम्भ कर दिया, भगवन् ! जैसे-जैसे मैं महामंत्र जपती जाती थी, मृत्युरूपी दलदल जो मेरे सिर से ऊपर तक थी शनैः शनैः नीच की ओर आनी शुरु हो गई, ऐसा मैंने प्रत्यक्ष अनुभव किया। मेरी स्थिति में वहीं बैठे-बैठे चमत्कारिक परिवर्तन होने लगा, ऐसे लगा जैसे पुनः जीवनदान मिल गया हो, फिर क्या था मैं मंत्र जपती गई और इसमें असीम आनन्द और निश्चिंतता का अनुभव करती गई, मुझे ऐसा लगा कि जितने जादू टोने मैंने आज तक देखे सुने हैं उनमें ये सबसे बड़ा जादू है। मेरी चिन्ता कोसों दूर भाग चुकी थी और आँखों में जहाँ अब तक भय व आँसू थे वहीं अब निडरता व प्रसन्नता थी।

भगवन् ! यह लाभ तो मुझे केवल पाँच मिनट महामंत्र जपने का मिला, अब जो साधक नित्य निरन्तर महामंत्र जपने के साथ-साथ सत्संग व भजन-ध्यान करते हैं उनके लाभ का तो वर्णन ही नहीं हो सकता। यह घटना घटे लगभग एक वर्ष हो गया है। तबसे मैं नित्य मंत्र जाप करती हूँ, सुबह-शाम प्रार्थना करती हूँ। अनपढ़ होने की वजह से स्वाध्याय तो नहीं कर सकती लेकिन पद्मा बहन के पास जाकर ज्ञान-चर्चा, सत्संग व भजन-ध्यान अवश्य करती हूँ और अपने स्थान पर भी सत्संग करवाती रहती हूँ, फलस्वरूप मेरे समस्त दुःख समाप्त हो चुके जीवन में हरियाली ही हरियाली छा गई अब हर समय मैं प्रभु के प्रेम में मग्न रहती हूँ, मंत्र जाप करते हुए मुझे अपार आनन्द की अनुभूति होती है। अब मेरे पतिदेव भी स्वस्थ होते जा रहे हैं। भगवन् ! मुझे पूरा-पूरा विश्वास था कि मेरे स्थान पर होने वाले सत्संग में मेरे पतिदेव अवश्य हुड़दंग मचायेंगे परन्तु भगवान की दिव्य दृष्टि से ऐसा नहीं हुआ और ये शान्त भाव से पूरे समय श्री सत्संग में विराजित रहे। तब से अब तक मैं कई बार सत्संग करा चुकी हूँ। इससे बढ़कर भगवान की कृपा दृष्टि का और क्या चमत्कार हो सकता है।

मैं अब श्री भगवान से यही प्रार्थना करती हूँ कि,''हे प्रभु! मुझे सदा-सर्वदा अपने आश्रय में रखना, नित्य-निरन्तर अपना सुमिरण भजन-ध्यान देना। ॐ शान्तिमय

-ग्यासो देवी

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

इस मंत्र की जितनी मथानी चलेगी उतना ही मक्खन रूपी आनन्द बाहर आयेगा। ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी ने १८ ग्रन्थों में जो लिख दिया है शायद एक कमरे में भरी हुई किताबों से प्राप्त नहीं किया जा सकता है और ॐ आनन्दमय भगवान ने इतना सरल और सूत्र रूप से लिख दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति को आसानी से समझ में आ जाये जिस प्रकार से बड़े से बड़े सवाल सूत्र मालूम होने पर चुटकियों में हल हो जाता है। या किसी किसी मुहावरे के द्वारा व्यक्ति के चरित्र के बारे में जानकारी हो जाती है उसी प्रकार से हमारे इष्ट भगवान ने हमको जो सूत्र रूप ये ग्रन्थ प्रदान किये हैं मैं उनकों पाकर अपने को धन्य समझता हूँ और अपने गुरुदेव भगवान को कोटिश: प्रणाम करता हूँ।

मैं अपना एक अनुभव लिख रहा हूँ आप समझेंगे कि ॐ आनन्दमय भगवान कहाँ नहीं है बस आपकी पुकार सच्ची होनी चाहिए।

मैं एक टू व्हीलर लिमिटेड कम्पनी में कार्यरत था और परमानेन्ट पोस्ट थी और लगभग चार वर्ष कार्यरत रहा सभी दिनचर्या सामान्य रूप से चल रही थी। अचानक एक दिन फैक्ट्री बन्द का नोटिस लग गया मैनें न्यूज पेपर देखा तो पता चला कि अनिश्चित काल के लिए बन्द हुआ है फिर मैंने सोचा कि जब बुलायेंगे तभी जायेंगे परन्तु तीन महीने गुजर गये और हमारा डेली का जाना बन्द था और बच्चों के लिए भी लौटते समय कुछ ले आते थे वह भी बन्द था बच्चे भी सहमें से थे कि पापा की फैक्ट्री बन्द हो गयी है इसलिए कुछ नहीं ला रहे हैं परन्तु मेरा दिमाग अभी इस ओर नहीं गया क्योंकि सम्मिलित परिवार में रहने के कारण घर के कामों में ही लगे रहते थे तथा कोई विजनेस के बारे में सोचते थे फिर घर में एक दिन पत्नी से किसी बात पर नाराजगी हुई (मेरी पत्नी न ही ऊँची फरमाइश करती है न ही किसी की बराबरी करती है और सामान्य जीवन जीने का प्रयास करती है) तो उसने सुबह-सुबह मेरे चेहरे की तरफ देखा उस दिन का देखना मुझे आज भी याद है कि जैसे वह कर रही हो कि तुम मर्द हो तुम्हें ही अपने परिवार को चलाना है तुम्हें ही अपने बच्चों की छोटी बड़ी जरूरतें पूरी करनी है तुम्हें ही उनकी फीस जमा करनी है आदि। पत्नी ने मुझसे कहा कुछ नहीं मगर उसकी आँखों में मैंने सब कुछ पढ़ लिया जो उसको कहना था।

फिर मैंने उसी दिन संकल्प लिया कि मुझे दूसरी नौकरी करनी है अब समस्या थी कि कानपुर में उस वेतन की नौकरी नहीं थी अभी तक घर से मोटर साइकिल से घर चला जाता था बाहर जाने में सब कुछ मुझे स्टेब्लिस करना था खैर मैंने उसी दिन से न्यूज पेपर देखना चालू किया और ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप बराबर करने लगा बस तीसरे दिन श्री प्रभु पिता जी की वजह से मेरे अनुकूल दो जगहें दिखाई दी एक में घर से बाहर रहना था और एक कानपुर में ही थी फिर मैंने फोन से बात की और मुझे इन्टव्यू के लिए बुलाया गया। मेरा एक ही दिन में दोनों जगह सेलेक्शन हो गया। फिर मैंने ॐ आनन्दमय भगवान की प्रेरणा से कानपुर में ही ज्वाइन कर लिया यहाँ पर पहले से अच्छी पेमेन्ट और अच्छी पोस्ट मिल गई।

ॐ आनन्दमय भगवान की लीलाओं का तो पल-पल पर अनुभव होता रहता है बस उस बरसात में नहाने की हिम्मत करने वाला होना चाहिए।

– श्री अविनाश अवस्थी कानपुर

श्री अनुभव अंक से
आनन्द-शक्ति और दु:ख-अशान्ति

१- श्री ध्यानयोगी के अनुकूल संग, सेवा करने से और सात्त्विक मनन-विचार से सुख-शान्ति और आनन्द-शक्ति की सिद्धि प्राप्त होने का विधान है।

२- कामी-क्रोधी मनुष्यों के अनुकूल संग-सेवा करने से और राजसी-तामसी मनन-विचार से काम-क्रोध चिन्ता, भय और नाराजगी वर्द्धक दु:ख-अशान्ति की सिद्धि प्राप्त होने का विधान है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

आनन्द शक्ति सम्पन्न ब्रह्म विधान के पारदर्शी

ॐ श्री महापुरुष भगवान् - शरणं।

नित्य निरन्तर भगवत कृपा का अनुभव कर सभी को ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय। सभी आनन्दमय भगवन् की बहुत याद आती है। जून में घूमने जाते थे और सभी को आनन्द-शक्ति मिलती थी। सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ ॐ आनन्दमय भगवान की विशेष कृपा के प्रभाव से ऐसा दुर्लभ संग अब हम सबको कैसे मिलेगा। घर की एक दिन सफाई न किया जाये तो बहुत सारा कूड़ा एकत्र हो जाता है। ऐसे ही इस नौ द्वार वाले शरीर को सत्संग न मिले तो इसमें कचरा भर जाता है। मन में विकार उत्पन्न हो जाते हैं। लेकिन सत्संग के माध्यम से आध्यात्मिक प्रकाश पुंज मिलने से इन्द्रियाँ दिव्य प्रेम का ही चिंतन करती हैं। उसकी इन्द्रियां तथा उसके मन की सारी प्रतिमा-प्रेम रूप बन जाती है।

यह स्थिति अत्यन्त विचित्र होती है- मैंने देखा था कि मध्य प्रदेश के साधक रोते हुए जाते हैं। ऐसी ही स्थिति हमारी हो गयी है। बहुत याद आती है। वे बड़े भाग्य शाली जिनके हृदय में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का वास है। मुझे कभी-कभी ऐसा लगता है कि हमारे पिछले कर्म कितने सही थे जो इस जन्म में हमें ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के सगुण स्वरूप का दर्शन प्राप्त हुआ। उनकी सेवा-पूजा करने का हमें अवसर प्राप्त हुआ है। प्रभु पिता जी का स्वरूप इतना सुन्दर है कि इनके मुखमण्डल को देखते ही सारे दुःख दूर हो जाते हैं। मन में अचानक शान्ति सी आ जाती है। मैं तो प्रभु पिता जी से यही प्रार्थना करती हूँ कि हे प्रभु पिता जी हम सबसे जो गलती हुई है उसे क्षमा करें और हम आपके बताये गये रास्ते पर चलें, आपकी सेवा पूजा करूँ ऐसा हमें आशीर्वाद दीजिए।

निज अनुभव अब कहऊं खगेशा।
बिन प्रभु भजन न जाहि कलेशा।
जाने बिनु न होई परतीती।
बिनु परतीति होई नहीं प्रीती

अर्थात् भगवान् का नाम जप सारे पापों को सर्वथा नष्ट कर देता है, और ॐ आनन्दमय भगवान् के चरण् में आत्म समर्पण।

अब प्रभु कृपा करौं एही भाँति
सब तजि भजन करौं दिन राति

और सभी को ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

–विमला शर्मा आनन्दमय, मुरादाबाद।

–:ज्ञानः–

जो लोग गेरूआ-बाना धारण करके साधू हो जाते हैं और भगवान में मन नहीं लगाते तथा पेट के लिये दर-दर चिल्ला-चिल्लाकर अपना दुर्लभ मनुष्य जन्म वृथा ही गँवाते हैं। वे अज्ञानी इस बात को नहीं समझते कि यह गेरूआ वस्त्र पहना क्यों था, गेरूआ वस्त्र संसार से तीव्र वैराग्य का चिन्ह है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री गुरुदेव भगवान शरणम्

भगवन्! मैं डॉ० संतोष सिंह जिला जौनपुर का रहने वाला हूँ। मेरे बहुत ही करीबी एवं बचपन के मित्र जो बहुत पहले उनको महापुरुष भगवान का परिचय प्राप्त हो गया था। बचपन के मित्र होने के नाते वे मुझे बार-बार ॐ आनन्दमय ॐ शांतिमय महामंत्र के बारे में बताया करते थे लेकिन उस समय मैं बनावटी धार्मियों के चक्कर में पड़कर उनकी बातों को ध्यान नहीं देता था। कुछ समय पश्चात हमारे सामने संकट का दौर आया और मुझे उस समय अपने मित्र द्वारा बताये गये महामंत्र का परीक्षण करने का अवसर प्राप्त हुआ उस संकट के दौर में अर्थात जीवन के उलझनों एवं समय के थपेड़ों से गुजरते हुए मैं अज्ञान के अंधकार में जीते-जीते तंग आ गया था इस अवस्था में मैं योग सिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शांतिमय जो आत्मबल दायक एवं दिमागी संकट हारी है। इस बमगोला महामंत्र का सहारा लिया जो दु:खों का नाश करने वाला है। इस महामंत्र का इतना बड़ा प्रभाव हुआ कि मुझ जैसे तुच्छ प्राणी को अनाथों के नाथ त्रिकालदर्शी महापुरुष भगवान ने अपनी शरण एवं संरक्षण में लिया जब मैं करुण भाव से पुकारने लगा तब ॐ आनन्दमय भगवान ने मेरे ललाट पर तीन बार चुम्बन किया और अपनी गोद में उठाकर प्यार किया। साथ ही साथ अपने दोनो हाथों में सुलाकर छोटे बच्चे की भाँति झुलाया मेरे जीवन का सबसे बड़ा आश्चर्य यह था कि ध्यानावस्था में प्रभुपिता जी ने अपने साथ मुझे आकाश मार्ग से होते हुए बादलों पर टहलाया। ॐ आनन्दमय भगवान मुझ जैसे दीन हीन व्यक्ति पर कृपा करके मेरे मन:स्थिति को इतना मजबूत बना दिया कि मुझे बड़ी से बड़ी एवं कठिन से कठिन समस्याओं को समझने एवं सहने की यथाशक्ति प्रदान कर दी। बस मैं इतना ही कहना चाहूँगा कि इस मंत्र को जो भी जपें मेरा दावा है कि वह ॐ आनन्दमय भगवान का होकर रहेगा।

हमारे जैसे तुच्छ मनुष्य ॐ आनन्दमय भगवान का क्या आभार व्यक्त करेगें, जिन्होंने मेरी जिन्दगी को आनन्दमय कर दिया इसका मैं खुद जन्म जन्मान्तर तक ऋणि एवं अभारी रहूँगा।

ऐसी करी गुरुदेव कृपा मेरे मोह का बन्धन तोड़ दिया।

डॉ० संतोष सिंह, इलाहाबद।

ॐ श्री महापुरुष देवाय शरणम्

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन मैं कक्षा ७ की छात्रा हूँ। मैं दयानन्द हंसमुखी देवी इन्टर कालेज में पढ़ती हूँ। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवन् का श्री मानव भाग्य विधाता ग्रन्थ मुझे कुछ सप्ताह पहले प्राप्त हुआ। ये ग्रन्थ मुझे अपनी कक्षा की सहपाठी अंजलि से प्राप्त हुआ। मैंने जबसे इस ग्रन्थ को प्राप्त किया है तब से मैने अपने अन्दर कई परिवर्तनों का अनुभव किया है। इस ग्रन्थ की प्राप्ति से पूर्व में अत्यन्त क्रोधी स्वभाव की थी। जरा सी बात को लेकर मेरे अन्दर क्रोध उत्पन्न होने लगता था। मैं दूसरों की उन्नति को देखकर बहुत क्रोधित होती थी परन्तु अब जबसे मैंने इस ग्रन्थ की प्राप्ति कर इसे प्रतिदिन पढ़ना प्रारम्भ किया है। तब से मेरे अन्दर कुछ परिवर्तन हुए हैं। अब मुझे शीघ्र क्रोध नहीं आता और आता भी है तो भगवान का स्मरण करने पर चला जाता है। अब मैं किसी से ईर्ष्या का भाव नहीं रखती हूँ और यदि यह भाव जाग्रत हो जाता है तो भगवान का स्मरण करने पर समाप्त हो जाता है। मैं प्रतिदिन इस ग्रन्थ का अध्ययन करती हूँ। अन्य कार्यों में व्यस्त होने के कारण मैं अपना अधिक समय नहीं दे पाती हूँ परन्तु कुछ समय अवश्य निकालती हूँ। ये समय मेरे लिए अति आनन्ददायक होता है। इस ग्रन्थ को पढ़ने से मुझे अत्यन्त सुख एवं शान्ति प्राप्त होती है। मैं जब भी इस ग्रन्थ को पढ़ती हूँ तब मेरा ध्यान मेरे ईष्ट भगवान में लग जाता है। ईश्वर का स्मरण करते हुए जब मै अपनी आँखों को बन्द करती हूँ तब मुझे एक विचित्र अनुभव प्राप्त होता है। मुझे लगता है कि मैं आकाश में एक दिव्य प्रकाश पूंज का दर्शन होता है ये प्रकाश मुझे अपनी ओर आकर्षित करता है।

मैं इस प्रकाशपुंज के पीछे-पीछे भागती हूँ और अन्तत: मुझे अपने ईष्ट भगवान के स्वरूप का दर्शन होता है। परन्तु यह दृश्य मैं कुछ समय के लिए ही देख पाती हूँ। कुछ समय में ही मेरा ध्यान भंग हो जाता है। जब मैं ध्यान में रहती हूँ, तब मुझे अत्यंत आत्मिक शान्ति प्राप्त होती है। अन्य कार्यों में व्यस्तता के कारण मैं अधिक समय नहीं दे पाती हूँ इसके लिए मैं भगवान से क्षमा देने के लिए प्रार्थना करती हूँ। मेरी सहपाठी अंजलि मुझे विश्वशान्ति आश्रम के विषय में बताती रहती है। उसकी इन बातों को सुनकर मुझमें बहुत उत्साह उत्पन्न होता है। मेरे अन्दर इस आश्रम का दर्शन करने की तीव्र इच्छा उत्पन्न होती है परन्तु मैं वहाँ आने में असमर्थ हूँ। परन्तु भविष्य में यदि मुझे कभी वहाँ उस आश्रम का दर्शन करने का सुअवसर प्राप्त हुआ तो मैं वहाँ जरूर आऊँगी। –ॐ शान्तिमय

–ज्योति चौहान, कानपुर

ॐ आनन्दमय ॐ शांतिमय

ॐ श्री गुरुदेव भगवान शरणम्

श्री महापुरुषों तथा देवियों, मैं बस्ती जिले का मामूली पढ़ा-लिखा किसान, व्यवसाई हूँ । मेरा लड़का इलाहाबाद गर्वमेंट यू.पी. हैन्डक्राफ्ट में सेल्समैन का काम करता है, जो कि बीमार हो गया और अधिक कमजोर तथा शक्तिहीन होने पर हमारे पास पत्र लिखा। पत्र पाते ही हम और बीमार बालक की माता, दोनों पागल की भाँति चल पड़े, आप लोग जानते हैं कि सन्तान के ऊपर माता-पिता की स्वार्थवश कैसी श्रद्धा तथा प्रेम होता है। ''सुत, वित, नारी इषरा तीनि'' ''किनकी मति इन कृति न मलीनि'' यहाँ आने पर बीमार बालक को चारपाई पर पड़ा देख ऐसा मालूम हुआ कि अब हम लोग यहाँ ही मर मिट समाप्त हो जायेगें। यद्यपि बालक की दवा यहाँ के प्रसिद्ध डाक्टर एलोपैथिक विद्वान से कर रहे थे, परन्तु मुझको उस पर श्रद्धा तथा विश्वास न था क्योंकि मुझको तो श्री भगवान की भक्ति अथवा श्री भगवान के श्रद्धालु भक्तों के सदुपदेशों पर ही श्रद्धा-विश्वास रहता आया है इसलिए यहाँ सारा दिन इधर-उधर भटकूँ और अपनी मानसिक व्यथा के लिए रोऊँ परन्तु चित्त को शान्ति न मिलें, झूंसी, अरैइल, संगम श्री महर्षि भारद्वाज आश्रम आदि के बहुत महात्माओं के पास जा-जाकर अपना दु:ख रोया तथा सुनाया मगर कहीं से भी हमारे व्याकुल चित्त को शांति न मिली अचानक एक दिन हमारे बीमार बालक स्वरुप भगवान ने हमसे कहा कि आपको शांति मिल रही हैं, मैंने कहा मुझे तो कही शान्ति नहीं मिल रही है, उसने कहा कि ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय आश्रम है, सम्भव है कि वहाँ आपको कुछ सुख-शान्ति मिले। अत: आप जाइये। मैं उस बीमार चारपाई पर आसक्त लेटे हुए बालक के कहने पर पूछते-पाछते गेट पर पढ़ते इस पवित्र कल्याणकारी श्री विश्वशांति आश्रम, आनन्दधाम पर पहुँच गया। मैं सच कहता हूँ कि अन्दर जाकर श्री गुरुदेव भगवान के चित्र का दर्शन पाते ही, व्याकुल जलते हुए चित्त में प्रेमानन्द की वर्षा होने लगी। ॐ श्री आनन्दमय गुरुदेव भगवान के दयालु भक्तों के मधुर वाणी, सेवा-सत्कार की बौछार से इतना शीतल तथा आनन्दित हो गया कि वह अब मेरे लिए अकथनीय है क्योंकि–

''गिरा अनयन नयन बिन बानी'' कुछ सदुपदेश सुने, कुछ ग्रन्थ देखे और मिलें।

मेरा चित्त तो तत्काल ही शान्तिमय हो गया और 'जी की जरनि मिट गई' अब बीमार बालक भी अच्छा होने लगा। आशा है कि शीघ्र ही इस पवित्र कल्याणकारी श्री विश्वशान्ति आश्रम की असीम कृपा तथा आप लोगों की दया के शुभ आशीर्वाद से स्वस्थ्य होकर श्री ॐ आनन्दमय श्री ॐ शान्तिमय की सेवा करेगा तथा आप सब महापुरुषों तथा देवियों से सविनय करबद्ध प्रार्थना है कि शीघ्रति-शीघ्र श्रद्धायुक्त इस श्री विश्वशान्ति आश्रम के सुख-प्रद, शीतल धाम में आप भी स्नान कर मेरी तरह सुखी हो जाएगें । –ॐ शांतिमय

- शीतला श्रीवास्तव, जिला- बस्ती।

भजन

जो भी आनन्दमय शरण में आया,
परम् आनन्द का लाभ उठाया ।।टेक।।
जो थे मूढ़ बड़े- जो थे मूढ़ बड़े,
ज्ञानवान बने ज्ञानवान बने।
संशय भरमों को चित्त से हटाया,
हृदय को शुद्ध बनाया।।१।।
जो थे चिन्तित बड़े, जो थे चिन्तित बड़े,
देखो खुश हैं खड़े अब वो खुश हैं बड़े।
दु:ख शोकों को दूर भगाया,
ध्यान आनन्द का अनुभव कराया।।२।।
जो थे भोगी बड़े जो थे भोगी बड़े,
देखो योगी बने- अब वोह योगी बने।
विषय भोगों से पीछा छुड़ाया,
संयम सेवामय जीवन बनाया।।३।।
जो थे चंचल बड़े- जो थे चंचल बड़े
देखो शान्त खड़े-शान्तिवान बने।
मल-विक्षेपों का परदा हटाया,
सहनता समता का पाठ पढ़ाया।।४।।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सुमिर गुरु के पद पंकज, और महापुरुष का करके ध्यान।
लेखनी करूँ पवित्र अपनी, करके भगवान का गुणगान।।
कवि बेचारा क्या कर सकता, ठीक तरह से प्रभु का गान।
पर एक दया प्रसंग चलाऊँ, होवे जीवों का कल्याण।।
एक समय गंगा के तट पर, बैठे हुए थे दया निधान।
अपनी लीला पर मुस्काते, करते जो कि विश्व कल्याण।।
इतनें में ही युवक, जो कोट पैन्ट से सजा हुआ।
टाई बूट और हैट लगाये, काला साहेब बना हुआ।।
था सिगरिट मुँह में सुलगाये, फक, फक धुँआ उड़ाता था।
सिगरेट पर सिगरेट पीता था, व्यर्थ अकड़ता जाता था।।
आँख पे चश्मा गाल थे बैठे, हड्डी झलक दिखाती थी।
रूखा-सूखा सा चेहरा था, छोटी सिकुड़ी छाती थी।।
बीच-बीच में कभी खांसता, चेहरे पर बेचैनी थी।
था मानसिक उद्वेग बदन पर, जो कि नशे की देनी थी।।
पड़ी निगाह सन्त की उस पर, मन उपजी दया अपार।
जहाँ समागम हुआ सन्त का, हुआ वहीं निश्चय उद्धार।।
करूणा के सागर हैं भगवन्, बिना हेतु के दया करें।
मानव के कल्याण हेतु, इस पृथ्वी पर श्री चरण धरे।।
पर दिल नहीं दुखाना था, भगवान ने लीला की ऐसी।
सांप भी मर जाएँ और लाठी, तब भी वैसी की वैसी।।
बीस हाथ पीछे बैठा था, सिगरेट पीता वह मदमस्त।
धरे उपेक्षा भाव संत प्राप्त, देख रहा सूरज का अस्त।।
सन्त जरा जोरों से बोले, करके अन्तरिक्ष को लक्ष्य।
ऐसे जैसे सुनी हवा को, जो रहती है सदा अलक्ष्य।।
सिगरेट पीना बड़ा उचित है, पीयें विश्व के सकल सुजान।
पर इसे घोट के पीने वाला, हो जाता है पहलवान।।
चौका युवक वचन राह सुनकर, लगा घूरने प्रभु की ओर।
पर अब तो प्रभु मस्त मग्न हो रहे, आत्मचिन्तन में भोर।।
क्रोधित हुआ युवक, पर देखा वहाँ द्वेष का नाम नहीं।
सन्त मग्न पुलकित होते थे, था दुनिया से काम नहीं।।
लौट हार की ओर युवक, थी एक गूँज मन में उठती।
''घोट के पीते सिगरेट, हो पहलवान'' मन में चुभती।।
नहीं थी वाचालों की वाणी जो तोते से रटा करें।
महिमामय थे शब्द प्रभु के, कैसे होते व्यर्थ अरे।।
सीधे दिल तक उतर गये, फिर दिल दिमाग पर छाय गये।
हटा विकारों को अन्तर से, उसके मन में भाय गये।।
हुई तलब तो आदतवश, पैकेट से लेली सिगरेट एक।
पर वैसे ही गूँज हुई, जो हुई आज थी बार अनेक।।
कृपा हुई थी परमपिता की, उपजा उसको तब सद्ज्ञान।
हुआ तीव्र वैराग्य नशे से, नष्ट हो गया था अज्ञान।।
खाई शपथ नहीं पीने की, साथ नशे सब छोड़ दिये।
गाजा, भाँग, चरस ओ दारू, जो उसके थे लगे हुए।।
दिवस दूसरे गंगा तट पर, जा कर सायं को सत्वर।
''करो कृपा, कल्याण करो, मैं शरण में तेरी हे प्रभुवर''।।
महापुरुष ने तुरत विहंस कर, प्रेम से उर से लगा लिया।
सुनकर उसकी कथा प्रेम से, फेर युगल कर अभय दिया।।
महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का दिया उसे।
आनन्दमय की दया बताई, जिसे जान दुःख नहीं धँसे।।
इस प्रकार कुल एक शब्द से, दिखलाई है दया महान।
आज साधना पथ पर बढ़ता, जाता है वह युवक सुजान।।
जो इस कथा को सुनते पढ़ते, उनका भी होवे कल्याण।
अब भाई सब प्रेम से बोलो, जै जै महापुरुष भगवान।।

–त्रिजुगी नारायन, रायबरेली (अवकाश प्राप्त रेलवे इन्जिनियर)

–:ज्ञानः–

जो मनुष्य ॐ आनन्दमय परमात्मा को छोड़कर संसार के प्रेमी-पदार्थों से प्रेम करता है, वह क्या कभी सुखी हो सकता है।

बहुत अधिक बोलने से व्यर्थ और असत्य शब्द निकल जाते हैं, इसलिये कर्मक्षेत्र में जितना कम बोलने से काम चले, उतना ही कम बोलना चाहिये।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं इन्जीनियरिंग का विद्यार्थी हूँ, पिछले कुछ वर्षों से दु:खी एवं परेशान रहता था। परीक्षा के समय अत्यधिक परेशान हो जाना मेरी आदत बन गई थी, परीक्षा के समय मैं एन्टीडिप्रेशन दवाइयों का सहारा लेता था। परीक्षा में कम अंक आने के कारण मैं परेशान था। इस विषय में मैंने अपने दोस्त श्री अरविन्द जी से बात की एवं उनके अच्छे रिजल्ट एवं प्रसन्नता का कारण पूछा। जबाब में अरविन्द ने मुझे श्री विश्वशांति ग्रन्थ एवं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र के बारे में बताया कि ध्यानयोग एवं सत्संग से सभी आवश्यक कार्य सुचारु रूप से किया जा सकता है। मानसिक शान्ति के साथ ही कार्य विधिवत होने लगता है। एवं सच्ची प्रसन्नता प्राप्त होती है। मुझे श्री विश्वशान्ति आश्रम तेलियरगंज ले आये और श्री विश्वशांति ग्रन्थ भाग एक दिलाया, और ग्रन्थ का नियमित अध्ययन करके खुद से अनुभव करने को कहा, श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के पठन से मेरे अन्दर चमत्कारिक परिवर्तन आये।

छोटी-छोटी बातों पर मैं बहुत जल्दी क्रोधित हो जाया करता था। लेकिन श्री ग्रन्थ को पढ़ने से अब काम-क्रोध लोभ मोह आदि का स्थान प्रेम, दया एवं क्षमा जैसे गुणों को धारण करने का प्रयास कर रहा हूँ। यदि श्री महापुरुष भगवान की कृपा रही तो मैं दुर्गुणों को त्यागकर एवं सद्गुणों को धारण कर आनन्दवान शान्तिवान बन जाऊँगा।

अब ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र मेरी एक शक्ति बन चुका है। अपने कर्तव्य कर्मों के आरम्भ में इस मंत्र का मनन करता हूँ। इस मंत्र के जप से मेरे अन्दर एक अद्भुत शक्ति का संचार होता है। और मैं अधिक उत्साह से कार्य करता हूँ। आज भी मैं अपने मानसिक रोगों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाया हूँ पर जैसे मुझे इन सब मानसिक रोगों के पास आने की आहट मिलती है मुझे तुरन्त श्री मानसिक चिकित्सा का ज्ञान स्मरण हो जाता है, मुझे विश्वास है कि श्री ग्रन्थों के पठन से श्री ध्यान योग के अभ्यास से एवं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय प्रभु पिता जी की कृपा से मैं शीघ्र ही सभी मानसिक रोगों से मुक्त हो पाऊँगा।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र के जप से शरीर में ऊर्जा एवं शक्ति का संचार होने लगता है। एवं खुद को तरोताजा महसूस करता है। ऐसे श्री मंत्र को एवं श्री ग्रन्थ को शत् शत् प्रणाम। -इंजीनियर छात्र महेन्द्र सिंह का अनुभव जुलाई २००६

अनुभव

सत्संग एवं नियमित भजन-ध्यान से पारिवारिक विघटन एवं गरीबी के कारण बचपन में मैं पढ़ने में बहुत कमजोर था पढ़ने में मन नहीं लगता था। कई बार फेल हुआ, जिससे स्कूल से मेरा नाम काट दिया गया और मैंने पढ़ाई छोड़ दिया। पारिवारिक विघटन एवं गरीबी के कारण दिल के धनी हमारे मामा हरिशंकर जी ने मुझे अपने घर में रख लिया। मैं मामा जी के यहाँ रह कर हर कार्य में हाँथ बटाने लगा। गाँव में मामा की एकमात्र दुकान होने की वजह से भीड़ हमेशा ही लगी रहती थी। परन्तु मामा जी के सुबह ५ बजे पूजा करने का समय हो या शाम ७ बजे, इस बीच सभी को बोल देते थे कि ग्राहक पूछे तो बता देना कि एक घंटे बाद आयेंगे।

हम सभी को लेकर एक घंटे रोज ॐ आनन्दमय प्रभु का भजन-ध्यान कराते थे। कुछ ही दिनों में मेरा मन एकाग्र होने लगा और मैं मामा जी से बोला मामा जी मुझे फिर से पढ़ना है। मामा जी ने मेरा एडमीशन पुन: करा दिया। स्कूल की पढ़ाई के साथ-साथ भजन-ध्यान, पूजा-पाठ से मेरा मन एकाग्र होने लगा और पढ़ाई में भी मन लगने लगा। मेरे मन में सत्संग की एक ज्योति जली और मैं अच्छे अंकों में पास होने लगा। बचपन का गधा मामा-नाना जी के सत्संग से घोड़ा बन गया।

३० वर्ष पहले मामा जी के यहाँ जिस स्थान पर पूजा होती थी आज ३० साल बाद भी जब छुट्टियों में मामा जी के यहाँ आया उसी जगह पर बैठकर सभी परिवार सत्संग करते थे। सत्संग का मजा ही कुछ निराला था ऐसा लगता है। साक्षात मामा जी गुरु जी से निवेदन कर रहे हों। ऐसे सरल हृदय के धनी भक्त जहाँ मिल जाए तो कितनों के जीवन सफल बन जाये।

पिछले अंक में एक अनुभव पढ़कर मन को झकझोर दिया और पुन: पटरी पर गाड़ी आई।

- ओम प्रकाश जायसवाल, इन्दौर (म०प्र०)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

My Lord Bless me, I may keep your teaching and follow them.

''मेरे गुरु के मीठे वचन, ज्यों नाविक के तीर।
देखने में छोटे लगें, पर भाव बहुत गम्भीर।।''

''नयन में लेकर जल का भार,
हृदय में लेकर संचित प्यार।
तुम्हारा मन में करवेः ध्यान,
झुका दासी का शीश ललाम।।''
देव! लो मेरा पूज्य प्रणाम!

हृदय के उद्‌गार प्रकट करने के लिए बैठते ही मन के भाव उमड़-घुमड़ कर घनघोर बादल की तरह मेरे मस्तिष्क पर छा रहे हैं एवं वर्षा ने कृपा करके मेरे में बहुत भारी परिवर्तन कर दिया है। मेरा आनन्द गूँगे की मिठाई की तरह है।

दो वर्ष पूर्व श्री आश्रम की दो विभूतियों का दर्शन समागम कर मेरे हृदय में आनन्द की लहरें उठी थीं तथा हृदय में यह भाव आया था कि जब इनके दर्शनों से यह लाभ हुआ है तो श्री गुरु भगवान में कितना प्रभाव होगा। मैंने श्री गुरु भगवान की अनुपस्थिति में इन दो श्री भगवत् प्रेमियों से ही सम्बन्ध रखा जिससे मेरे जीवन में ही बड़ा परिवर्तन हुआ।

मैं पहले बहुत ही चंचल वृत्ति की थी, हंसी-मजाक एवं टीका-टिप्पणी करना मेरी सहज सी प्रवृत्ति थी परन्तु अब मैं अधिकतर चुप तथा गम्भीर रहती हूँ क्योंकि मुझे यह उपदेश मिला था कि अधिक बोलने से मानसिक शक्ति का ह्रास होता है। मैं बहुत क्रोधी स्वभाव की थी परन्तु श्री विश्वशांति ग्रन्थ के नित्य स्वाध्याय एवं श्री प्रेमियों के सम्पर्क से मेरे क्रोध में भी कमी हुई है और मुझे कुछ ही दिनों में श्री ध्यान आनन्द की प्राप्ति हुई है।

दीनदयालु अन्तर्यामी श्री महापुरुष भगवान के प्रयाग आगमन के समय मुझे श्री आपके दर्शन प्राप्त हुए। प्रथम दर्शन से ऐसा लगा कि मानों श्रद्धा, प्रेम, संयम, सादगी, पवित्रता एवं शान्ति ही शरीर धारण करके मेरे सम्मुख विराजित है और मुझे ज्ञानपथ की ओर प्रेरित कर रहे हैं एवं काम, क्रोध, लोभ, मोह नतमस्तक होकर दूर खड़े हैं। सौम्यमूर्ति का दर्शन ही मानव हृदय की कालिमा हरने के लिए यथेष्ट हैं। श्री मुखारविन्द का दर्शन ही मानव हृदय की कालिमा हरने के लिए यथेष्ट हैं। मैं श्री मुखारविन्द को देर तक एक टक देखती रही परन्तु इच्छा न होने पर विवश होकर मुझे वहाँ से आना ही पड़ा। फिर तो मेरा ध्यान और भी बढ़ गया तथा सोते-जागते, खाते-पीते और उठते-बैठते ऐसा भासित होने लगा कि समाधिस्थ श्री महापुरुष भगवान मेरे साथ हैं। और पथ से विचलित होते समय हाथ पकड़ कर निकाल लेते हैं। उदाहरणार्थ कलह में मौन रहने की प्रेरणा देते हैं। तथा व्यर्थ जिज्ञासा पैदा होने पर मन की बात न मानने का आदेश देते हैं। अब मैं बहुत ही प्रसन्न हूँ।

यदि संसार के समस्त लोग श्री महापुरुष भगवान जी का सम्पर्क करें तो शीघ्र ही दुःख कलह एवं दूषित भावनाएं वायु वेग के सम्मुख काले बादलों की तरह दूर हट जाएँगी तथा भारत अपनी प्राचीन संस्कृति को पुनः पाकर एक बार फिर लहलहा उठेगा अतः हमें उनकी कृपा दृष्टि के इच्छुक होना चाहिए एवं अनेक बताए हुए पथ पर चल कर अपने को देश एवं विश्व के सहित भाग्यशाली बनाना चाहिए। रेत के कण गिनना सम्भव हैं परन्तु श्री आपके गुणों और उपकारों की गिनती करना सम्भव नहीं।

भारत की अज्ञान ग्रसित सिसकती हुआ जनता के उत्थान के लिए महान आत्मा ने बीड़ा उठाया है। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम सब उनके इस पावन कार्य में सहयोग दें, उनकी शिक्षाएँ अपना कर अपना भाग्य उदय करें तथा श्रद्धा और प्रेम से योगसिद्ध ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय दिव्य मंत्रों को उच्चारण करें।

हे समाधिस्थ मानसिक शान्ति के दाता, दुःख, पाप हर्ता, सबको समभाव से देखने वाले, मेरे तमोमय मार्ग को ज्योर्तिमय करने वाले भगवान! मेरा दण्डवत् प्रणाम स्वीकार हो।

–एक साधिका का अनुभव

ॐ श्री गुरु शरणम्

ॐ श्री सन्तोषी समतावान भक्त वत्सल भगवान के पावन चरणों में बारम्बार प्रणाम्!

ॐ आनन्दमय ॐ शांतिमय

महापुरुष भगवान के अनुगत चलने पर जिन गुणों की वृद्धि होती है उनको श्री भगवद् प्रेमियों के समक्ष रखने का प्रयत्न कर रही हूँ।

गुण भगवान से मिले, गान श्री भगवान का किया, गुणगान की शक्ति भी श्री भगवान ने ही दी। हम भक्त तो केवल निमित्त मात्र हैं!

दिव्य ग्रन्थ श्री गीता जी से ज्योति ज्ञान अध्याय छ: श्लोक पाँच और छ: की जिस निराले ढंग से व्याख्या की जा रही है वह विश्व के सम्मुख आज तक नवीन विषय है। इस ज्ञान के आगे और कौन सा ज्ञान शेष रह जाता है कि हमारा मन ही हमारा मित्र है और हमारा मन ही हमारा शत्रु है अर्थात् और कोई दूसरा शत्रु या मित्र नहीं है। आज संसार में प्राय: यही देखने में आता है कि अपना स्वार्थ सिद्ध न होने पर प्राय: आप दूसरों को दोषी ठहराते है, अपने कार्य में असफल होने पर दूसरों पर दोषारोपण करते हैं। भला हमारे कार्य की असफलता का जिम्मेदार दूसरा कोई कैसे हो सकता है। क्या ही अच्छा हो यदि दूसरों में दोष दर्शन की भावना का हम सर्वथा परित्याग कर दें! यह तभी सम्भव है जब इस ज्ञान का हम हर समय हर कार्य करते हुए मनन विचार करते रहें।

श्री महापुरुष भगवान की अपार कृपा से मुझे इस बात का ज्ञान हुआ है कि दूसरों को उलाहना देने की आदत तामसी है। मेरा मन जब कामनाओं से लिप्त रहता है तो मेरा मन शत्रु बन जाता है और जब कामनाओं से मुक्त हो जाता है तो मेरा मन मित्र बनकर परम आनन्द को प्राप्त होता है। (१८/३६)

आज संसार का प्राणी-प्राणी सुख-शांति की खोज में भटक रहा है। महापुरुषों की वाणी कभी असत्य नहीं होती। आनन्ददायक प्रभु का सदा से यही आदेश रहा है- सबसे प्रेम से बोलेंगे सदा प्रसन्न रहेंगे। भगवान हमारे सम्मुख सीधा सरल मार्ग खोल देते हैं कि महापुरुषों के आदेशानुसार कर्म करो और महापुरुष भगवान हमें क्या आदेश देते हैं? कि ''संग रहितम'' अर्थात् राजसी तामसी मनुष्यों के संग का परित्याग। जिस प्रकार के मनुष्यों का गुण, ज्ञान, भाव, आचरण हम धारण करेंगे वैसा ही हमारा जीवन बनता जायेगा। इस ज्ञान का खण्डन असम्भव है। गन्ना चीनी का दाता है और धतूरा विष का।

राजसी मनुष्यों से हमें वैराग्य करना है घृणा नहीं! उनके राजस तामस ज्ञान को धारण न करना, तथा राजसी तामसी मनुष्यों के आचरण का अनुकरण न करना ही उनसे वैराग्य करना है! परन्तु हमारे हृदय में किसी के प्रति घृणा न उत्पन्न होने पावे। हमारे प्रतिदिन के पाठ में ही यह सूत्र आता है:– हे आनन्दमय भगवान! मैं पवित्र भावमय हूँ घृणा भावमय नहीं।

हमारा हृदय प्राणी मात्र के लिए शुद्ध हो, ऐसी प्रार्थना हम भगवान से करते हैं। मैं सत्य भावमय हूँ कपट भावमय नहीं। जबसे श्री भगवान जी का संग प्राप्त हुआ सदा यही प्रयत्न होता रहता है कि किसी प्रकार का छल कपट हृदय में न आने पावे।

आप कहेंगे कि स्वयं अभी पूर्ण हुई नहीं और उपदेश देना आरम्भ कर दिया। पर जैसा कि मैने पहले कहा यह श्री भगवान का गुणगान है उपदेश नहीं। महापुरुष भगवान के प्रेमभाव को आपस में उच्चारण करते रहना सात्विक है। अत: इतना अवश्य कहूंगी कि मैं महापुरुष भगवान की मर्यादाओं के पालन में सतत् प्रयत्नशील हूँ। उनके आदेशानुसार चलने की यथा शक्ति चेष्टा करती रहती हूँ। इसलिए इस मार्ग पर चलने से मुझे जो लाभ हुआ है उसे दूसरों को जनाने में मुझे दूगुना लाभ होगा। महापुरुष भगवान के आदेशानुसार विश्वशांति ग्रन्थ के आवरण पृष्ठ पर लिखे सात नियमों का पालन करना ही श्री प्रभु की मर्यादाओं का पालन करना है। हर समय हर कार्य करते उठते बैठते भगवत् स्मरण और योगसिद्ध महामंत्र ॐ

आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप चलता रहे यही विश्वपिता श्री आनन्दमय भगवान की मर्यादा है। मेरे विचार से नाम कितनी बार लिया यह नहीं, कैसे मन से लिया, केवल जिह्वा से उच्चारण ही किया या शुद्धमन से लिया यह महत्वपूर्ण है। जब हम ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप करते हैं तो हममें यह भावना रहती है कि हे भगवान! मैं आनन्दमय हूँ दु:खमय नहीं। हे शान्तिमय प्रभो! मैं शान्तिमय हूँ चिन्तामय नहीं। केवल वाणी के रटन मात्र से नहीं अनुभव होगा। बल्कि धारण करने से प्रत्यक्ष आनन्दशक्ति का अनुभव होगा।

इसके अतिरिक्त परम आनन्ददायक ध्यान का अभ्यास चलता रहता है। अब प्रश्न उठता है कि ध्यान किसका किया जावे?

इस विषय में मैं स्पष्ट कहूँगी कि ध्यान समाधि आनन्द सम्पन्न समतावान श्री महापुरुष भगवान का ही करना चाहिए। जब तक हम उनके समान ही न बन जावे। परन्तु जल पीना छानकर और गुरु बनाना जानकर। अत: जिन महापुरुष भगवान के संग, सेवा, प्रेम, ध्यान, आज्ञा पालन से अपनी छहो प्रकार की– शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक व आध्यात्मिक उन्नति हो रही है तथा क्रोध चिन्ता का नाश और कामनाओं का अन्त होता जा रहा है, ध्यान उनका ही करना श्रेयष्कर है। भगवत् कृपा से जब ऐसा दुर्लभ संग प्राप्त होता है तब कोई दुविधा नहीं रह जाती। इसके साथ ही एक बात और है जब हमारा हृदय कामनाओं से रिक्त होगा तभी हम अपने मन मन्दिर में श्री महापुरुष भगवान की मानसिक पूजा करने में समर्थ होंगे। यह मेरा अपना अनुभव है कि जब-जब कामनाओं ने आकर चित्त को चंचल बनाया है तब-तब श्री सत्य स्वरूप महापुरुष भगवान का श्री स्वरूप हमारे मन में स्थिर नहीं हो पाया है तथा विश्व पिता श्री आनन्दमय प्रभु ने ध्यान आनन्द से वंचित रखा। सकामी हृदय में निष्कामी प्रभु भला कैसे विराजमान हो सकते हैं। महापुरुष भगवान की सच्ची सेवा तभी होगी जब हम उनके गुण ज्ञान को धारण करेंगे। श्री आदर्श ज्ञान प्रत्यक्ष सुख शान्ति आनन्द प्रदान करने वाला एवं सब प्रकार से लाभदायक है। जितनी ही अधिक तत्परता से भगवद् मर्यादाओं का पालन होता है उतना ही श्री प्रभु ध्यान आनन्द में वृद्धि करते हैं।

इसके विपरीत श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु की मर्यादा भंग करने से न्यायकारी श्री दण्डदायक प्रभु चिन्ता क्रोध रूपी कारागार ही प्रदान करते हैं। यह अटल सिद्धान्त है इसका अनुभव मुझे पग-पग पर होता रहता है। इसलिए भगवान हमसे बार-बार कह रहे हैं:–

हे मित्रों! दु:ख, चिन्ता, भय, राजसी अहंता, ममता, कामना, क्रोध, ईर्ष्या, कलह मत करो अपनी आठ इन्द्रियों को वश में करते रहो! बस इतना सा ज्ञान है जो हमें धारण करना है। इस ज्ञान को धारण करने में मैं प्रयत्नशील हूँ। यदि आज हम सभी मिलकर इस ज्ञान को धारण करने में प्रयत्नशील हो जाये तो हमारा जीवन कितना सुखी, सर्वगुण सम्पन्न व आनन्दयुक्त हो जायेगा।

महापुरुषों का ज्ञान अपनाया!
आनन्द ध्यान को मैंने है पाया!!

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय!
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय!!

कर देगा जग में उजाला!
यह सत्संग निराला!!

महापुरुषों का ज्ञान अपनाया!
आनन्द ध्यान को मैने है पाया!!

यह ज्ञान महापुरुष भगवान के मुखार विन्द से श्रवण किया हुआ है:–

१- हमारे जीवन में सात्विक प्रेमियों का समागम हो।

२- हम सात्विक सेवा करें।

३- हमारा भोजन सात्विक हो तथा

४- हम सात्विक बनने व बनाने में प्रयत्नशील हो।

इसके अतिरिक्त पाँच प्रतिज्ञाएँ हैं जिन्हें पालन करने से जीवन आनन्द युक्त रहता है:-

१- हम श्री भगवान के हैं।

२- श्री भगवान के आदर्श को धारण करते रहेगे।

३- हम श्री भगवान के आदेशानुसार चलते रहेंगे।

४- प्रत्येक अनुकूल व प्रतिकूल विधान में प्रसन्न चित्त रहेंगे।

५- हर समय भगवान के स्वरूप को याद रखेंगे।

(द्वारा- श्री आनन्द लता जी)

अपने हृदय को प्रेम सागर व दया सागर बना लें, फिर सम्पूर्ण दुःख अशान्ति चिन्ता क्रोध, भय उसमें समा जाते हैं, उसको विचलित नहीं कर सकते, गन्दा नहीं कर सकते, जिस प्रकार सागर में अनन्त जल जाता है, परन्तु उसको गन्दा नहीं कर सकता, उसमें कितना नमक है आज तक कोई उसको निकाल नहीं सका।

स्मृति रहे! दर्शन-श्रवण जन- अनेकों प्रतिकूलतायें तो छाया के सदृश सर्वत्र-विद्यमान हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शांतिमय

गुरु महिमा

गुरु बिना था जीवन ऐसा,
ज्यूँ तरणी हो बिना खेवैया।
फँसा हुआ था भँवर में जीवन,
गुरु उबारा बन के सहैया।

माटी का लौंदा था मैं तो,
गुरु ने ही आकार दिया है।
गुरु में ही तो निराकार ने,
खुद को ही साकार किया है।

पाहन सा मैं, गुरु के पारस,
वरद हस्त से स्वर्ण बनूँगा।
इस जिह्वा से गुरु महिमा को,
बार-बार सौ बार कहूँगा।

ज्ञानद्वीप जब गुरु जलावें,
हो निःशेष सकल अंधियारे।
दूर था मुझसे दिव्य पुंज जो,
गुरु कृपा से निकट वो आवे।

गुरु है वाणी, गुरु है दृष्टि,
गुरुमय है समस्त सृष्टि।
गुरु है माता, गुरु पिता है,
गुरु बिना, जीवन रीता है।

गुरु सखा है, गुरु सहारा,
गुरु विहीन जगत जड़ सारा।
गुरु महिमा है, गुरु से गुरुतर,
भाव घनेरे, शब्द है कमतर।

–संगीता आनन्दमय, इलाहाबाद

अनुभव

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय प्रभु की कृपा अनन्त, अपार, असीम है। श्री ग्रन्थों के स्वाध्याय के प्रभाव से शरीर हल्का प्रतीत होता है और धैर्य गुण की वृद्धि होती है। श्री मंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के जप से राग-द्वेष युक्त बुरे कर्मों से वैराग्य होता है। यह सब लाभ श्री गुरु महाराज की कृपा से होता है। मैंने श्री ग्रन्थों में छपे विग्रह को श्री विश्वपिता माना है। गुरु कृपा से मैं भयानक दु:खों से बच जाता हूँ।

नाचते देख कर नाचने वाले में गुरुदेव के दर्शन होते हैं तथा गाना सुनने पर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय की ध्वनि सुनाई देती है।

मैंने ४६ वर्ष की आयु तक तमाम ग्रन्थ पढ़े परन्तु किसी भी देवी-देवता, भगवान आदि की सेवा-पूजा आदि में श्रद्धा नहीं हुई। परन्तु आनन्द, शान्ति, शक्ति का जो उत्तरोत्तर लाभ तीन महीनों में हुआ वह श्री गुरु महराज की विशेष कृपा है।

जब मैं अपने मार्ग दर्शक श्री वेद पाल सिंह जी के साथ नौकरी में था तो उनके पास सत्संग में बैठता था। ॐ श्री आनन्दमय जी मेरे दाहिने तरफ आसन मुद्रा में बैठते थे अथवा साथ-साथ चलते दिखाई देते थे। कभी उदय होते हुए लाल सूर्य के साथ घूमता हुआ स्वरूप दिखाई देता था।

अध्यापक श्री हरी राम कुशवाहा को श्री ग्रन्थों का परिचय देकर श्रद्धालु बनाया। मेरा छोटा लड़का बाबू राम शर्मा सीआरपीएफ में बिना रिश्वत के भर्ती हो गया।

श्री प्रभु का प्रचार वाहन आया था तो एक कमरे के मकान की छत पर सोये थे। भगवान और भक्तों की कृपा से वह भवन दो मंजिल का बन गया है।

मेरे पास एक बिघा जमीन थी अब दस बिघा हो गई है। श्री प्रभु कृपा से अभी सिक्योरिटी में काम कर रहा हूँ। मैं नासिक में अकेला रहता हूँ। मनी आर्डर करने के लिए पोस्ट आफिस पास में है। पूजा के लिए श्री प्रभु ने एक कमरा अलग से दे रक्खा है, वहाँ विधिवत मानसिक पूजा करता हूँ। सभी सुख प्रभु जी ने दे रक्खे हैं। सुमिरन करे सोई जान सके (आनन्द कीर्तन भाग-१) आर्थिक सम्पन्नता श्री प्रभु का मेरे लिए वरदान है। जो लोग भी मंत्र उच्चारण करने पर मज़ाक करते थे वे लोग आज नमस्कार करते हैं। यह प्रभु की महान कृपा है। मैं गाता हुआ चलता था- 'रसना रट ले प्रभु का नाम ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय' तो लोग कहते थे पागल हो गया है। ॐ श्री आनन्दमय कृपा से अब हमें खुश करने के लिए वह लोग ॐ आनन्दमय बोलते हैं।

दु:खालय संसार में ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र आत्मिक आनन्द का साधन है, अस्तु

-राम अवतार शर्मा (गनमैन)
खादी ग्राम उद्योग नासिक

—:ज्ञान:—

(१) श्री सज्जन संग-सेवा परायण ध्यानयोग अभ्यासी सात्विक मानव सदा प्रसन्न रहते हैं।

(२) दुर्जन संग-सेवा-परायण इन्द्रिय भोगी राजसी मनुष्य हर्ष-शोकादि द्वन्दों से युक्त नाराज रहते हैं।

(३) शठ बुद्धि युक्त तामसी मनुष्य क्रोधित रहते हैं।

आप उपरोक्त तीनों में से किस श्रेणी के मानव के अनुकूल संग-सेवा में रत हैं?

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नमः

पाठक गण मैं मुरादाबाद में इण्टर कालेज में पढ़ने वाली छात्रा हूँ। मैं अपना अनुभव प्रस्तुत कर रही हूँ। भगवन् ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी इस धरती पर हमारा उद्धार करने के लिए अवतरित हुये हैं यह हमारे लिये अत्यन्त सौभाग्य की बात है।

इस विधान से पहले हम पूजा, अर्चना की विधि नहीं जानते थे। व्रत तीर्थ मन्दिर आदि में घूमते रहते थे तथा अनेक देवी-देवताओं की उपासना करते रहते थे। लेकिन हमें वास्तविक ज्ञान क्या होता है? सच्ची भक्ति किसे कहते हैं? इसका ज्ञान नहीं था लेकिन जब सर्वसुखमय ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी का दिन-प्रतिदिन आनन्द-शक्ति का अनुभव होने लगा तथा हर समय सच्ची प्रेम भक्ति का रसास्वादन होने लगा तब हमें ज्ञात हुआ कि वास्तविक सच्ची भक्ति क्या है? सच्चा ज्ञान क्या है? तब से आज तक मेरे जीवन में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के दिव्य ज्ञान की हर समय लहर उठती रहती है और ध्यान का आनन्द मिलता है अब मैं अच्छी तरह समझ गयी हूँ कि श्री सत्यस्वरूप ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के चरणों में ही चारो धाम है तथा समस्त देवी-देवताओं का निवास भी उन्ही में ही है। सुबह-शाम उनकी पूजा, ध्यान करने से मन प्रसन्नता और उत्साह से भर उठता है। मन की एकाग्रता बढ़ जाती है तथा सारे कार्य कुशलपूर्वक हो जाते हैं। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय दिव्य मंत्र जपने से मन के सारे विकार शान्त हो जाते हैं और दिव्य आनन्द की प्राप्ति होती है तथा हृदय, चिन्ता, भय, क्रोध आदि मानसिक तनावों से मुक्त हो जाता है और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

अब मैंने श्री पालनकर्ता ॐ आनन्दमय भगवान को ही अपना माता-पिता तथा समस्त रिश्ते-नातों में मान लिया है, क्योंकि वे हर रूप में हमारी सहायता करते हैं तथा पग-पग पर हमारा मार्गदर्शन करते हैं। ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की महिमा का वर्णन जितना भी किया जाये कम है क्योंकि उनकी महिमा तो अवर्णनीय है मैं स्वयं को बहुत भाग्यशाली समझती हूँ तथा हर समय उनके दिव्य स्वरूप को हृदय में धारण किये रहती हूँ कि उन्होंने मेरे जीवन में आगमन किया और मेरा जीवन आनन्द से भर दिया। क्योंकि ऐसे सद्गुरु संसार में बहुत मुश्किल से मिलते हैं। अतः मैं यही कहना चाहूँगी कि–

''यह तन विष की बेलड़ी, गुरु अमृत की खान।
शीश दीजै सद्गुरु मिले, तो भी सस्ता जान।।''

मैं अपना जीवन ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के पावन चरणों में समर्पित करते हुए यही प्रार्थना करती हूँ कि हे श्री आनन्दमय प्रभु, हमारा भ्रमर रूपी मन सदैव श्री आपके कमल रूपी चरणों में ही निवास करें।

–रुपाली शर्मा (छात्रा)

–:ज्ञानः–

जिस देश के मनुष्य ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के विधानानुसार आचरण करेंगे, उस देश में श्री प्रभु पिता जी आकाशी मौसम स्वास्थ्य हितकारी और कृषि उपयोगी बनाएँगें अर्थात् शीत, गर्मी, वर्षा, वायु यथावश्यक प्रदान करेंगे (श्री मानव भाग्य विधाता से)।

ॐ श्री कर्मयोगाचार्य देव शरणम्!

ॐ श्री कर्मयोगाचारिणी आनन्द निधि जी शरणम्!

सेवा में,

परम् पूज्या श्री आनन्द स्वरूपा बहिन जी एवं परम् आदरणीय श्री आनन्द किरन भगवन् के चरणों मे आनन्दमय अनुरागी सेवक सुभाष आनन्दमय का कोटि-कोटि अभिवादन् ।

भगवन् प्रभु पिता जी (श्री गुरुदेव भगवन्) की ॐ आनन्दमयी ॐ शान्तिमयी असीम अनुकम्पा समस्त आनन्दमय अनुरागियों पर सदा से रहती आयी है। मेरे जीवन को तो मानों उनकी प्रतिपल कृपा ही सींच रही है। परन्तु जीवन में जब कभी मुझे अनुभव लिखने का अवसर प्राप्त होता है तब स्थिति बड़ी बिषम सी प्रतीत होती है। तात्पर्य यह है कि जीवन का प्रत्येक पल प्रभु पिता जी की ही कृपा से ओत-प्रोत है तो क्या लिखूं और क्या ना लिखू की असमंजिस स्थिति सामने आ जाती है। यदि शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यक्तिगत उपलब्धियों के बारे में एक सामान्य व्यक्ति के लिए लिखूं तो ऐसा लगता है कि मानों आनन्द-शान्ति के महासागर से कुछ रत्न निकाल लाने की बात है।

प्रेमियों! मित्रों, भाइयों एवं बहनों आपसे बहुत कुछ कहने की भावना उत्पन्न हो पड़ी है। लेकिन कहना या लिखना प्रारम्भ करुंगा तो पोथियां भी कम पड़ जायेंगी। फिर भी सारांश में यह जान लीजिये कि मैं एक उच्च कुल में जन्मा परन्तु बहुत साधारण परिवार में पला-बढ़ा हूँ और शारीरिक बीमारियां आये दिन सताती रहती थी। आर्थिक तंगी का हाल ही क्या बताऊं। हां इज्जत से बस हम लोग जिये जा रहे थे। माता जी पर श्री आनन्दमय प्रभु पिता जी की कृपा हुई तो हम बहुत सहज मार्ग से सभी बाधाओं को पार कर मजबूत परिवार हो गये जिसकी मजबूती प्रभु पिता की कृपा का कवच है जो हर तरह की उन्नति आवश्यकता अनुसार प्रदान करता रहता है।

एक छोटी सी घटना का जिक्र इस अनुभव में उल्लिखित करने की अभिलाषा हुई है जो निम्नवत है:–

भगवन् जब मैं आफिस में कार्य कर रहा होता हूँ तो कोशिश करता हूँ कि आनन्दमय प्रभु पिता जी का स्मरण बना रहे ऐसे ही क्षण एक दिन सूचना प्राप्त हुई कि प्लान्ट में एक श्रमिक/ऑपरेटर गैस की चपेट में आकर मरणासन्न स्थिति में गिर पड़ा है। वह २० फीट गहरे मैनहोल में था।

उस समय मेरे पैरों के नीचे से मानों धरती खिसक गई। मेरे प्रबन्धन में कभी किसी की जीवन लीला समाप्त हो जाये इससे बड़ा अभिशाप क्या होगा यह सोचकर भागते हुए मैं स्थान पर अपने सहयोगियों के साथ स्वयं पहुंचा और एक घंटे की मशक्कत के पश्चात मैंने प्राथमिक उपचार स्वयं किया और प्रभु पिता जी की कृपा एवं श्री छोटी बहिन जी की दिव्य शक्ति के निरन्तर ध्यान-जप से वह व्यक्ति दो दिनों में अस्पताल से सकुशल घर भेज दिया गया। जब मैंने उसे देखा था वह लगभग मरा हुआ ही था। सभी कह रहे थे कि यह तो गया। मैंने मन ही मन प्रभु पिता जी एवं बहिन जी से अटूट लगन लगायी और उन्होंने उसे जीवन दान दिया, जो अविश्वसनीय था।

आप शायद आश्चर्य करेंगे कि बचना था तो बच गया परन्तु प्रभु पिता जी की शक्ति (हमारे परम् पूज्य गुरु भगवान की शक्ति) का अनुभव अर्न्तमन से ही सम्भव है।

भगवन्! मैं तो यह विश्वास दिलाता हूँ कि ॐ आनन्दमय गुरु भगवान की सच्ची पूजा उन पर सच्चा एवं अटूट विश्वास ही आपको आनन्द शक्ति के सागर से परिपूर्ण कर देता है। इस आनन्दमय पथ पर चलते रहिए और स्वयं के साथ औरों को बनाते रहिए यहीं जीवन का मूल धन है और इसके ब्यास स्वरूप शारीरिक, आर्थिक, मानसिक समस्त संसाधन तो समयानुसार एवं आवश्यकतानुसार आपके पीछे-पीछे दौड़ेगें उनके पीछे आपको दौड़ना नहीं पड़ेगा।

भगवन्! विश्वास करें यह सिद्धि स्वयं भगवान कृष्ण, शंकर, राम के अवतार हमारे प्रभु पिता जी ने सभी सच्चे आनन्दमय अनुरागियों को देते रहने का विधान बना रखा है। बस हमें इसकी आशा न करते हुए आदर्श

जीवन जीने का ज्ञान इस आश्रम द्वारा प्राप्त करते रहना है और दूसरों से यथा संभव-यथा शक्ति चर्चा एवं प्रचार-प्रसार करते रहना है। सामान्य जीवन में, गृहस्थ रहते हुए भी, जीते-जी मोक्ष प्राप्त करना यहीं सम्भव हुआ है।

-सुभाष आनन्दमय, कानपुर।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देव शरणम्

भगवन् मैं वाल्यावस्था से ही अपने माताजी व पिताजी के संग कम्पनी बाग में सत्संग में कभी-कभी जाया करता था, वहाँ ॐ श्री योगाचार्य भगवान का दर्शन और उनके मुखार बिन्दो के द्वारा श्री गीता का ज्ञान तथा श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का ज्ञान सुना करता था, सुनकर आनन्द-शान्ति की अनुभूति हुआ करती थी। मेरा स्वभाव बहुत चंचल था जिसके कारण मैं अशान्त रहता, क्रोध भी बहुत आता था, लेकिन घर का वातावरण शान्त रहता था क्योंकि हमारे पिता जी व माता जी हर कार्य करते हुए ॐ श्री आनन्दमय ॐ श्री शान्तिमय का जाप किया करते साथ में हम लोगों से भी करवाते थे। जून माह में हम लोगों को लेकर हरिद्वार भी जाते थे। वहाँ पर आनन्दमय भगवान का तेजोमय दिव्य स्वरूप का दर्शन करते ही आँखों से आंसू की धारा बहने लगी, ऐसा लगा कि हमारे सारे पाप धुल गये हो। ऐसा प्रतीत हुआ कि मुझे साक्षात् भगवान मिल गये है। वहाँ पर पिता जी की लीला देखते और पिता जी सबसे ज्ञान पढ़वाते, मन प्रसन्न चित्त हो जाता, उस वक्त मैं अपने को बहुत भाग्यशाली मानता कि ऐसे महापुरूष भगवान का संग मुझे प्राप्त हुआ है।

मेरे पिता जी (स्व० श्री रामकिशोर जी आनन्दमय) जो कि प्रतिदिन दो-तीन घंटा ध्यान करते थे, लेकिन मेरी नौकरी शिफ्ट में थी, इसलिए मुझे ध्यान का अवसर नहीं मिलता, जिसके कारण मैं कभी-कभी अशान्त हो जाता था, लेकिन महापुरुष भगवान की कृपा से सामान्य पाली में मैं काम करने लगा, तब से मैं अपने पिताजी के संग ध्यान में बैठने लगा। घर में दोनों समय का सत्संग होता, जिसमें सुबह शाम ॐ आनन्दमय भगवान की प्रेम भक्ति के २१ सूत्रों को पढ़ता तथा श्री मानसिक चिकित्सा का ज्ञान, ब्रह्मज्ञान, गुण विद्या का प्रथम पाठ, इसके अलावा सभी ग्रन्थों का स्वाध्याय करने लगा, तब से मेरा मानसिक रोग काफी कम हो गया, अब मैं हर कार्य करते समय मन में ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप करता रहता हूँ उनकी कृपा से भारी से भारी संकट आने पर दूर हो जाते हैं। जिनका प्रभाव हमारे ऊपर नहीं पड़ता है। मेरा परिवार आनन्द शान्ति में मग्न रहता है। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूँ कि आप हमारे हृदय में हमेशा विराजमान रहें और महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप चलता रहे तथा सत्संग का लाभ मुझे मिलता रहे, बस यही कामना करता हूँ।

—ॐ आनन्दमय आपका सेवक
रमेश जी व गायत्री जी आनन्दमय, इलाहाबाद।

—:ज्ञानः—

सत्संग का त्याग करने से काम क्रोधादि आसुरी भावों की जागृति होती है। यह वैधानिक विचार सर्वथा सत्य है, इस विधान के श्रद्धालु साधक सत्संग का त्याग और कठसंग का ग्रहण नहीं करते।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अब जिधर देखता हूँ जलवा-ए-आनन्दमय है।
मैं भी हूँ तू भी है जो कुछ भी है आनन्दमय है।।

मसज़िद व दैरो में कलेशा में खुदा ही जाने।
दिल में जो मेरे समाया है वह आनन्दमय है।।

कोई छोटा हो बड़ा हो के यहाँ हो के वहाँ।
वह अयां हो कि निंहा हो मगर आनन्दमय है।।

ढूढ़ता फिरता था दिल जिसको जमाने भर में।
मेरे हृदय में बसा आज वो आनन्दमय है।।

दोस्तों दिल को मेरे भा गई उसकी अदा।
लोग कहते हैं जिसे ॐ है आनन्दमय है।।

जब से इखलाक को नज़र पर है तसदुक यह जान।
यूं बहार आई है यह जान भी आनन्दमय है।।

जितने अवगुण थे उन्हें भी तुमने फ़ना कर डाला।
सारे जीवन को किया आपने आनन्दमय है।।

ग़म मिटा ग़ुस्सा मिटा आ गई कुछ ऐसी अदा।
गोया आनन्द ही आनन्द है आनन्दमय है।।

ॐ कहते ही मेरी आँख झपक जाती है।
सामने होते हो जब कहता हूँ आनन्दमय है।।

मिट गई सारी कामनाएँ तेरे ही दम से।
मेरा दाता मेरा वारिस तू ही आनन्दमय है।।

मेरी दिवानगी हो मुझको मुबारक यारब।
क़ैस को लैला मुबारिक मुझको आनन्दमय है।।

ताने सुनकर भी मेरे दिल को जुम्बिश न हुई।
क्यों न हो शान्तिमय भी है जो आनन्दमय है।।

आयें देखें तो सही रोजे कयामज न सही।
ध्यान आते ही फ़कत शान्ति आनन्दमय है।।

जिसने देखा न अभी फिर नहीं देखेगा कभी।
हाथ कंगन को नहीं आरसी आनन्दमय है।।

सत्यव्यवहार का शैदाई हूँ दिवाना हूँ।
संस्था तो यही कहती है कि आनन्दमय है।।

जिसने जीवन में न पाया अज़मात आनन्द।
बाद मरने के कहाँ खाक है आनन्दमय है।।

ॐ शान्तिमय सेवा में भगवत् स्वरूप पीर गुलाम जी

—:ज्ञानः—

राजसी प्रेम पूर्वक अथवा तामसी द्वेष पूर्वक इन्द्रिय भोगों से शारीरिक रोग होते हैं, आर्थिक चिन्ता होती है। दिमाग में अशान्ति और क्रोध होता है, विपरीत ज्ञान की जागृति रहती है।

ॐ श्री सद्गुरू देवाय जी शरणम्

मूलचन्द आनन्दमय की ओर से सभी भगवत् प्रेमियों को प्रणाम।

भगवान दयामय की दया से मेरे सांसारिक परिवार में,घर में नित्य प्रतिदिन पूजा पाठ प्रार्थना एवं समय-समय पर धार्मिक अनुष्ठान होते रहते थे। मेरे सांसारिक स्व. पिता सामाजिक सेवा कार्यों में भी प्रवृत रहने के कारण समाज में कुछ अग्रणी थे, इसी कारण समाज के लोग व बाहर से आने वाले लोग उनसे सलाह मशविरा लेने आ जाया करते थे। मेरी उम्र ७-८ वर्ष थी, स्व. पिता जी के पास आने वाले लोगों के साथ होने वाली भक्ति चर्चा में भी बड़ी सावधानी व लगन के साथ सुना करता था। भगवान की भक्ति व चरित्रों को सुन-सुन कर मुझे बड़ा विस्मय व आश्चर्य होता था। फलत: मैं भी स्व. पिता जी के साथ उनकी प्रेरणा से प्रात:, सायं पूजा-प्रार्थना करने लगा और प्रभु पिताजी में मेरी श्रद्धा स्थापित हो गई। पिता जी की प्रेरणा से ज्ञान हुआ कि सच्चे सद्गुरु बिरले ही होते हैं और वह प्रात: काल ३-४ बजे भक्ति करने से ही प्राप्त होते हैं। इस बात को सुन कर मेरी जिज्ञासा बढ़ी कि मैं भी उन सद्गुरू को प्राप्त करूँ उनके दर्शन करूँ और उनको जानूँ कि वह कैसे होते हैं। ऐसा मन में भाव लिये हुए उम्र भी बढ़ती चली गई, विद्याध्ययन के साथ-साथ यह जिज्ञासा भी उत्तरोत्तर बढ़ती चली गई। परन्तु यह अभाव खलता रहा कि वह भक्ति कैसे होती है? उसका प्रकार क्या है? उसका विधि विधान कैसा होता है और वह कैसे की जाती है, यह लालसा और तड़पन मेरे मन में लगातार बनी रहती थी चूंकि जो मैं पूजा-पाठ या अनुष्ठान आदि करता था उससे मैं सन्तुष्ट नहीं था।

भगवन् इसी क्रम में दयामय ॐ आनन्दमय प्रभु की असीम कृपा से और मेरी निश्छल कामना से वह शुभ दिन भी आ गया, जब गुरू भगवान ने कृपा दृष्टि कर और मेरी विरह व्याकुलता भरी पुकार सुन कर भगवत प्रेमी श्री मिश्रा जी इन्सपेक्टर के द्वारा श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ मेरे पिता को प्राप्त कराया। यह घटना सन् १९६८ का है तब मैं कक्षा ८ में पढ़ता था । श्री ग्रन्थ को उठाकर पढ़ता था बार-बार पढ़ता था। जहाँ से समझ में आता था बड़ा आनन्द मिलता था। एकदम विरला, निराला और अलग।

परन्तु बुद्धि का विकास न होने से एवं विद्याअर्जन में रत कहीं-कहीं से कुछ ज्ञान समझ में नहीं आता था, परन्तु वह निश्चय यह हो चला था कि सद्गुरू प्राप्ति का व भगवत प्राप्ति का मार्ग है। चूंकि पिता जी के कहने पर हमने महामंत्र का जाप करना प्रारम्भ किया तो साक्षात अनुभव हुआ कि हमारे घर आँगन दुकान व बाहर भीतर सब ओर आनन्द ही आनन्द का साम्राज्य छा रहा है, और एकदम पूर्व की स्थिति से भिन्न आनन्द व प्रेम प्रसन्नता की स्थिति हो गई। परन्तु फिर भी यह उत्कंठा बनी रही कि किस प्रकार प्रार्थना के मंत्र, भजन, साधन व सत्संग करना है, ऐसा होते हुए पहले कभी न देखा था, किन्तु प्रभु जी ने कृपा दृष्टि कर वह शुभदिन भी ला दिया। पता लगा कि श्री विश्वशान्ति ग्रंथ के अनुसार गाँव के मन्दिर में श्री सत्संग, भजन, प्रार्थना व साधना हो रहा है। मैं तो इसकी बड़ी तलाश में था ही, इस खबर से ऐसा महसूस हुआ कि मानो मुझे आज सबसे प्रिय वस्तु मिलने जा रही है, और थी भी। एक भगवत प्रेमी के सहयोग से मुझे उस सत्संग में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ, जिसके लिये मैं वर्षों से बाट जोह रहा था। वह सर्वोपरि परम दुर्लभ और परम प्राप्य चीज आज मुझे मिल रही है, यह जानकर मेरी क्या विचित्र दशा हुई होगी यह समझने में आपको देरी न लगेगी। कीर्तन, भजन प्रार्थना और फिर ध्यान शुरू हुआ। श्री सत्संग में पहुंचने पर श्री गुरू भगवान जी के श्री विग्रह का दर्शन कर और वहाँ के विचित्र आनन्दमय वातावरण को देखकर ऐसा लगा कि यह तो वही त्रिलोकी नाथ का परम धाम का दृश्य है, जिसके लिये मैं बिन पानी मछली का तड़पना की भाँति था। ध्यान योग के लिये श्री महामंत्र का व आनन्द का आभास करने से शरीर संसार का कोई ज्ञान नहीं रहा। बड़ी ही विचित्र दशा शरीर की हो गई। एकदम मन-बुद्धि पर आनन्द स्वरूप आनन्दमय ने कब्जा कर लिया, और इस आनन्द स्वरूप आनन्दमय का आज तक कोई भी वर्णन न कर सका, तो दीन, हीन व तुच्छ बुद्धि क्या वर्णन कर सकती है।

अन्त में यही कहूँगा कि सच्चे मन और निश्छल हृदय

से जो भी भगवान को भगवान के लिए भजेगा उसके परम पद दायक ॐ आनन्दमय भगवान का द्वार सदा-सर्वदा सबके लिये खुला मिलेगा। भंडार भरे हैं जो कुछ आप लेना चाहेंगे मिलेगा, परन्तु लेना है सर्वोपरि परम सुखदायक प्रभु की निष्काम भक्ति का भंडार। ॐ शान्तिमय

लघु सेवक- **मूलचन्द आनन्दमय, सहारनपुर, देहली रोड।**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री गुरु भगवान की अत्यन्त दया एवं कृपा के कारण मुझे अपने छोटे भाई अरविन्द के साथ एक सप्ताह तक रहने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जिस दिन मैं श्री महापुरुष भगवान की शरण में आया, वह दिन बुद्धवार का था, यह मेरे उद्धार का दिन था। इसी दिन मैंने श्री भगवान की तस्वीर को देखा, तो ऐसा लगा कि श्री भगवान कह रहे है कि हे बालक तुम कहाँ भटक रहे हो, मेरी शरण में आ जाओ, मैं तुम्हारा कल्याण कर दूँगा बस सुनते ही मेरे मन में अचानक बदलाव आया। मैंने श्री भगवान को मन ही मन प्रणाम किया और सिर को झुका लिया और श्री भगवान की शरण में चला गया। एक सप्ताह से प्रतिदिन सत्संग कर रहा हूँ। कुछ घण्टों को छोड़ कर अब मेरा सारा दिन भगवान के सत्संग भजन में बीतता है। श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ एक अत्यन्त ही हितकारी साबित हुआ है। मैं इसमें जुड़ने से पहले क्रोध पश्चाताप और अंधकारमय जीवन व्यतीत कर रहा था, पर अब तो मेरे जीवन में एक नया सबेरा आया है, जो तेज रोशनी और प्रकाश से परिपूर्ण है, इस सत्संग का पूरा अनुभव तो मुझे नहीं है, पर इतना तो जरुर कहुँगा कि बिना सत्संग के मानव जीवन अधूरा है। मेरे मन में प्रति दिन नया-नया बदलाव आता जा रहा है। मेरे मन से अन्त:करण से अशान्ति-क्रोध ये सब कोसों दूर भाग गये हैं। मैं प्रतिदिन श्री विश्वशांति को पढ़ता हूँ तो ऐसा लगता है कि जैसे मेरे शरीर से सारे विकार दूर हो रहे हैं, और मैं भगवान के करीब जा रहा हूँ और मेरे जीवन की रात ढल कर नया सबेरा मेरे जीवन में आया है। एक दिव्य ज्ञान रूपी प्रकाश मैं अनुभव कर रहा हूँ, इसी बीच एक रविवार को मैं सत्संग में भी चला गया, वहाँ जाकर मुझे एक अजीब-शान्ति का एहसास हुआ। जिसका शब्दों में कह पाना मुश्किल है। उसका अनुभव तो सत्संग करने के बाद ही होता है, इस एक सप्ताह ने तो जैसे मेरे जीवन को ही बदल दिया हो, यह बदलाव श्री विश्वशांति ग्रन्थ एवं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र से हुआ, आज भी मेरी निगाह जब श्री भगवान की तस्वीर पर जाती है तो भगवान मेरे सामने साक्षात् होते हैं और कहते हैं कि देखो, मैंने तुम्हारे जीवन में कितना परिवर्तन ला दिया है। मैं तो सिर्फ नतमस्तक ही रहता हूँ।

श्री आनन्दमय भगवान की शरण में आने से मुझे सारे संसार से मुक्ति मिल गई है जिस शान्ति को मैं खोजता था, वह मुझे श्री आनन्दमय भगवान के ध्यान में मिली, एक मनुष्य को आनन्द एवं शान्ति के अलावा जीवन में और क्या चाहिये। मैं इस एक सप्ताह को कभी नहीं भूल पाऊँगा, जिससे मैंने श्री विश्वशांति ग्रन्थ के बारे में जाना और एक सप्ताह तक सत्संग नित्य किया।

सत्संग युक्त जीवन ही आनन्द शान्ति एवं शक्ति-मुक्ति का द्वार है, मुझे पूरा विश्वास है कि मैं अपने जीवन को पूरी तरह श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के अनुसार बना कर पूरा लाभ उठा लूँगा। धन्य है श्री विश्वशांति ग्रन्थ और यह दिव्य महामंत्र।

इस मंत्र के रूप में मुझे दो पावरफुल शस्त्र मिल गये हैं, जिसके द्वारा मैं जीवन की प्रत्येक कठनाइयों पर विजय प्राप्त कर लूँगा। मुझे यह भजन बहुत प्रिय है–

''आनन्दमय प्रभु जी मैं अपने मन को सुधारुँगा।''

अनुभव– श्री अनिल कुमार, आजमगढ़

तामसी मनुष्य *सेवा से भागता है।* ***राजसी मनुष्य*** *स्मरण-ध्यान से भागता है।* ***सात्विक मनुष्य*** *सेवा रूपी नौका पर सवार होकर संसार समुद्र में चलता है।*

ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देव शरणं
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री ईष्ट ग्रन्थों सहित ॐ श्री प्रभु जी के गुण प्रभाव को पठन-श्रवण कर एक श्रद्धावान भगवन् लिखते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सेवा में– सर्व सम्माननीय ध्यान के पारदर्शी महोदय। आपकी ओर से संदेश से अवगत हुआ। आपके चरण कमलों की रज-शिरोधार्य है।

आपके दर्शनों की अति आकांक्षा हो रही है। मुझे किसी धार्मिक सम्मेलन में शामिल होने हेतु उस तरफ आना है और सर्वप्रथम आपके श्री चरणों का दर्शन करना है। जो आप श्री विश्वशान्ति आश्रम के द्वारा विश्व के समस्त प्राणियों की शुभ कामना हेतु तन-मन-धन से सतत् प्रयत्नशील हैं। मैं आपके आशीर्वाद से ही आपके निकट पहुँच पाऊँगा। आपके आश्रम की महिमा को विश्व के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों द्वारा लिखा जाये, तो भी थोड़ा है। आपके गुणानुवाद की महिमा की हमारे पास वाणी नहीं है।

हे तत्वदर्शी महात्मन् आप कलियुग में साक्षात् देवों के महादेव हैं, विश्वगुरु हैं। और श्री गीता ज्ञान के दाता हैं। आप वास्तविक आनन्द शान्ति से परिपूर्ण हैं और स्वयं योग सिद्ध हैं। आपका योगसिद्ध ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र सचमुच योग सिद्ध ही है, जो विशेष प्रभावशाली है। आपका आनन्दमय आश्रम आदर्श है। जिसके दीर्घ जीवन की कामना है। विशेष लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है।

आपकी ज्ञान-पूर्ण पुस्तकों की आवश्यकता है। आपके चरणों में शत-शत नमन् और उपस्थित भक्तजनों को सादर प्रणाम् ।

प्रेम से बोलो ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

–सेवक लाल-चन्द्र, मिर्जापुर।

ॐ श्री गुरुदेव नमः
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं जिला हरदोई ग्राम कनगोइय्या का निवासी हूँ और अध्यापक के पद पर कार्यरत हूँ। मैंने अनेक धर्म ग्रंथ पढ़े और कई तीर्थ स्थानों, कई संत समाजों में गया परन्तु मन को कही भी शान्ति नहीं मिली । ऐसा प्रतीत हो रहा था कि असार-संसार सागर में डूबता ही रहूँगा श्री विश्वपिता भगवान की प्रेरणा से आनन्दमय गुरु भगवान की शरण में आया । ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र धारण करना तो दूर रहा कामी मन ने नाना प्रकार के द्वन्द संस्कारों में डाल दिया । यह सब होते हुए भी श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ की नियमावली के अनुसार पढ़ता रहा ।

अब प्रभु कृपा-प्रेरणा से ऐसा मालुम पड़ता है कि हृदय में आनन्द सागर लहरा रहा है। उसमें कमल के फूल खिले हुए हैं। कमल के फूल पर श्री गुरुदेव भगवान कीर्तन मंगल कर रहे हैं। पीछे से सूर्य सा उदय हो रहा है। इस अवर्णनीय आनन्द का अनुभव लेखनी द्वारा प्रकट करना मेरी सामर्थ्य के बाहर है ।

मैं बीड़ी तम्बाकू खाता-पिता था अब सब तामसी पदार्थों का स्वतः परित्याग हो गया संक्षेप में और अधिक क्या लिखा जाय। मेरा जीवन गुरु भगवान की शरण पाकर धन्य हो गया। अब संसार-सागर से पार उतरना सुलभ हो गया ।

–एक तुच्छ दास

राम भरोसे स०अ० (हरदोई यू०पी०)

–:ज्ञानः–

नाराजगी और चिन्ता को आदर देने वाला अहंकारी मनुष्य दिव्य-गुण सम्पन्न सदाचारी नहीं हो सकता।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री योगाचार्य भगवान शरणम्

''चलो रे भाई, आनन्दमय की ट्रेन है आई।''

चलो रे भाई, आनन्दमय की ट्रेन है आई।
जिन चरनन की भक्ति पाकर,
परदादा गुरु मंगलनाथ स्वामी ने,
महामुक्ति की ट्रेन चलाई।
सहजहिं दादागुरु को सुलभ कराई।।
चलो रे भाई.....

आनन्दमय प्रभु की परमकृपा से,
श्री जयदयाल गोयन्दका जी, गीताप्रेस से,
भक्ति-ज्ञान की पावन, मंदाकिनी बहाई।
जगत को प्रभु भक्ति-साहित्य सुलभ कराई।
चलो रे भाई.....

गीता प्रेस पधार, गुरुदेव हमारे,
गुरुचरणन में, विद्या पूरण पायी।
ऋषिकेष - गीताभवन में निर्मित,
आनन्दमय नगर ले जाने की,
पावन ट्रेन चलाई।
चलो रे भाई.....

यह ट्रेन परम विलक्षण भाई,
चालक हैं, सद्गुरुदेव हमारे,
गार्ड हैं, डा० आनन्दमोहन जी भाई ।
निज जीवन अर्पित कर यह मुक्ति-ट्रेन,
हम, सबको सुलभ कराई।।
चलो रे भाई.....

आरक्षणकर्ता इस ट्रेन में,
दिव्य स्वरूपिणी आनन्दस्वरूपा जी बहना हैं।
जिनने, परम वैराग्य का, पहना पावन गहना है।।
जग की चाहत कल्याण-भलाई।
चलो रे भाई.....

भाई आनन्दकिरन जी, इस ट्रेन में,
हैं सतर्कता अधिकारी, भारी,
लक्ष्मण समान त्यागी, वैरागी हैं,
धन्य किये प्रयाग धरा को
सबको नई राह दिखाई।
चलो रे भाई.....

पूज्य गुरुभ्राता आनन्द ब्रह्म जी,
निज कर कमलन से, प्रभु को
शीतल जल-पान-पंखा खूब कराया।
सहजहिं निज यात्रा पूरण करवायी,
धन्य किया, प्रयाग पावन धरती,
जो प्रभु कारज हित, ऐसो सुत को जायी।
चलो रे भाई.....

बहन आनन्द निधि जो बैठीं,
इसी ट्रेन में,

जगको यह संदेश भेजवायीं।
जग असार में भजन सार है,
शीघ्र कल्याण करा लो मोरे भाई।।
चलो रे भाई.....

इस दिव्य ट्रेन की , महिमा न्यारी है।
क्षमता भी इसकी भारी है।।
संसार बैठना चाहे तो,
सबको ले जाने को,
उद्धारकारिणी ट्रेन प्रभू की आयी।।
चलो रे भाई.....

संसार की भूल - भुलैया में,
जीवन व्यर्थ न जाये,
अन्तिम जन्म सुफल होई जइहैं,
बेगिहिं सतगुरु-ट्रेन में बैठहु आयी।।
चलो रे भाई.....

जिन जन-हेतु, जीवन-धन,
समय - गँवाया।
बदले में कलह-क्लेश ही पाया।।
मनः शान्ति कबहुँ ना पाई।
आनन्दमय - जप-ध्यान से ही,
अद्भुत शान्ति मिली मोरे भाई।
चलो रे भाई.....

इसी दिव्य ज्ञान को लाये थे,
भक्त तुलसी, सूर, कबीरा।
इसी ज्ञान की धार बहाने,
आये नानक, बुद्ध और भक्तिमयी मीरा।
उसी ज्ञान को आनन्दमय देव ने,
सहजहिं सबको सुलभ कराई।
चलो रे भाई.....

मीरा तो प्रसिद्ध हुयी थीं,
घटना विशेष के कारण।
बहन आनन्द निधि जी तो,
आयीं थी, अनाम-अप्रतिम बनकर,
निज में प्रकट ब्रह्म ज्योति का दरश दिखाई।।
चलो रे भाई.....

ठगधर्मियों ने छद्म वेषधर,
मानवता दिग्भ्रमित करायी।
गीता–ज्ञान से विरत हुए,
जगतगुरु की झूँठी उपाधि है पायी।
चलो रे भाई.....

भोग–योग को अपनाकर,
जगको योग सिखाते हैं।
खुद महा मानस रोगी हैं,
जगको आरोग्य बनाने की युक्ति बताते हैं।
अब गीतायोग, राजयोग, ध्यानयोग सिखाने
आनन्दमय नाथ की भक्त मण्डली आयी
चलो रे भाई.....

अब ढोंगियों का खंडन होगा,
सत्पुरूषों का मंडन होगा।
आर्यावर्त के भरतखंड में, पुनः
गीता–विश्वशान्ति की पूर्ण
प्रतिष्ठा होने को आई।

चलो रे भाई.....

केतिक तारे, केतिक जीवन सुधर गये,
जबसे गुरूदेव ने, कृपा–प्रेम वृष्टि कराई।
यह रहस्य जाना श्रद्धावानों ने,
परमपिता ने गुरूदेव को मेरे,
ब्रह्मपद, पदवी प्रदान कराई।
चलो रे भाई.....

गीता पर पूर्ण संत बने,
ध्यान–समाधि अखण्ड दिखाई।
निष्काम भक्ति से, समदर्शी,
ब्रह्मवेत्ता, ज्ञानी पद की,
पूर्ण प्रतिष्ठा है पायी।
चलो रे भाई.....

निष्काम प्रेम का पीलो प्याला,
जपलो आनन्दमय–शान्तिमय नाम निराला।
भव बन्धन से छूटन को,
विश्वशान्ति ग्रन्थ ने महा औषधि बतलाई।
चलो रे भाई.....

ना फिर मिलिहैं, भाई आनन्द मोहन जी,
ना आनन्द किरन जी भाई।
ना मिलिहैं, बहना
आनन्द निधि–आनन्दस्वरूपा जी,
जो प्रभु की राजदुलारी बनके,
कल्याण करन जग में आयीं।
चलो रे भाई.....

जिनने इनकी, मान-प्रतिष्ठा कर,
तन-मन-धन अर्पित करवायी।
दु:ख-शोक की छूटी गठरिया,
सुख शान्ति की शाश्वत पूँजी पायी।
की निन्दा अपमान जिन्होंने,
ब्रह्महत्या के बने पात्र, जग में कहीं ठौर ना पाई।।
चलो रे भाई.....

दीनानाथ, कहत मगन होई,
कहाँ लौ भगिहौ भाई,
तुम्हें बिठाने आनन्दमय नाथ की,
यह ट्रेन प्रयाग फिर आई।
चलो रे भाई.....

उक्त पंक्तियों को अपने प्राण धन सद्गुरुदेव भगवान के चरण कमलों में हृदय से निसृत भाव सुमनांजलि अर्पित करता हूँ। ***–दासानुदास***

दीनानाथ आनन्दमय

अनुभाग अधिकारी, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद।

मनुष्य जितना समय वाद-विवाद में लगाता है, उतना ही परिश्रम अपने दुर्गुणों के मूलोच्छेद करने में और सद्गुणों को धारण करने में लगाता, तो न तो उतनी हानि ही होती न विश्व में इतना अवसाद ही फैलता और न धर्म-स्थानों में इतना असंयम और व्यभिचार ही घुसता।

एक अनूठा अनुभव

अपने पड़ोस के कम्पनी बाग में नित्य प्रात: भ्रमण की आदत वर्षों से चली आ रही है। वहाँ प्रकृति के अप्रतिम आनन्द के साथ विभिन्न प्रकार के मित्रों से मिलना जुलना कुछ साहित्यिक छेड़-छाड़ अफवाहों का चटखोर ले लेकर आनन्द लेना अपने में अभूतपूर्व आनन्द प्रदान करता है। चारो तरफ सड़क पर चहल कदमी लगभग ३ किलोमीटर की पदयात्रा करा देता है जिसके विषय में जानकारों का मानना है कि हर उम्र के व्यक्ति के लिये परम उपयोगी एवं स्वास्थ्य वर्धक है।

वह रविवार का दिन था जिस दिन अधिक हल्कापन का अनुभव इस कारण हो रहा था कि उस दिन सारी दिनचर्या अपनी गति से चलती थीं कोई जल्दी नहीं। उसी दिन एक किनारे एक बड़ी सी बस खड़ी थी जिसमें विभिन्न पुस्तकें कुछ चित्र रखे थे और जिनका कदाचित अभिप्राय कुछ प्रचार-प्रसार करने का था। मैं और मेरे मित्र उस ओर आकर्षित हुये यह जानने के लिये कि कुछ अच्छा सद् साहित्य आज इसपे दृष्टिगोचर हो रहा था। कुछ सामग्री अच्छी लगी और उसको हम लोगों ने प्राप्त कर लिया जिसमें अधिकांश में एक ही मूल मंत्र था- ''ॐ आनन्दमय शान्तिमय''

मित्र से चर्चा चल पड़ी और इस लक्ष्य को प्राप्त करने की विभिन्न संभावना पर विचार होने लगा। मेरे मित्र अधिक तार्किक थे और काफी अध्ययनशील भी। उन्होंने ओशो व कृष्णामूर्ती के साहित्य का अच्छा अध्ययन मनन् किया था, अत: वह उसी दिशा में मुझे समझाने लगे। विचार चलते रहे और हम दोनों आम्रकुंज को पार कर ज्ञान वृक्ष मन्दिर के निकट पहुँच गये। सहसा प्रांगण में हम दोनों ने देखा कि कुछ लोग, स्वच्छ धवल वस्त्र धारण किये पंडितवद् सफेद चादर पर विराजमान हैं, सामने एक चित्र है जो अनुमान्यत: उनके आराध्य देव का होगा। हारमोनियम को मधुर स्वर लहरी पर कुछ गायन चल रहा है।

इस छोटी सी सभा में स्त्री-पुरुष सभी आयु के रँग-रूप के बड़े शान्ति व आनन्द से किसी अभूतपूर्व चेतना से जुड़े हुये हैं। सबके मुख पर तेज है वह स्वयं में केन्द्रित किसी एसे लोक में खोये थे जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता। वृक्ष हैं, हवा है, सूर्योदय हो रहा है, सारा सौष्ठव चारो ओर फैला है और यह प्राणी अपने आनन्द में डूबे शान्तिमय संसार में खोये हुये हैं। यह शब्द नहीं दे रहे हैं। केवल महसूस कर रहे हैं। ऐसा लगता था कि इन्होंने दुनियाँ का अतिक्रमण कर लिया है और ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के आलोक में समाहित हो गये हैं।

हम दोनों मित्र कुछ दूर पर खड़े होकर यह दृश्य कुछ देर देखते रहे। हमारे सारे तर्क खो गये थे और हम दोनों भी मौन भाषा में न जाने क्या-क्या अभिव्यक्त करते रहे कुछ स्मरण नहीं, सहसा वहाँ एक मौन छा गया और हम दोनों की तन्द्रा भी टूटी और एक अनूठे अनुभव के साथ चल पड़े पर रास्ते भर हम शान्त रहे कुछ भी आपस में वार्तालाप नहीं किया। और ऐसा लगा कि यहीं आकर सारी सोच सारे तर्क समाप्त हो गये। भावना का अतिरेक विचारों को तिरोहित कर एक ऐसे संसार का सृजन उस छण करने लगा जिसमें केवल मैं स्वयं था और शान्ति व आनन्द की गूँज जो अब भी कानों में कहीं दूर से आकर प्रवेश कर रही थी।

सचमुच आज का रविवार चिरस्मर्णीय हो गया।

–सुरेन्द्र नाथ 'नूतन'
सुप्रसिद्ध कवि/लेखक
(सेवानिवृत खेल अधिकारी)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री ध्यान-समाधिमग्न महापुरूष देवाय नमः

ॐ श्री आनन्दमय भगवान की अति विलक्षण कृपा से श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग-१ के पृष्ठ १३ से १६ के विधान को क्रमशः धारण करते-जाने से सम्पूर्णा-सात्त्विक आचरणों सहित निष्कामता अनन्य भक्ति शरणागति एवं कठपुतलीवत् आज्ञाकारी तथा श्री भगवान जी की परमानन्द युक्त दिव्यता इस सेवक के कण-कण में फैलती जा रही है। भगवत आज्ञा मानकर जो ''करिष्ये वचनं तव'' (श्री गीता अ० १८ श्लोक ६३) नामक प्रतिज्ञा की थी और जिसके पालन में निरन्तर संलग्न हूँ उससे विलक्षण आनन्द और शान्ति मिल रही है एवं प्रगति के द्वार आगे से आगे खुलते जा रहे हैं।

प्रतिकूलताओं में ॐ श्री इष्टदेव विलक्षण आनन्द के साथ कभी साकार रूप का दर्शन कभी निराकार रूप अनुभव कराते हुए सभी परिस्थितियों में हँसी-खुशी देते हैं और हर वक़्त गुण धन का धनी-बनाते जा रहे हैं, जब अनन्य-प्रेम में मस्त हो जाता हूँ तो मनोरंजन के लिए स्थान ही नहीं रह जाता। ॐ श्री कृपानिधान जी की दया अनन्य-भक्ति जनित विशुद्ध प्रेम मन बुद्धि को लालची से अथाह लालची बना देते हैं।

नींद बहुत कम हो गई है, भोजन सात्त्विक हो गया है, नित्य उत्साह बना रहता है, विश्व-विराट रूप में लीलामय की लीलाओं को देखता हुआ, मैं उसी का अंशी होता जा रहा हूँ, अपने को कर्ता-भोक्ता न मानकर, मैं निमित्त मात्र होता जा रहा हूँ। श्री दयामय जी प्रेरणा-ज्ञान-शक्ति देकर कार्य कराते हैं और नाम भक्तों का हो जाता है।

–देवनारायण आनन्दमय , इलाहाबाद

अनुभव

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मुझे श्री महापुरूष भगवान जी की शरण में आए हुए आठ माह हो गये हैं, इन दिनों मेरा क्या से क्या हो गया है यह मेरे बयान से बाहर है।

मेरे एक मित्र ने मुझे श्री आश्रम का परिचय दिया। प्रथम दिन स्थान ढूढ़ने का विचार करते ही एक श्री आश्रम प्रेमी मिल गये जो वहाँ ले गये। श्री प्रभु का यह पहला अनुभव समझ में आया। प्रथम ही दिन सायंकाल के सत्संग में ऐसा मालूम दिया कि अपार आनन्द और शान्ति की वर्षा हो रही है।

केवल दो दिन के सत्संग में जाने से मेरा बीड़ी पीना व पान खाना बन्द हो गया। चार दिन के बाद ही भोजन सात्विक हो गया। १५ दिन में ही वजन दस पौंड बढ़ गया। कुछ ही दिनों में लिवर में फोड़ा बनने का मर्ज, जिससे मुझे बड़ी पीड़ा होती थी तथा जो बहुत दवाइयों के करने पर भी अच्छा नहीं होता था, ठीक हो गया। अभी तक तो केवल सायंकाल का सत्संग करता था परन्तु श्री महापुरूष भगवान जी की कृपा से व्यवस्था बनी तो चार दिन प्रातःकाल के सत्संग में ध्यान लगने लगा और अब मैं डेढ़-दो घन्टे ध्यान में बैठ जाता हूँ।

इस प्रकार मेरा अत्यन्त दुःखी जीवन, जिसमें केवल पेरशानी ही परेशानी थी तथा जिसमें संसार की सभी वस्तुएँ काटने को दौड़ती सी मालूम देती थी, सुधर गया है। अब आनन्द ही आनन्द हो गया है। तकलीफ व परेशानी दीखती ही नहीं।

श्री महापुरूष भगवान जी की कृपा से मेरे बालकों को भी ध्यान का आनन्द प्राप्त हुआ है। ध्यान का इतना विचित्र आनन्द, विश्व में हजारों वर्ष बीत जाने के बाद, भी महापुरुष आनन्दमय देव की कृपा से आज पुनः विकास को प्राप्त हुआ जिससे हजारों प्रेमी लाभ को प्राप्त कर रहे हैं।

मेरी सभी से प्रार्थना है कि श्री महापुरुष भगवान जी का संग कर ध्यान जनित लाभ को अवश्य प्राप्त करें।

ॐ शान्तिमय –एक साधक का अनुभव

मानव ही 'नौ ग्रह है'

१- समचित (गुणातीत, ज्ञानयोगी):–

सुख, शान्ति, आनन्द एवं शक्ति के आचार्य, स्मरण-ध्यान करने योग्य, विशुद्ध प्रेमी श्री भगवत् स्वरूप 'महादेव', इन्हें ग्रहों में श्री देव मनुष्यों का गुरु 'श्री वृहस्पति ग्रह' समझें। श्री आपके संग, सेवा, अनुकरण (गुण-आचरणों को धारण करना), आज्ञापालन और स्मरण-ध्यान (हर समय याद करते रहने) से प्रत्येक मनुष्य क्रमश: सम्पूर्ण दुखों से मुक्त होकर महा भाग्यवान बनता है अर्थात् श्री आपके ही समान पूर्ण आनन्दवान बन जायेगा।

२- शान्तचित (शुद्ध सत्त्वगुणी):-

श्री ध्यान-समाधिमग्न श्री देवस्वरूप आनन्द और शान्ति की प्रतिमा। इन्हें द्वितीय 'श्री सोम-चन्द्र ग्रह' समझें। श्री आपका संग, सेवा एवं प्रेम करने वाला श्री आपके समान शान्तिमय बन जायेगा।

३- प्रसन्नचित्त (सत्त्वगुणी):–

श्री देव मनुष्य, श्री महापुरुष भगवान के प्रेमी ध्यानमग्न कर्मयोगी (श्री सज्जन सेवा में रत और अज्ञानी मनुष्यों को सज्जन बनाने में प्रयत्नशील), आसुरी ममता कामना और भौतिक अहंकार के त्यागी, इन्द्रिय संयमी सुखी मानव। इन्हें तृतीय 'श्री रवि-सूर्य ग्रह' समझें। श्री आपका संग, सेवा, प्रेम करने वाला मनुष्य सदा प्रसन्नचित रहेगा क्योंकि अन्त: आनन्द के साथ-साथ श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु इन्हें सुख-शान्तिदायक प्रेमी-पदार्थ भी प्रदान करते रहते हैं।

४- हर्षोचित्त (रजोगुणी):–

जगत-शोषक, भौतिक सम्पत्ति को ममता बुद्धि से संग्रह करने वाला और जगत के प्रेमी-पदार्थों से होने वाले आनन्द का ही लोभी तथा स्वाँगी, वाचाल, बनावटी धर्मात्माओं का सेवक और केवल मृत्यु के पश्चात् ही फल देने वाले अन्य-श्रद्धामय पाखण्ड धर्मों में रत रहनेवाला मानसिक रोगी * चंचल, अज्ञानी, असुर मनुष्य इनका क्षणिक सुख काँटे पर लगे भोजन का रस लेकर विंध जाने वाली मछली के सुख के सदृश है। इसको असुरों का गुरू 'शुक्र ग्रह' समझें! इसकी संस्कृति (आदर्श) को धारण करने वाला मनुष्य श्री प्रभु कोप से क्रमश: दुखी-अशान्त होता जायेगा, जैसे रियासती राजा-रानी हुए!

५- अप्रसन्नचित्त (रजोमिश्रित तमोगुणी):

श्री प्रभु के न्याय-दया-प्रेम के विधान से अनभिज्ञ अज्ञानी मनुष्य भौतिक अहंता-ममता की कमी होने की सम्भावना होने से अप्रसन्न होता है। इनको 'बुद्ध ग्रह' समझें। इसका संग, सेवा, प्रेम करने वाला मनुष्य सदा अप्रसन्नचित्त रहेगा क्योंकि मानसिक क्लेशों के साथ-साथ श्री न्यायकारी प्रभु इसे प्रेमी-पदार्थ भी दु:ख-अशान्ति दायक प्रदान करते रहते हैं।

६- क्रोधचित्त (तमोगुणी):–

७- भयचित्त:–

सर्वथा विपरीत ज्ञानयुक्त, धोखे-परायण या कपट विद्या में रत रहने वालों के प्रेमी, हिंसक, दु:खमय, अशान्तिमय, महामूर्ख, राक्षस मनुष्य। इनको 'मंगल' और 'शनि-ग्रह' समझें। इनके सम्पर्क में रहने से अन्य की तो बात ही क्या प्रसन्नचित्त रहने वाले श्री देव मनुष्य भी अतिशीघ्र क्रोधित एवं भयातुर हो जायेंगे।

८- चिन्तितचित्त:– (जटिल तमोगुणी)

९- रुदनचित्त:–

श्री प्रभु के महाद्रोही, मानसिक अग्नि से दग्ध, महादुखों के अध्यापक, अशान्ति के समुद्र। इनको 'राहु और केतु' राक्षस ग्रह समझें। इनके तो दर्शनों से ही मानसिक अग्नि प्रकट होती है। इनके वचन और ज्ञान तोप के गोले के सदृश मनुष्यों का सर्वनाश करते हैं। इन लोगों पर दया और प्रेम करने वालों को श्री प्रभु इन्हीं के समान बना देंगे।

यह पक्का सिद्धान्त है। शान्तचित्त और प्रसन्नचित्त रहने वाले अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा हमारे बालक समाज को शिक्षा दिलाने से भारत देश की चिन्ता शान्त हो जाएगी।

हे श्री प्रेमी! आपके हस्तकमलों में मानव परीक्षा के लिए उपरोक्त ज्ञानरूपी यन्त्र है। इस यन्त्र द्वारा आप बालक-वृद्ध, पण्डित-मूर्ख, साधु-असाधु, महात्मा-दुरात्मा इत्यादि सभी देवियों तथा पुरुषों की परीक्षा कर अपने कर्तव्य-अकर्तव्य का निश्चय कर लें। याद रक्खें! जिन मनुष्यों को श्री आनन्दमय प्रभु ने ध्यान-समाधियोग का आनन्द प्रदान नहीं किया उनकी राजसी व तामसी बुद्धि का ज्ञान जाली नोट के सदृश (फौजदारी) कार्य कर रहा है और करता रहेगा।

दिमागी शान्ति एवं आत्म शक्ति प्रदान करने वाले

ॐ श्री महापुरुष भगवान शरणं।

यूं तो किसी भी सत्य अनुभव को बयांन करना मुश्किल है परन्तु आध्यात्मिक अनुभव को बाँटना नामुमकिन है केवल प्रयास भर किया जा सकता है। यह प्रयास कितना सफल होगा इसका पता नहीं। पता है तो केवल इतना कि आप हैं, हम हैं और हममें प्रेम का आनन्द है। वो आनन्द जो मिलने पर हमारी आँखों, होठो, भाव व शरीर के रोम-रोम से बरसने लगता है यह आनन्द उस आनन्दमय परमपिता परमेश्वर की कृपादृष्टि से पूज्य गुरुदेव के द्वारा हम पर बरसता है।

इसलिए पूज्य पिताजी ने हमें ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय मंत्र दिया। भाव और प्रेम मेरे दिल के आंगन में सदा से ही खेलते हैं परन्तु इससे सराबोर होने का अवसर जीवन में अक्सर कम ही आया है और एक ऐसा ही अवसर जीवन में तब आया जब मेरी धर्मपत्नी श्रीमती नीलम व उनके परिजनों ने मुझे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय विश्वशान्ति आश्रम हरिद्वार में पूज्य गुरू पिताजी व आश्रम के साधको से मिलने के लिए सुअवसर आश्रम के वार्षिक आनन्द उत्सव के लिए दिया, वहाँ मैंने पूज्य प्रभु पिताजी के दर्शन किए। मैंने उन्हें वाटिका में टहलते हुए देखा और उन्हें जैसे ही मन ही मन प्रणाम किया वैसे ही उनका आशिर्वाद आनन्द की रश्मियों से होता हुआ मेरे मन तक आ पहुँचा।

यह मेरा उनके प्रति समर्पण भाव ही था कि इसके छह माह पश्चात जबकि मैं आर्थिक व मानसिक तनाव से गुजर रहा था तथा जीवन बहुत ही विपरित परिस्थितियों से गुजर रहा था कि आश्रम से सुरेश भगवन जी मेरी दुकान पर पधारे और उन्होंने मुझे स्वयं ही गीता अ०-२ श्लोक स०-६२-६३-६४ का अध्ययन व उच्चारण करके सुनाया। मुझे लगा स्वयं परमपूज्य आनन्दमय पिताजी के द्वारा सुरेश भगवन को मुझे मानसिक संताप को दूर करने के लिए भेजा है। मैं अत्यंत भाव विभोर हो गया उसके पश्चात मैं स्वयं आश्रम जाने लगा। यूं यह प्रेममय मिलन होता ही रहता था परन्तु मैंने महसूस किया कि मैं जब भी आश्रम जाता तो मैंने जबकि अपना कपट किसी भी आश्रम वासी से नहीं कहा तथापि पूज्य इष्ट पिताजी जैसे सब कुछ जानते हैं और मुझे अभिष्ट कपट से शनैः-शनैः मुक्ति मिल जाती और प्रसाद स्वरूप भी मुझे वही चीज मिलती जो कि मुझे अत्यंत प्रिय होती, यहाँ मैं बताता चलूं कि मैंने जब मकान बनाया सन् २००३ में तब मेरी जमा पूँजी मात्र १६८रु० थी जबकि मकान में उस वक्त चार लाख २५ हजार रुपये खर्च हुए। पता नहीं पूज्य इष्ट पिताजी ने किन-किन हाथों द्वारा यह निर्माण कराया सच्ची बात तो यह है कि मैं आज अपने पैरों पर खड़ा हूँ परन्तु कैसे? पता नहीं, मेरे पास इतना आभार व्यक्त करने के कोई शब्द नहीं हैं।

–जितेन्द्र बोस, हरिद्वार।

–:ज्ञानः–

ॐ आनन्दमय के श्री मंत्र जपने से रहेगा शुद्ध मन, बुद्धि नित बढ़ेगी, ध्यान में होगी लगन।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

''भगवत्-विधान''

मनुष्य को चाहिये कि वह जहाँ रहे, वहाँ अपनी ही सब बात मनाने की कोशिश न करे, प्रेम पूर्वक दूसरों की बात भी मान ले, क्योंकि हर मनुष्य को एक दूसरे से कुछ न कुछ स्वार्थ रहता ही है, जिद्द करके जो अपनी बात सबको मनवाता है, भौतिक दृष्टि से अपनी विजय करता है, परन्तु ॐ आनन्दमय भगवान के दरबार में तो वही विजयी होता है, जो बात मान लेता है। परन्तु हाँ, उनके प्रेम में आकर भगवत-विधान के प्रतिकूल कार्य न करें, अपनी ही बात मनाने का हठ करने से प्रेम टूट जाता है। हर एक भगवत् प्रेमी को इस बात का निश्चय करके, प्रण कर लेना चाहिये कि भगवत् का लाभ तो गुण गायन, गाने से ही होता है। इसलिये भगवत्-विधान विषय की लाभ की बातों को लापरवाही से न करें। अपने द्वारा किसी भी भगवत् की भगवत-विधान में श्रद्धा कराना उन्नति का मार्ग है, और अपने द्वारा किसी की भी भगवत-विधान के मार्ग से किसी प्रकार श्रद्धा से हटाना पतन का मार्ग है। इस विषय में कमजोरी की बात सुनना पाप है, कहना भी महापाप है। क्योंकि दूसरे प्रेमी नये पौधे के सदृश हैं उनको कमजोरी की बात कहना ऊपर से कोपल काट देना है, जो कमजोरी की बात कहता हो, उससे सम्बन्ध काट लेना चाहिये, अन्धश्रद्धा भी नहीं करनी चाहिए। वक्ता लोग मरे हुये की बात कहते हैं, परन्तु हम लोग मरे हुए का उदाहरण देते हैं। तो दादा गुरू भगवान का या गीता का। क्योंकि हमें जीवितों में ही सब प्रकार का ज्ञान मिल जाता है।

यह मार्ग टेढ़ा जरूर है, परन्तु रत्न निकालने के लिये मंथन अवश्य करना पड़ता है। भगवत् विधान से जिसकी बात मानने का आदेश हो, उनकी बात टेढ़ी हो, तो भी मान लें तो महान लाभ होता है।

ॐ शान्तिमय **-आनन्द ब्रह्म जी**, इलाहाबाद

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

आश्रम के प्रचारक श्री गुरुदेव के उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार के निमित्त पौड़ी गढ़वाल पधारे और वहाँ के बहुत से विद्यालयों में छात्र-छात्राओं के भाग्य को उदय करने वाले सात्त्विक गुण, ज्ञान, भाव, आचरणों की जानकारी दी। उनमें से एक विद्यालय गुरु राम राय पब्लिक स्कूल की प्रचार सेवा की चर्चा की जा रही है। श्री गुरु राम राय पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती उर्मिला श्रीवास्तव ने छात्र-छात्राओं को कक्षा में अनुशासित करते हुए उनसे श्री ग्रन्थ लेने के लिए अपनी विशेष प्रभावशाली ओजस्वी वाणी में कहा– ''विद्यालय में अनेकों धार्मिक संस्थाओं के प्रचारक-प्रसारक आप लोगों के बीच समय-समय पर आते ही रहते हैं परन्तु सबका एक मात्र उद्देश्य धन संग्रह करने का ही रहता है छात्र-छात्राओं को उनके द्वारा दी गयी सामग्री से कौन सा परम लाभ पहुँचेगा इससे उनका कोई भी अभिप्राय नहीं होता।

आज आप लोगों के बीच श्री विश्वशान्ति आश्रम इलाहाबाद के प्रचारक आ रहे हैं जिनका उद्देश्य धन संग्रह न करके देश के छात्र-छात्राओं को वास्तविक धर्ममय सद्गुण विद्या से परिचय कराकर आप लोगों को सद्गुण सदाचारी बनाने का है जिसके दिमागी स्वरूप सम्पूर्ण देश के कोने-कोने में परम् मधुर और दिमागी संकट हारी ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र की ध्वनि सदैव गूँजती रहे। इस दिव्य महामंत्र को आप लोगों से भी उच्चारण कराया जायेगा जिसे आप सबको प्रेम से बोलना है।

इस संस्था का धन संग्रह न करने का प्रमाण उनके पास जो पूजा सामग्री है उसकी सेवा से ही मिलता है। लागत मूल्य से भी कम सेवा में आपको पूजा सामग्री प्रेम प्रसन्नता से अर्पण कर रहे हैं।

अतः आप लोगों को अपने परम् हितार्थ और देश की सेवा करने के उद्देश्य से श्री ग्रंथों को अवश्य प्राप्त करें।

श्री प्रधानाचार्य द्वारा दी गयी प्रेरणा से प्रेरित होकर छात्र छात्राओं ने श्रद्धा प्रेम पूर्वक सेवा अर्पण करके बड़ी सं. में श्री ग्रन्थ स्वीकार किये।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री महापुरूष को अनन्त कोटि प्रणाम स्वीकार हो, शीश दिये जो गुरू मिले तौ भी सस्ता जान

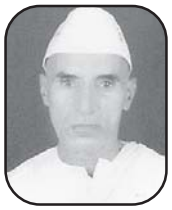

भगवन मेरे नाना जो श्री जयदयाल जी के शिष्य थे होश सम्भालते ही नाना जी के द्वारा श्री गीता जी के महान प्रचारक श्री जयदयाल जी की रसमयी वाणी पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। महापुरुषों की अमर वाणी पढ़ने से भगवान श्री कृष्ण जी एवं श्री गीता जी के प्रति मेरे हृदय में अटूट श्रद्धा हो गई। उस श्रद्धा ने मुझे जो बने हुए महात्मा दिखायी दिये उनसे मेरा प्रेम एवं समर्पण हो जाता था। मैंने कई धार्मिक संस्थाओं का अन्न ग्रहण किया जिनकों अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती प्राप्त है परन्तु ध्यान का विषय पूछने पर कहते थे जाओ मन्दिर में ध्यान करो कैसे करें, जैसे भी तुम कर सकते हो करो बस। हमारी बुद्धि काम नहीं करती थी। मैंने बचपन से ड्राइवरी का कार्य सीखा था और आज तक भी ड्राइवरी ही कर रहा हूँ। अन्तर इतना है कि पहले संसार के लोगों की ड्राइवरी करता था अब आनन्दमय प्रभु जी की ड्राइवरी करता हूँ।

एक बार की बात है मैं बिजनौर में कार चला रहा था वहाँ पर सेठ का शुगर प्लान्ट था। प्लान्ट के बाहर सड़क पर सेठ की दो दुकाने थी एक में पन्चर जोड़ने का कार्य होता था वही पर आनन्दमय भगवान की कृपा से पहिया पन्चर हो गया सेठ बोले भगतजी से पन्चर लगवा लाओ मैं पहिया लेकर पन्चर वाले भगत जी की दुकान पर आया। भगत जी बड़े प्रेमी थे उनके व्यवहार से मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई। दुकान के अन्दर मैने देखा एक स्टूल पर सजा हुआ श्री विश्व शान्ति ग्रन्थ रखा है श्री ग्रन्थ का दर्शन करने से मेरा बाह्य आकर्षण एकाग्र हो गया अवाक खड़ा कभी ॐ आनन्दमय भगवान के दर्शन करता हूँ तो कभी महावाक्यों को दोहराता हूँ तथा ये कैसे विलक्षण वाक्य है जो विश्व के भाग्य को उदय करने वाला योगसिद्ध ब्रह्मज्ञान, मैं अपनी सुध-बुध भूलकर खड़ा रहा। काफी देर बाद भगत जी बोले हे भगवन क्या देख रहे हो। तब मैने भगतजी से कहा भगत जी आपके पास तो पारसमणी है मुझे दे दो भगत जी बोले एक ही ग्रन्थ है आप पढ़ लो मुझे लौटा देना और अभी है नहीं ,हरिद्वार जाऊँगा तो ला दूंगा। मैं ज्यों ही श्री ग्रन्थ को पढ़ना शुरू किया तो हृदय में आनन्द का महा समुद्र लहराने लगा। निश्चय हो गया कि पृथ्वी वीरों से खाली नहीं है। शूरमा मौजूद हैं। किसी ने सत्य कहा है कि शीश दिये जो गुरू मिले तो भी सस्ता जान। दो दिन तक श्री ग्रन्थ को बारम्बार पढ़ता परन्तु पता नहीं पढ़ पाया। तीसरे दिन भगत जी के पास आया और मैने उनसे प्रार्थना की भगत जी मेरे पास जो कुछ है सब ले लो परन्तु जिस श्री मुख से यह अमृत बह रहा है मुझे वहां ले चलो। मुझे उस महानमुख का दर्शन किये बिना एक क्षण भी चैन नहीं आ रहा। आनन्दमय भगवान के भक्त अपना हृदय विछा देते हैं। अगर कोई को देखकर इधर आना चाहे तो भगत जी ने अपने दुकान बन्द कर चौथे दिन मेरे साथ हो गये। विजनौर से पहली बस प्रात:काल की रात्री में हरिद्वार के लिए जाती थी उसमें बैठ कर चल दिये। मार्च माह का श्री सन् १९८९ का शुभ समय था आनन्दमयी शान्तिमयी चेतन प्रतिमाओं के शुभ दर्शन कर मुझे ऐसा लगा जैसे यहीं हमारे परमहितैषी पारिवारिक जन हैं सर्व प्रथम परमपूजनीय कु. आनन्दस्वरूपा जी का शुभ दर्शन हुआ वहीं कोने में अपने आसन पर विराजती। आनन्दनिधि जी को देखा तत् पश्चात् बड़ी बहन जी रसोई में दिखाई पड़ी, बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। इतने ही में ऊपर से कुटिया से आनन्दमय प्रभु...! मैंने जैसे ही प्रणाम किया और पैर छूने के लिए बढ़ा तभी उन्होंने पैर छूने के लिए मना किया और मेरा कुशल क्षेम व परिचय पूछा। भारी प्रसन्नता हुई। मेरे कन्धों पर हाथ रखकर पुन: रसोई दिखाते हैं और सारी वाटिका का दर्शन कराते हुए परम आदरणीय परमवीर, परमपुरूषार्थी आनन्दमय प्रभु के परमविशेष प्रचारक डॉ. आनन्दमोहन जी का स्वयं परिचय कराते हैं हाथ की नब्ज पकड़कर इशारा करते हैं कि ये मनुष्यों के भी डाक्टर हैं और पेड़ पौधे एवं साग सब्जियों के भी डाक्टर हैं।

मेरे अन्दर प्रभु की कृपा से महान आनन्द ही आनन्द छा गया, जो हृदय ने अनुभव किया है इस लेखनी को इतनी सामर्थ कहाँ जो लिख सकें और आगे वाटिका दर्शन कराते हुए वाटिका में कार्य करती हुई मोहिनी मूर्ती के दर्शन हुए प्रभुजी ने शुभ कार्यों में दक्ष पू. श्री आनन्दकिरण का परिचय कराया। मुझे दुर्जन से सज्जन बनने का सनातन मार्ग मिल गया। अब इस सुरेश रूपी शरीर से भगवान अपना प्रचार वाहन चलवा रहे हैं। भवसागर में मेरी नैया पार लगायेंगे। ॐ शान्तिमय

–सेवक सुरेश आनन्दमय, बिजनौर

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सेवा में– समस्त गुरूजनों और आनन्दमय अनुरागियों के चरणों में प्रणाम।

जब तक मैंने इस सत्संग में आना शुरू नहीं किया था तब तक मन में कुछ बेचैनी सी थी। मन करता था कि कहीं अच्छी जगह जाना चाहिए। मन्दिरों में खाली भजन कीर्तन करने या सुनने की इच्छा नहीं करती थी परन्तु जबसे आनन्दमय अनुरागियों के साथ सम्बन्ध बना तबसे कहीं और जाने का मन नहीं करता। यहाँ आने के बाद मन में जो बेचैनी थी, मन में अधूरापन सा था और जो भटकन थी सब खत्म हो गये। मन में एक शान्ति सी छा गई। जीवन में कुछ पाने के लिये सात्विक पथ पर चलने की प्रेरणा मिली। मुझे तो यह सत्संग बहुत ही अच्छा, सच्चा, सात्विक प्रतीत होता है।

अपने ऊपर भगवान की असीम कृपा समझती हूँ कि मुझे इतना महान सात्विक सत्संग मिला है।

–एक साधिका, अनीता अग्रवाल

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन्! मेरे पति को एक दिन पता लगा कि आर्यसमाज में योगासन की कक्षा चल रही है। उन्होंने मुझे प्रेरित किया कि मैं वह कक्षा ज्वाइन करूँ! वहाँ श्री सुभाष सेठी जी योगासन करवाते थे व ज्ञान सूत्र भी बोलते थे। आसनों के बीच-बीच में वह मंत्रोच्चारण भी करते थे। जो मुझे बहुत प्रभावित करता था। वह अक्सर मुझे ध्यानयोग में आने के लिये भी प्रेरित करते थे, लेकिन मैं चूँकि गुरुद्वारे को मानती थी मुझे लगता था कि ये यहां जाना अपने पथ से भटकना होगा।

एक दिन उन्होंने कहा कि कभी भी भगवान से भौतिक पदार्थ मत मांगो! अगर मांगना ही है तो खुद भगवान से भगवान को माँगो। उनका ये वाक्य मेरे दिल में घर कर गया। मैं उसके बाद उनके वचनों को और भी ध्यान से सुनने लगी और धीरे-धीरे मेरा मन ध्यानयोग सीखने में लगने लगा। और मैंने ध्यानयोग की कक्षा में जाना शुरू कर दिया। इसके लिए भी मेरे पति का पूरा सहयोग मुझे मिला। आज मैं ध्यानयोग को पूरी तरह से जान चुकी हूँ और अपने जीवन में उतारने का प्रयास आज भी जारी है। इस ध्यानयोग के अभ्यास से मेरे मन को शान्ति प्राप्त हुआ है। आज मेरे पति मेरे साथ नहीं हैं, लेकिन उनकी प्रेरणा से जो मैंने राह चुनी वही राह आज मेरे जीवन को जीने का सहारा बनी हुई है। धीरे-धीरे मुझे समझ में आने लगा कि गीता का ज्ञान ही गुरू नानक देव जी ने हमें श्री गुरु ग्रंथ साहब के द्वारा दिया है। केवल भाषा और शैली का ही अन्तर है। ज्ञान कहीं से भी मिले इन्सान को उसे समझना और ग्रहण करना चाहिए और जहाँ तक हो सके अपने जीवन में धारण करने का प्रयास करते रहना चाहिए।

–उषा बाधवा

ॐ श्री महापुरूष देवाय नमः

भगवन् जी,

जब मैं आश्रम जाती हूँ तो मुझे वहाँ बहुत अच्छा लगता है। जब मैं हरिद्वार वाले आश्रम में जाती थी तो मुझे वहाँ भी बहुत अच्छा लगता था। जब मेरे पेपर होते हैं तो मैं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जाप करती हूँ और पेपर देती हूँ। पेपर सही हो जाता है। जब मुझे डर लगता है तो भी मैं यही मंत्र बोलती हूँ और तब डर नहीं लगता। मैं रोज ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय की माला जपती हूँ। जब मैं याद करने बैठती हूँ और मुझसे याद नहीं होता तो मैं आँखें बन्द करके ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का ध्यान करती हूँ। मुझे सारा याद हो जाता है। आश्रम के ग्रन्थों का स्वाध्याय करके मुझे सही-गलत की पहचान होती है। महाराज जी ने मुझे एक फल दिया था वह फल मुझे हमेशा याद रहता है।

–कु० अंजली शर्मा, हरिद्वार कक्षा-५

परम पिता परमेश्वर गुरूदेव के चरण कमलों में मेरा नतमस्तक प्रणाम।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सन् १९९८ में मेरा इस धरती पर जन्म हुआ था मैं बहुत भाग्यशाली थी कि मेरा जन्म एक अच्छे तथा भगवान को मानने वाले परिवार में हुआ है। धीरे-धीरे जब मैं बड़ी हुई और समझदार हुई तब मैंने देखा कि ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' ही गुरू है जिनको मेरे परिवार वाले मानते हैं और धीरे-धीरे मैंने भी इसको माना इसका हर पल स्मरण किया।

और बात तब की है जब मैं आठ वर्ष की हुई और कक्षा चार में पढ़ती थी। एक दिन घर में मैंने अपना कक्षा का गृहकार्य किया था। लेकिन करके बस्ता में रखना भूल गयी और जाकर अपने छोटे भाई के साथ खेलने लगी और दूसरे दिन जब कक्षा में मैडम ने सबसे गृहकार्य मांगा तब मैं सोचने लगी कि मैंने अपना गृहकार्य रखा कि नहीं मेरी गणित की अध्यापिका बहुत सख़्त थी। उनको सिर्फ बच्चों का काम चाहिए था। यह नहीं सुनना था कि कोई लाया कि नहीं वह मेरी जगह पर आयी उन्होंने मुझसे मेरा गृहकार्य माँगा मैंने उन्हें यह तो नहीं बताया कि मैं नहीं लायी हूँ क्योंकि अगर उन्हें बताती तो वह मुझे मारती। लेकिन उनको दिखाने के लिए मैं अपने बस्ते में देखने लगी वही गुरू जी की कृपा हुई कि मुझे मेरा गृहकार्य मिल गया और उसे निकाल कर मैंने अपनी अध्यापिका को दिया और उसी दिन से मेरा गुरू जी के ऊपर एक अटूट विश्वास बन गया और वह विश्वास ऐसा बना कि कभी टूटा नहीं। यही था मेरा अनुभव।

–दिव्यांशी, कक्षा-६, कानपुर।

जल बिना जीवन नहीं और ध्यान अमृत के बिना मानवता नहीं।

ॐ श्री विधानाचार्य देव शरणम्

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय प्रभो के सत्संग के प्रभाव का अनुभव करने वाली मैं एक भाग्यशाली छात्रा हूँ। पहले मेरे अन्दर धैर्य और सहनशीलता नहीं थी और मुझे गुस्सा भी बहुत आता था। फिर मेरी दादी ने मुझे श्री सच्ची प्रेम भक्ति दी और कहा इस ग्रन्थ को रोज स्कूल जाने से पहले और शाम को भी पढ़ा करो और तुम्हें जब भी गुस्सा आए तो योगसिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप करने लगा करो इसी से तुम्हारा गुस्सा शान्त होगा। मैंने सुबह और शाम पूजा करी फिर मुझे जब भी गुस्सा आया तो मैंने ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप किया। मैं यहीं करती गई और धीरे-धीरे मेरा गुस्सा शान्त होने लगा। यह मुझे बहुत अच्छा लगा। दिमागी रोगों के विशेषज्ञ कर्मयोगाचार्य, ध्यानयोगाचार्य ॐ श्री आनन्दमय भगवान ने मेरी आँखें खोल दी, मुझे मेरी जीवन की एक नई दिशा मिल गई। मुझे बहुत खुशी हुई की प्रभु पिता जी ने मुझ पर अपनी कृपा जताई और मेरे गुस्से को शान्त किया।

इसी तरह मेरा दूसरा अनुभव यह भी है कि कभी-कभी जब मैं परीक्षा दे रही होती थी और उससे मुझे कोई प्रश्न नहीं आता था पर मैंने उसे याद किया था लेकिन फिर भी वह प्रश्न मुझे ध्यान नहीं आ रहा था, तो मैंने अपनी आँखे बन्द करी और ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जाप करते हुए प्रभु जी को याद किया फिर मैं दूसरा प्रश्न लिखने लगी अचानक से मुझे पहला वाला प्रश्न याद आ गया और मैंने उस प्रश्न को तुरंत लिखा और प्रभो जी को बारम्बार प्रणाम किया।

मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि बचपन से मुझे भगवत् चर्चा के बारे में बताया गया और प्रभुजी की शरण में आने का मौका मिला। भगवान ने मुझको एक सद्गुण सदाचारी बनने की विधि बताई बस उनकी कृपा मेरे लिए बहुत है। मैं यही चाहती हूँ कि प्रभु जी मेरी बुद्धि को सात्विक रखें और मेरे हृदय को शुद्ध, मेरी यही इच्छा है।

आपकी प्रिय पुत्री- **प्रिया, कक्षा-७, कानपुर।**

दिमागी रोग दमनकारी दिव्य ज्ञान

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ब्रह्मलीन पूज्य बहन जी द्वारा लिखित ज्ञान की कापी

प्रतिदिन ध्यान लगने से अन्त:करण शुद्ध होगा और आपके हृदय में स्वयं ही समाधान होते रहना सम्भव है। अन्यथा एक दूसरे को हिंसक-स्वार्थी-मूर्ख कथन करते रहने का यह राजसी-तामसी और सात्विक ज्ञान का वाद-विवाद अनादि है जिसको देवासुर संग्राम कहते हैं। इस महामारी की चिकित्सा श्री सज्जनों की सेवा से होने का विधान है। अभिमान की चिकित्सा श्री सज्जनों की सेवा से होने का विधान है। अभिमान की चिकित्सा पुजारी भाव से सब रूपों में ॐ आनन्दमय भगवान के दर्शनों के अभ्यास से होती है। कटु भाषण की आदतसत्यप्रिय हितकारक वचन उच्चारण करने से होता है। क्रोध रूपी महामारी की शान्ति सहनशीलता के अभ्यास से होती है। हृदय की अशान्ति और पागलपन की शान्ति ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय श्री भगवान के नाम का मनन व स्वरूप का स्मरण करते रहने से होती है, इत्यादि अनेक रोगों के लिये भिन्न-भिन्न औषधियों और पथ्य-परहेज की आवश्यकता होती है।

परमपद दायक योग शास्त्रकार ने हमें विश्व के मानव समुदाय को चार श्रेणियों में विभक्त करने का आदेश दिया है। मैत्री, करूणा, मुदित, उपेक्षा अर्थात् श्री आनन्द दाताओं से मित्रता, आनन्द मार्गी प्रेमियों के साथ प्रेम, राजसी समुदाय पर दया और तामसी मनुष्यों से उपेक्षा। यह सिद्धान्त शास्त्र प्रमाण तो है ही परन्तु युक्ति से भी हितकर सिद्ध होता है। वर्तमान में श्री ध्यानमग्न प्रेमियों के आदर्शों से भी सत्य हो रहा है और अनुभव से भी यह सिद्धान्त सात्त्विक है। हमारे श्री आनन्द शक्ति दायक महापुरुष भगवान ने भी यही किया। कठपुतलीवत ॐ श्री गुरु भगवान के शरणागत हुये अर्थात् आत्म-समर्पण रूप मित्रता की, श्री सतसंगियों से प्रेम किया, राजसी मनुष्यों को श्रद्धालु बनाने में प्रयत्नशील रहे। यह वास्तविक दया का प्रयोग है और तामसी समुदाय से उपराम हुये, केवल वैराग्य ही किया सो बात नहीं। श्री आपके जीवन में ठगधनियों के साथ बीसों वर्ष बहुत संग्राम भी हुआ।

हमारे पूज्य ग्रन्थ गीता तथा रामायण तो तामसी समुदाय का विनाश करने की स्पष्ट घोषणा कर रहे हैं। परन्तु हम लोग सैनिक अधिकारी नहीं है। वर्तमान में यह कार्य श्री सरकारी कार्यकर्ता सैनिकों का है। हमारे लिये आदेश नहीं है। हाँ ! श्री भगवत् प्रतिकूल मनुष्यों की सेवा, रक्षा, वृद्धि से उपराम होने के लिये सदा-सर्वदा आदेश है। समय परिस्थिति के अनुसार आसुरी व्यक्तियों का डाक्टर बुद्धि से निन्दा-अपमान, तिरस्कार करने का भी विधान बनाया हुआ है। परन्तु तामसी जनों के नानात्व करते हुये भी भगवत् भावों का त्याग कदापि नहीं करना है अन्यथा सर्वनाश के हेतु वैर, द्वेष, क्रोधादि की बीमारी जाग्रत होनी सम्भव है।

हमारा जितना-जितना राजसी-तामसी समुदाय से प्रेम व द्वेष है और उनसे प्राप्त गुण ज्ञान में स्वार्थ है उतनी मात्रा में हम परम आनन्द व परम शान्ति से वंचित भी हैं। श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु परम दयालु व परम प्रेमी होने पर भी न्यायकारी हैं।

ॐ शान्तिमय !

ॐ श्री महापुरूष भगवान शरणं
ॐ आनन्दमय! ॐ शान्तिमय!

श्री भगवत् स्वरूपों के चरणों में नतमस्तक। श्री राधा मोहन जी के आदेशनुसार मैं अपने अनुभव को आप लोगों के समक्ष रख रहा हूँ। मुझे गत ४ वर्ष हो रहा है कि मैं श्री विश्वशान्ति आश्रम का अनुयायी बना। यों मैं पहले और भी संस्था में जाया करता था मगर जो श्री विश्वशान्ति आश्रम द्वारा शान्ति की उपलब्धि हुयी वह और संस्थाओं में नही हुयी। ऐसे तो हजारों संस्थायें भारत में विद्यमान हैं परन्तु जिस प्रकार से अनेकों पहाड़ों में से किसी एक पहाड़ से मणियों की खान की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार सब संस्थाओं से भिन्न श्री विश्वशान्ति आश्रम ही केवल सात्त्विक गुणों की खान है और आत्मिक बल दायक अमृत देने वाला है। गुणधन ही स्थायी आनन्द-शक्ति दायक है और गुण धन ही शक्ति-मुक्ति दायक है। क्या बतलायें मैं तो एक बड़े परिवार का मास्टर हूँ जिसमें ५लड़के ३लड़कियाँ हैं। आप लोग समझेंगे कि मैं बड़ा भाग्यवान हूँ। मगर मैं अब समझने लगा हूँ कि यह मेरे ऊपर श्री आनन्दमय भगवान का दण्ड लागू है, क्योंकि यह आध्यात्मिक जीवन बिताने में समय-समय पर ठेस पहुँचाने वाला है, साफ रास्ते का रोड़ा है, बीहड़ जंगल के काँटे रूपी अंग छेदने वाला दु:ख रूपी दावानल की लपक है और यह शरीर व मन को, प्राण को झुलसाने वाला है। आप आश्चर्य मानेंगे कि ज्यों ही आप श्री विश्वशान्ति शास्त्र और श्री मानव भाग्य विधाता ग्रन्थ को अध्ययन करके गुणधन को धारण करना शुरु करेंगे तो तत्काल ही आप लोगों को प्रतीत होने लगेगा कि श्री आनन्दमय भगवान जी की दिव्य वाणी धारण करने से मुझमें सच्ची सत्ता का भान होने लगा है। आप कहेंगे कि मुझे अब सच्चा रास्ता मिल गया, सुन्दर मार्ग दिख गया, प्रश्न हल हो गया, जलन शान्त हो गयी, चिन्ता मिट गयी साथ ही श्री आनन्दमय प्रभु का वरद हस्त निरन्तर मेरे सिर पर हो गया, सर्वत्र आनन्द का स्रोत बहने लगा। सन्तानें अब मुझे भगवत् दृष्टि में दीखने लगी, मेरी चार दिवारी प्रेममय शान्तिमय हो गयी।

योग अग्नि करि प्रकट, नव कर्म शुभाशुभ लाय।
बुद्धि सिरावै ज्ञान घृत, ममता मल जरि जाय।।

इसके अलावा श्री विश्वशान्ति आश्रम में एक बड़ी भारी विशेषता यह पाइयेगा कि यहाँ पर 'कम्पनी बाग में प्रात: ६ से ८ बजे तक' दैनिक ध्यान की विधि सीखने पर एक चमत्कार ज्ञान प्राप्त होगा जो कहीं नहीं है। ध्यान और निष्काम सेवा ही दो मुख्य मानव सफलता की कुंजी है। ध्यान से अनेकों अनुभव हुआ ही करते हैं। कर्तव्य अकर्तव्य का ज्ञान मिलता रहता है। सब द्वन्दों में निर्द्वन्द रहने की शक्ति मिलती है। दिन भर मन प्रसन्न रहता है और आत्मबोध होने लगता है। यह केवल मेरा अनुभव ही नहीं बल्कि हर एक प्रेमियों का अनुभव है। दिव्य महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के जाप से और नित्य निरन्तर ॐ आनन्दमय भगवान के स्मरण से अपने में आनन्द का संचार होता रहता है, अति अमृत दायक प्रकाश मिलता रहता है। काम-क्रोध पर विजय कराता है। अति सूक्ष्म मानसिक कीटाणु सब नष्ट हो जाया करते हैं। मानसिक रोगों की अचूक औषधि है श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ। सभी से विनम्र प्रार्थना है कि महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप करके देखें, आपको मेरी तरह शान्ति की अवश्य प्राप्ति होगी। जीवन सुखमय हो जायेगा। अनुभव करके देखें, लाभ उठावें, परम लाभ से वंचित न हों।

ॐ शान्तिमय

–आपका सेवक, एक साधक

दोषदर्शी मनुष्य क्रोधित होते हैं। भोगदर्शी मनुष्य चिन्तित रहते हैं। भगवतदर्शी मानव प्रसन्न रहते हैं।

ॐ श्री गुरू भगवान शरणम्
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सर्व सुख दायक व दुःख नाशक भगवान के श्री चरणार्विन्दो में सत्य भाव से कोटिशः प्रणाम!

अपने लिए तो फूलों का मार्ग श्री भगवान ने बना दिया है। अतः अन्य किसी कन्टकाकीर्ण मार्ग की ओर जाने की तनिक भी अभिलाषा नहीं। श्री भगवान जी के उपकारों को भूला नहीं जा सकता। मेरे जीवन में ऐसे आनन्द रस का संचार किया है जो वाणी व लेखनी के बाहर की वस्तु है स्मरण कर हृदय श्रद्धा के भावों से गदगद् हो जाता है। वास्तव में जो व्यक्ति जिस क्षण जितनी-जितनी मात्रा में ''श्री कृपानिधान'' के आदेशों के अनुकूल चलता है तद्नुसार उतनी ही उतनी मात्रा में शक्ति का अनुभव करता चलता है। भक्तों के पालक! भयनाशक! शक्ति दायक कृपालु भगवान! की कृपा सदा बनी रहेगी तो श्री दिव्य कोष से यह अद्भुत शक्ति प्राप्त होती रहेगी।

–भगवान के उपकारों की स्मृति में
दासी आनन्दलता, इलाहाबाद

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं अक्षर ज्ञान से रहित, स्वभाव से मूढ़ तथा माया जाल में फँसी हुई क्या जानती थी कि भगवान का ध्यान किस प्रकार किया जाता है। मैं इस योग्य भी नहीं कि श्री महापुरूष भगवान जी की महिमा का वर्णन कर सकूँ।

मेरा वह स्वर्ण दिन था जिस दिन, दो श्री आश्रम प्रेमियों के दर्शन हुये। ऐसा मालूम दिया कि आज राम लक्ष्मण की जोड़ी का दर्शन किया है। उनके मीठे वचनों से ध्यान पूजा आदि की सरल विधि समझ कर मेरे हृदय में आनन्द का सागर उमड़ आया। उनका बोया हुआ बीज संसार के विघ्न बाधाओं के तूफानों में भी हरा-भरा और नित्य प्रति फलता-फूलता जा रहा है।

कुछ दिनों बाद ही मुझे पता चला कि श्री महापुरुष भगवान जी भी पधारे हैं। अतः मैं बड़ी श्रद्धा, प्रेम व उत्सुकता से श्री आपके दर्शनार्थ सत्संग में गई और श्री आपके दर्शनों से कृत्य-कृत्य हो गयी। श्री देवाङ्गना ध्यानमय मातेश्वरी जी की बारह घन्टे ध्यान की स्थिति देखकर निश्चय किया कि मैं भी ऐसी ही बनने की कोशिश करूँगी।

घर लौटी तो सोचा कहीं मेरे साथी (पति) भगवान का विरोध न करें परन्तु जब मैंने उनसे कहा तो वे भी राजी हो गये कि मैं जैसा उचित समझूँ वैसा कर सकती हूँ। तब से निरन्तर अभ्यास करते रहने से अब मेरा ध्यान ढाई घण्टे लग जाता है। और आलौकिक आनन्द का अनुभव करती हूँ।

एक शनिवार के दिन मैंने रविवार के विशेष सत्संग में शामिल होने का विचार किया। प्रातःकाल उठी तो देखा मेरा बच्चा १०४ डिग्री बुखार में पड़ा है। तुरन्त विचार हुआ कि चिन्ता करना व्यर्थ है। श्री भगवान जी जो करेंगे सो अच्छा करेंगे। साथ ही भगवान से प्रार्थना करके चली गयी। लौटने की इच्छा न होने पर भी बालक की सेवा का विचार करके वहाँ से लौटी। गाड़ी में बैठते ही श्री भगवान की मधुर स्मृति से प्रेमाश्रु छलक आये। घर पहुँची तो देखा कि बच्चे का बुखार उतर गया है। इससे श्री भगवान जी में मेरी श्रद्धा व प्रेम और बढ़ गया, क्योंकि यह श्री आपकी कृपा का चमत्कार ही तो था।

अपनी प्यारी से प्यारी चीजों को छोड़कर पाकिस्तान से आने का दुःख तो हट ही गया है, वरन् यह प्रतीत होता है कि बहुत अच्छा हुआ नहीं तो श्री भगवान जी कैसे मिलते। क्रोध के आते ही मैं महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप जोरों से करने लगती हूँ जिससे वह तुरन्त शान्त हो जाता है।

श्री भगवान जी की महान शक्ति हैं। क्योंकि श्री आपकी शरण से मेरा जीवन पलट गया है। अब मैं पूर्णतया श्री आपके शरण में आने कि चेष्टा करती हूँ। मुझे आशा है कि श्री आप सदा-सर्वदा मेरा कल्याण करते रहेगें।

ॐ शान्तिमय

–श्रद्धावान साधिका

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री गुरूदेव शरणम्

दिनांक २१-०९-०७ से २५-०९-०७ तक श्री विश्व शान्ति आश्रम इलाहाबाद में आयोजित सत्संग बड़ा ही प्रेरणा दायक, प्रभुपिता जी के विधान में श्रद्धा व प्रेमवर्धक एवं आनन्द शान्ति देने वाला महसूस हुआ जिसके प्रभाव का वर्णन शब्दों में करना हमारी सामर्थ्य से बाहर है। वास्तव में यह अनुभव का ही विषय है।

आयोजन व व्यवस्था भी श्री आश्रम के दिव्य दर्शन के साथ-साथ अति भव्य थी। सत्संग से अलग समय में पुराने व श्रेष्ठ साधकों से सत्संग के, प्रभु पिता जी के, व ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय अनुरागियों, के मार्मिक व हृदय स्पर्शी अनुभव सुनने का भी सुन्दर सुअवसर प्राप्त हुआ जिससे अपने अनुभवों को और भी बल मिला। देखते ही देखते सत्संग समाप्ति का दिन आ गया ऐसा लगा कि समय बहुत जल्दी बीत गया। स्पष्ट हो गया कि वास्तव में सुख के दिन एक दम बीत जाते हैं और दुख के दिन कटने में बहुत देर महसूस होती है। जबकि समय समान गति से आगे निकल रहा है।

सत्संग में अपने साधन का भी आकलन हुआ पता लगा कि हमारे साधन में ही कमी है जिस कारण पूर्ण लाभ नहीं मिल पाता है। सत्संग के अन्तिम दिन श्रद्धांजलि पत्र जिनका उच्चारण किया गया वे भी पूर्ण सत्संग में उच्चरित ज्ञान के साथ-साथ बड़े ही प्रभावशाली प्रेरणादायक व अनुभव युक्त थे।

अनुभव हो रहा है कि ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय प्रभुपिताजी भगवान व्यवहार काल में भी पगपग पर हर क्षण अपनी असीम व अनन्त दया व कृपा का बोध कराते रहते हैं और अपना वरद हस्त हमारे ऊपर बनाये हुये हैं तथा साधन की संभाल भी प्रभु पिताजी करते रहते हैं।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी ॐ आनन्दमय भगवान ऐसे अमृतरूपी सत्संग अपनी दया, कृपा व प्रेम का सौपान कराते रहेंगे, ताकि हमारा जीवन भी सफल व सार्थक हो सकें। अन्त में आप सभी के चरणों में नतमस्तक होते हुये करबद्ध ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

- नरेश वर्मा व नीलू वर्मा, बिजनौर।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री गुरु भगवान ॐ श्री महापुरुष देव के पावन चरणों में इस तुच्छ दासानुदास राधामोहन का नतमस्तक प्रणाम। तथा साष्टांग दण्डवत व सादर ॐ आनन्दमय व शान्तिमय।

मुझ जैसे अज्ञान व मोह में फँसा जीव आपकी स्तुति किस प्रकार से करें। केवल इतना ही पर्याप्त होगा कि आप अन्तर्यामी हैं घट-घट के वासी हैं और आप के हृदय कमल से निकले मंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय ने मेरे जीवन की काया पलट कर दी है। इसकी व्याख्या जितनी भी की जावे वह थोड़ी ही रह जायेगी। जिनके वचन में इतनी शक्ति है तो वह सत्य भगवान नहीं तो क्या है। मुझे तो भगवान मिले हुए हैं और मैं उनकी उपासना करके अपने भाग्य की सराहना करता रहता हूँ कि श्री भगवान किसी समय मुझे अकेला नहीं छोड़ते। आप हर समय मेरी पीठ पर हाथ रखे हैं। आप ज्ञान के भण्डार हैं आप ज्ञान की मूर्ति हैं। इस समय आप मौन हैं फिर भी इस अवस्था में आपके ज्ञान का प्रकाश हो रहा है और वह दिन दूर नहीं है जब कि संसार के सबसे शक्तिशाली मनुष्य आपके ज्ञान को अपनाकर गुरू ही नहीं वरन सर्वस्व मानेगें। मानव भाग्य विधाता ग्रन्थ कहूँ या महाकाव्य कहूँ जो कुछ भी नाम दिया जाय पर वह तो अद्भुत ग्रन्थ है। मुझे तो ज्ञान का भण्डार मिला है उसको तो हाथ से छोड़ने को मन ही नहीं करता, जी चाहता है कि इसे किस प्रकार हृदय में बिठा लूँ। एक-एक सूत्र क्या हैं, माया के जाल को काटने के लिए शस्त्र हैं। हृदय को विदीर्ण करके सीधे मस्तिष्क पर पहुँचते हैं। अब प्रार्थना हाथ जोड़कर यही है कि ''अपनाकर के निज चरणों में, मोहे अपना दास बना लेना।''

—श्री राधा मोहन जी आनन्दमय

ॐ आनन्दमय ॐ शांतिमय

ॐ श्री महापुरुष भगवान हृदय में सदैव विराजमान हैं। वे हर पल, हर क्षण अपनी कृपा का प्रसाद देते रहते हैं। प्रतिकूल परिस्थिति में भी उनके प्रसाद का आभास बना रहने से आनन्द ही आनन्द आता है। हृदय में चिन्ता क्रोध नाराजगी के भाव को दूर करने के लिए दिव्य महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शांतिमय रामबाण है। यदि दिव्य महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के साथ, स्वरूप का भी ध्यान हो जाए तो हृदय में आनन्द की लहर दौड़ जाती है।

ॐ आनन्दमय भगवान आनन्द-शान्ति और शक्ति के अथाह स्रोत हैं असीम कृपा के भंडार हैं और हर समय पथ-प्रदर्शन करते रहते हैं। यदि कोई भूल हो जाती है और प्रभु पिता के विधान के विरूद्ध कार्य हो जाता है तो पिता जैसे पुत्र के अपराध क्षमा कर देता है, ठीक उसी प्रकार क्षमा प्रदान कर देते हैं। उनकी महिमा अपार है, अवर्णनीय हैं। हम चाहें उनके आदेशों की अवहेलना करें पर वे कृपा दृष्टि बनाये रखते हैं और पग-पग पर रक्षा करते हैं मुझे तो कई बार ऐसा लगता है कि वे मुझसे दूर है ही नहीं मेरे साथ-साथ हर समय मेरे उद्धार तथा रक्षा हेतु संग रहते हैं। ऐसे ॐ आनन्दमय भगवान को शत् - शत् प्रणाम।

-ॐ आनन्दमय
रोशन लाल आनन्दमय
भूतपूर्व मुख्य अभियंता-दिल्ली

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अनन्त, अपार कृपा बरसाने वाले
ॐ आनन्दमय
भगवान शरणं

भगवन्, बहुत से ऐसे अनुभव होते हैं जिससे हम भगवान के कृतज्ञ होते हैं कि हम पर कृपा करके उन्होंने हमें अपना उद्धार करने के लिए उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त करने का अवसर दिया। अब ये हमारे साधन की कमी है कि उस ज्ञान को हम लोग दृढ़ता पूर्वक धारण नहीं कर पाते हैं। हम बहुत निरभागी हैं जो अपना साधन दृढ़ नहीं कर पाते हैं तथा संसार के माया-मोह के जाल में ही फँसे रहते हैं।

ॐ आनन्दमय परम पिताजी तो हमेशा हमारी सहायता के लिए तैयार खड़े हैं। हम एक कदम उनकी तरफ बढ़ाते हैं तो वो चार कदम हमारी ओर चलकर आते हैं।

श्री विश्वशान्ति आश्रम का ज्ञान श्री गीताजी पर ही आधारित है मैं नियम से सभी आश्रम के ग्रन्थों के साथ गीता के श्लोकों का भी अध्ययन करती हूँ। एक दिन कुछ ऐसे श्लोक सामने आये मानो सारी सच्चाई सामने आ गई, ये जीवन क्या है। इस जीवन का उद्देश्य क्या है। इस जीवन के रिश्ते-नाते, सुख-दु:ख क्या है। मैं पढ़ते-पढ़ते भाव विभोर हो गई, मेरी आँखों से अश्रु-धारा बहने लगी। मुझे अखण्ड-आनन्द की अनुभूति हुई। अगले दिन मैं आश्रम गई, जाते ही आनन्दस्वरूपा बहन जी बोली, नीलम! तुम गीता-अध्ययन करती हो। अगर तुम विश्वशान्ति ग्रन्थ के अनुसार (जिसमें गीता के मुख्य श्लोकों को बताया गया है) अध्ययन करोगी तो और अधिक आनन्द प्राप्त करोगी।

मैं उनको देखती ही रह गयी, उनको कैसे पता चला कि कल मैंने गीता रूपी गंगा में गोते लगाने का आनन्द प्राप्त किया। फिर भाव आया कि अरे, भक्त और भगवान में तो कोई रहस्य ही नहीं है। भगवान को सब मालूम है कि उनका कौन अनुयायी कितना साधन कर रहा है वो तो अपने भक्त को आगे का मार्ग दिखाने के लिए तत्पर खड़े हैं। अगर हम कहते हैं कि हमें आनन्द की प्राप्ति नहीं हुई, हमें परमपिता जी के दर्शन नहीं हुए। तो यह हमारे साधन की कमी है। ॐ आनन्दमय भगवान से सिर्फ यही प्रार्थना है कि हमारे साधन में दृढ़ता दें।

—नीलम , हरिद्वार।

रोगी दिमाग और दुर्बल शरीर अपना शत्रु है। स्वस्थ दिमाग और निरोगी शरीर अपना मित्र है।

ॐ श्री समाधिमग्न ब्रह्मपदाधीश देव शरणम्

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सब धरती कागद करूँ, लेखनी सब बन राय,
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरुगुण लिखा न जाए।

बचपन से लेकर आज तक गुरुदेव जी की कृपा का जो अनुभव मुझे हुआ है, उसे शब्दों में बाँध पाना बहुत कठिन है, मेरी हालत ठीक उस मुक व्यक्ति की तरह है, जिसे कोई फल स्वादिष्ट लगने पर भी वो दूसरों के सामने उसके स्वाद का बखान नहीं कर सकता बस अन्दर ही अन्दर वो उसके स्वाद को अनुभव करके आनन्दित होता रहता है। मैं करीब दो साल की ही रही हूँगी जब मुझे महापुरुष देव का संग प्राप्त हुआ, तब से आज तक हर दिन एक नया अनुभव होता है गुरुदेव की कृपा का। बचपन के वो दिन अभी भी मुझे अच्छी तरह याद है, वो मौन इशारे से मुझसे बातें करना, उनकी उँगली पकड़कर उनके साथ चलना, वो छोटी सी खुरपी और बाल्टी लेकर मुझसे घास छिलवाना, अपनी सुमरणि देकर मुझसे मंत्र जाप करने को कहना, ऐसी ही ढेर सारी कितनी बातें और कितनी यादों का चित्र आज भी मेरे दिमाग में बिल्कुल स्पष्ट है।

गुरू जी से अलग मैं इस जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकती, जीवन के हर कदम पर मुझे इस बात का अनुभव हुआ कि अगर गुरू का साथ न होता तो मैं ये कदम कभी उठा ही नहीं पाती। गुरूजी ने हर कदम पर कभी संरक्षक और कभी मार्गदर्शक बन कर मेरा साथ दिया है। कभी-कभी तो जीवन में इतने नाजुक मोड़ आए हैं कि मैं पूरी तरह से टूट गई, यहाँ तक कि जीवन समाप्त करने की बात भी मन में आती है, लेकिन ऐसी विषम परिस्थितियों में मुझे सहारा देते हैं, मेरी साज-सम्भाल करते हैं।

अब तक के छोटे से जीवन में इतनी घटनाएँ घटी हैं, और हर घटना के साथ इतने अनुभव हुए हैं कि अगर हर घटना को विस्तारपूर्वक लिखूँ तो एक मोटी किताब बन जायेगी, फिर कुछ सामाजिक प्रतिबद्धता और रिश्तों की मर्यादा के कारण हर घटना का वर्णन भी नहीं किया जा सकता, लेकिन एक दिन जरूर मैं अपनी और गुरुजी की बातों से पूरी एक किताब लिखूँगी और इसमें भी गुरुजी ही मेरी सहायता करेंगे।

यहाँ पर मैं अपने जीवन की एक छोटी सी किन्तु महत्वपूर्ण घटना का जिक्र करना चाहूँगी, जिससे मेरा ये विस्वास और भी पक्का हो गया कि हर पल, हर कदम पर मेरे साथ हैं, मुझे सहारा देते हैं, मेरे सम्बल बने हुए हैं।

बात आज से सात साल पहले की है जब मैं एमएससी में प्रवेश लेने जा रही थी। कालेज में प्रवेश तिथि पता करने के उद्देश्य से लगभग १२ बजे पहुँची, लेकिन वहाँ पहुँचने के बाद तो मेरे होश ही पाख्ता हो गये, क्योंकि मेरे प्रवेश और फीस जमा करने की आखिरी तिथि उसी दिन थी। स्कूल के प्रमाणपत्र तो थे हमारे पास लेकिन दस हजार की फीस मेरे पास नहीं थी। घर भी करीब ५-६ किलोमीटर दूर था। समय भी करीब १२.३० हो गया था। मैं भागमभाग १ बजे घर पहुँची तो पता चला कि घर में पैसा नहीं है। मैं जोर-जोर से रोने लगी और महामंत्र का जाप करती रही। मम्मी भी परेशान होकर झट से पड़ोसियों के यहाँ पैसा माँगने चली गयी। गुरुजी की कृपा थी कि पड़ोस में कई लोगों को मिलाकर दस हजार रुपये ले आई लेकिन अब बात पहुँचने की थी लगभग बीस मिनट ही शेष थे बैंक बंद होने में। चूंकि एडमिशन की फीस बैंक में जमा होती थी, इसलिए यदि बैंक में पैसा जमा न होता तो हमारा एडमिशन भी न होता। मैं घर से जैसे ही मंत्र का जाप करते निकली तभी पड़ोस का लड़का बोला कि, ''दीदी मेरे बुआ का लड़का आज अपना स्कूटर यहीं छोड़ गया है, मैं आपको १५ मिनट में कॉलेज पहुँचा दूँगा। मैं उसके साथ बैंक पहुँची, वहाँ पर फीस जमा करने वाले काउन्टर पर बैठा व्यक्ति उठने ही वाला था, उसने कहा कि सोमवार को आना बैंक बन्द हो चुका है, मैंने उससे निवेदन किया कि फीस जमा कर लीजिए, वरना मेरा प्रवेश नहीं हो पायेगा, मेरी हालत देखकर वो समझ गया कि मामला गम्भीर है

और उसने फीस जमा कर ली। इस तरह मुझे एमएससी में एडमीशन मिल सका। आज मैं एम० फिल० करके इसी कॉलेज में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हूँ। हर परीक्षा मैंने सिर्फ गुरुजी की सहायता से उत्तीर्ण की। कहते हैं कलयुग में चमत्कार नहीं होते, ये चमत्कार नहीं तो क्या है जब घर में १० रुपये भी ना हों और १०००० का इन्तजाम हो जाए, जब लगे कि बस विद्यार्थी जीवन अब समाप्त है, अब आगे नहीं पढ़ पायेंगे तब कैसे सब कुछ ठीक हो जाता है, इतना प्रेम, इतनी दया, इतना उपकार क्या कोई सांसारिक प्राणी कर सकता है? नहीं, कभी नहीं। बस यही बार-बार मन कहता है:–

मन की अहंता छोड़कर, कर जोर मैं विनती करूँ,
उपकार हैं जो आपके किस भाँति मैं गिनती करुँ।

गुरुजी से अन्तिम मुलाकात का दृश्य मैं याद करती हूँ तो आँखों से आँसू रूक नहीं पाते। उस समय भी नहीं रूके थे जब उन्होंने मेरे सिर पर हाथ रखा था, ये इनका अन्तिम स्पर्श था, तब मैं ये कहाँ जानती थी, आज भी मन कहता है , बार-बार रोता है गुरुजी इतनी जल्दी आप हमें छोड़कर क्यूं चले गये। हमेशा गुरुजी से प्रार्थना करती हूँ कि गुरुदेव बचपन की तरह ही हमेशा मेरा हाथ पकड़कर मेरा मार्गदर्शन करना और हमेशा मेरे मन और बुद्धि को अपने ज्ञान में लगाए रखना, मुझे इस संसार में भटकने के लिए कभी अकेला मत छोड़ना।

ॐ शान्तिमय

कु. सीमा आनन्दमय, सहारनपुर

ॐ आनन्दमय ॐशान्तिमय

मेरे प्रभुवर मुझे वर दो ये जग परिवार हो जाए।
रहें आपस में मिलजुलकर सुखी संसार हो जाए।

हमें किस बात की चिन्ता ज़माने में ज़माने से,
तेरा विश्वास जीवन का अगर आधार हो जाए।

मैं अपने आपको इंसान समझूँगा नहीं तब तक,
तुम्हें जब तक न मेरा आचरण स्वीकार हो जाए।

करेगा वह सदा आनन्द ही आनन्द का अनुभव,
इशारे पर तेरे चलने को जो तैयार हो जाए।

उसी की जीत होती है सुनिश्चित मानता हूँ मैं,
कि जिसकी ओर से ख़ुद सारथी दातार हो जाए।

समझ में यह नहीं आता कि माँगे भी तो क्या माँगे,
करो इतनी कृपा नाचीज़ भी भवपार हो जाए।

ग़ज़ल- रमेश नाचीज़, इलाहाबाद।

अधिक परिश्रम से स्वास्थ्य नहीं बिगड़ता, स्वास्थ्य को नुकसान पहुचता है- मानसिक रोगों से, जैसे घबड़ाहट, शोक, भय, चिन्ता, नाराजगी, ईर्ष्या-द्वेष, जलन और असन्तोष से।

जब तक मनुष्य पहले गाँव को नहीं छोड़ता, तब तक दूसरे गाँव को नहीं पहुँच सकता, इसी प्रकार जब-तक संसार का सम्बन्ध नहीं छोड़ा जाता, तब तक प्रभु के धाम में नहीं पहुँचा जा सकता।

ज्ञान और वैराग्य (प्रथम खण्ड)

ॐ श्री विधानाचार्य देव शरणम्

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

''चेतावनी''

१- ज्ञान के लिए आवश्यक है कि प्राणी संसार के समस्त भोगों से वैराग्य करे। इस देह में हड्डी, मज्जा, माँस व रक्त आदि अपवित्र वस्तुओं को छोड़कर और तो कुछ नहीं, ऐसी देह में आसक्त होकर प्राणी नाना प्रकार का अनर्थ करता है। फल यह होता है कि वह बड़े कष्ट पाता है और बड़े कष्ट से उसकी मृत्यु होती है। मृत्यु के पश्चात दूसरी योनियों में भयंकर कष्ट भोगता है। कदाचित ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा से ही वह मनुष्य योनि में आ पाता है और वह गर्भ में दु:ख ही दु:ख भोगता है। बाल्यकाल में तो पराधीनता तथा विवशता के कष्टों से भरा पड़ा है और युवा अवस्था में काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य को अंधा कर देते हैं। वह नाना चिन्ताओं में बराबर जलता रहता है। वृद्धा अवस्था तो दु:ख रूप है ही।

इस प्रकार यह समस्त जीवन क्लेशपूर्ण है। जब निरन्तर विचार करने से तथा सत्कर्मों के पुण्य प्रभाव से चित्त में वैराग्य उत्पन्न होता है, तब मनुष्य इस संसार में दु:खों को समझ पाता है। ॐ आनन्दमय भगवान के चरणों में अनुराग होने से, ॐ आनन्दमय भगवान के नाम का जप, उनकी मंगलमयी लीलाओं का ध्यान तथा उनके दिव्य गुणों को धारण करने से ही हृदय शुद्ध होता है। निष्काम भक्ति के द्वारा ॐ आनन्दमय भगवान में चित्त को लगाये रखने से धीरे-धीरे समस्त दुर्गुण-दुराचार नष्ट हो जाते हैं। बिना ॐ आनन्दमय भगवान के शरणागत हुए हृदय शुद्ध नहीं होता। अत: मनुष्य को बड़ी सावधानी से संसार के विषय भोगों से मन को हटाकर ॐ आनन्दमय भगवान के चरणों में लगाना चाहिए। यह श्री समाधिमग्न महापुरुषों के उपदेश का बहुत ही संक्षिप्त तात्पर्य है।

२- जो ऐश्वर्य के मद से उन्मत्त है, जो भूख से पीड़ित है, जो कामी है तथा जो अहंकार से मूढ़ हो रहें हैं, ऐसे मनुष्यों को विवेक नहीं होता। यदि दुष्ट मनुष्य सज्जनों को सताते हैं तो इसमें क्या आश्चर्य है। नदीं का वेग किनारे पर खड़े वृक्षों को गिरा देता है। जहाँ धन भी है और पर स्त्री भी है, वहाँ सभी सदा अंधे और मूर्ख बने रहते हैं। दुष्ट के पास लक्ष्मी हो, तो वह लोक का नाश करने वाली ही होती है। जैसे वायु अग्नि की ज्वाला बढ़ाने में सहायक होती है और जैसे साँप को पिलाया गया दूध उसके विष को बढ़ाने में सहायक होता है वैसे ही दुष्ट की लक्ष्मी उसकी दुष्टता को बढ़ा देती है।

अहो! धन के मद से अंधा हुआ मनुष्य देखते हुए भी नहीं देखता, यदि वह अपने आत्म कल्याण की ओर दृष्टि रखता है तो तभी वह वास्तव में देखता है।

३- मनुष्य के सारे दु:ख कामना वासना के कारण ही उत्पन्न होते हैं, यही उसके जन्म-मरण रूपी आवागमन का कारण बनता है। संसार में कामना के समान दूसरा कोई अनर्थ नहीं है। मोह के कारण मनुष्य उसमें आसक्त होता है। तत्व को जानकर भी कौन विद्वान ऐसा होगा जो अनर्थ से डरता हुआ भी उसको पुन: प्राप्त करने की इच्छा करेगा। जीव अनादि काल की कामनाओं, वासनाओं के संस्कारों से बंधा हुआ है। उन्ही संस्कारों से प्रेरित होकर आगे भी सकाम कर्म करता रहता है।

ॐ शान्तिमय

अनुभव अंक से

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

लगभग पाँच वर्ष से मेरे शरीर में सूजन रहा करती थी, पिछले दो वर्षों से तो शरीर की हड्डियों में इतनी पीड़ा होती थी कि मैं भयंकर पीड़ा के कारण चौबीस घण्टों में आधे घण्टे के लिये बेहोश तो हो जाता परन्तु निद्रा नहीं आती थी। दस-पन्द्रह मिनट के लिए एक जगह बैठना व खड़ा रहना भी मुश्किल हो गया था। मेरे नेत्रों की रोशनी भी बहुत कम हो गई थी। इतना ही नहीं नामी हकीमों व डाक्टरों का इलाज करके तथा मंदिरों में पूजा-पाठ, स्तुति-प्रार्थना, गंगा-स्नान, व्रत इत्यादि धर्माचरण करके हार गया था। जीवन में सब प्रकार दु:खों से पकते-पकते एक सप्ताह के अन्दर शरीर को शान्त कर देने का निश्चय भी कर लिया था कि अगले ही दिन मेरे एक मित्र ने कृपा करके मुझे अपने साथ ले जाकर श्री महापुरुष भगवान जी के सन्मुख दो घंटे तक बैठाये रखा। मुझे कुछ भी तकलीफ नहीं हुई, लौटने पर दिन बहुत अच्छा बीता तथा दो वर्ष निद्रा के लिए तरसने के बाद उस रात्रि में आठ घंटे सोया। दूसरे दिन मैं अपने मित्र के साथ फिर पहुँचा। श्री महापुरुष भगवान का दर्शन करते ही ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप चलने लगा और दो घण्टे तक फिर मैं शान्त बैठा रहा तथा पहले दिन से भी अधिक आनन्द मिला। तीसरे दिन पाँच मील पैदल ही चलकर श्री आश्रम में पहुँच गया जबकि पहले एक मील भी नहीं चल सकता था। इस दिन और भी विशेष आनन्द आया और शरीर का सारा रोग नष्ट हो गया तथा कोई भी तकलीफ नहीं रही।

मैंने प्रात: जल्दी उठने के लिए रात्री में सोते समय श्री भगवान जी से प्रार्थना की कि निद्रा जल्दी खुल जाय। उसी दिन से कई रोज तक बराबर ही श्री भगवान जी प्रात: निद्रा में चार बजे चारपाई के पास आकर मुझे उठा देते रहे और अब मैं नियम से उठ जाता हूँ। मैं नित्य नियम से सत्संग में जाने लगा हूँ तथा मेरे पिछड़े हुए समस्त कार्य समाप्त हो गये हैं।

मुझे दैनिक दो घण्टे तक का ध्यान भी प्राप्त होने लगा है तथा चिन्ता व क्रोध भी नष्ट हो गया है। मेरी बाहरी अवस्थाएँ भी आश्चर्य जनक रूप से ठीक हो गई है। एक दिन मुझे दोपहर के समय गंगा के पार जाना था। उस समय जल बढ़ा हुआ था तथा गर्मी भी बहुत थी। नावों पर छतरी नहीं थी तथा मेरे पास भी सिर पर रखने के लिए कुछ नहीं था। जब मैं यहीं सोच रहा था तो एक छतरीदार नाव तेजी से आकर मेरे सामने लग गई और उसमें मैं बैठकर आराम से पार पहुँच गया।

मैं कुछ कम पढ़ा अज्ञानी हूँ कुछ लिखने योग्य नहीं हूँ, यद्यपि मुझे हर समय नये-नये अनुभव होते रहते हैं। यह सब श्री आनन्दमय भगवान जी की कृपा है। मैं हर समय ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय जपता रहता हूँ। अब तो ॐ आनन्दमय भगवान ही मेरे सर्वस्व है दूसरा कोई नहीं। ॐ आनन्दमय

सात्त्विक भक्त सेवा-रूपी नौका पर सवार होकर ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम रूपी पतवार लेकर संसार समुद्र में चलता है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

परमानन्द परम पावन, परम प्रभु, परम सिद्ध को मेरा साष्टांग प्रणाम स्वीकार हो। प्रभु यहाँ पर जलगाँव में मैं निरन्तर आपको अपने हृदय में देखता हूँ और प्रभु आप महान् विभूतियों को देखने के लिए मुझे न तो आँखे बन्द करनी पड़ती है। और न ही आँखे खोलनी पड़ती है। बस जब आपकी सबकी मीठी-मीठी याद आई कि झट से हृदयांगन में आपके दरबार का तथा आप सबका वार्तालाप स्पष्ट देख लेता हूँ। जो मैंने आपके साथ समय बिताया, वह समय बड़ा सही बीता तथा शायद उसी समय से मेरा असली उद्देश्य शुरु हुआ था। परमात्मा प्राप्ति के लक्ष्य में मुझे इस बात पर गर्व है कि आज भी इस भारत वर्ष में आप जैसे महान सन्त मौजूद हैं जो बिना वजह बिना स्वार्थ के हर जीव का उपकार करने के लिए निरन्तर तत्पर रहते हैं। प्रभु आपके द्वारा प्राप्त ''श्री मद्भगवतगीता'' को मैं रोज पढ़ता हूँ तथा अमल में भी लाना चाहता हूँ, परन्तु अमल में नहीं ला पाता हूँ। परन्तु फिर भी शान्ति बहुत मिलती है। श्री गीता का एक-एक श्लोक जीव को उसके असली लक्ष्य की ओर अग्रसर करने के लिए अपने आप में परिपूर्ण हैं इसमें नि:सन्देह कुछ भी असत्य नहीं है। प्रभु अभी मुझे इतना समय नहीं मिल पा रहा है कि मैं ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का भरपूर जाप कर सकूँ। परन्तु अब जब कभी भी अवसर मिला तो अवश्य इस बात का विशेष ध्यान रखूँगा। प्रभु कृपा करके इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि मैं अध्यात्मिकता में अपने आपको परिपक्क करना चाहता हूँ तथा यह बात आप सभी के संयोग से ही पूरी हो सकती है। इस वास्ते आप मेरी ऊंगली अभी से पकड़ ले ताकि मैं भटक न जाऊँ। प्रभु पहले भी बहुत भटका हूँ, परन्तु अब भटकना नहीं चाहता। बड़ी मुश्किल से आप सबका साथ प्राप्त किया है अब मैं आप सबसे कभी भी अलग नहीं होना चाहूँगा। संसार में शायद ही कोई ऐसा अभागा होगा जो आप जैसे महान सन्त की संगति पाकर भी उसे छोड़ने की सोचे। ये सब प्रभु का ही आशीर्वाद है कि उन्होंने मुझे आप के चरणों तक पहुँचा दिया। इस महासागर रूपी नाशवान संसार में प्रभु अब आगे भी आपकी कृपा का पात्र रहूँ। इसके लिए आपसे मेरी नम्र प्रार्थना है।

–दिलेन्द्र कुमार, जलगाँव (महाराष्ट्र)।

विचार-धारा

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

हे प्यारे प्रेमियों! संसार का दर्शन, श्रवण एवं प्रिय प्रेमी-पदार्थों का संयोग-वियोग, यदि विधि पूर्वक नहीं किया जाता, तो यह विद्युत से भी अधिक सर्वनाश कर देते हैं। मानव जीवन के समय की कीमत हीरे-मणियों से नहीं तौली जा सकती, जिसका एक-एक क्षण का समय समस्त दु:खों से मुक्त कर परम-पद की, आनन्दमय पद की, प्राप्ति करा देता है।

इस प्रकार समय की अमूल्यता पर विचार कर संसार के प्रेमी-पदार्थों के साथ, अपने जीवन को किस प्रकार सुरक्षित रखना है, इस विधि-विधान के ज्ञान को समझकर ही इनका उपयोग करना चाहिये।

''विधि-विधान का ज्ञान श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ पृष्ठ १३ पर प्रकाशित है''

संसार की सुन्दरता, रौनक, रमक-चमक, ऐश, आराम, भोग-विलास, धन-जन, विद्या, मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा, हिंसक शेर-साँप एवं विष से भी अत्यन्त खतरनाक है। श्री गीता अ० १६ श्लोक १३ से २० तक। श्री महापुरुषों की दिव्य वाणी मनन-विचार करने की प्रार्थना है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन मुझ पर बचपन से ॐ आनन्दमय भगवान की अहैतुक कृपा रही।

वर्ष १९७२ में ॐ श्री सतगुरुदेव भगवान के असीम कृपा से ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय अनुरागी श्री राजाराम जी आनन्दमय से सम्पर्क हुआ उस समय हम दोनों एक ही कार्यालय में कार्यरत रहे। उन्होंने एक दिन अपने निवास स्थान पर ले गये। गुरु वन्दना करायी विश्वशांति आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय कराया जो कि मन को बहुत अच्छा लगा। उसके उपरान्त बराबर सत्संग में जाने लगा।

श्री विश्वशान्ति आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय, गुरुवन्दना ध्यान करने लगा। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र के जाप सत्संग स्वाध्याय ध्यान आदि नियमित करने से रहन-सहन सादा हो गया। हमारे देवी जी को भी अच्छा लगने लगा। देवी जी के इच्छा से अपने स्थान पर सत्संग कराया। यह सब ॐ श्री सतगुरु देव भगवान के दर्शन पूर्व ही हो गया था।

वर्ष १९७३ के जनवरी माह में ॐ श्री सतगुरुदेव भगवान का दिव्य दर्शन तेलियरगंज, इलाहाबाद आश्रम में हुआ। वही पर ॐ सतगुरुदेव भगवान अपने साथ लेकर सामने वाले सड़क पर प्रचार की शिक्षा दी।

ॐ श्री सतगुरुदेव भगवान के शरण में आने एवं उनके विधान का पालन करने से जीवन आनन्दमय हो गया। मन तनाव मुक्त हो गया। मन से कलुषित विचार, क्रोध, भय जितने दुर्गण थे सब दूर हो गया। उसके स्थान पर सद्गुण सदाचार आने लगा, कोई कामना नहीं। सभी नकली धर्मों से छुटकारा मिल गया। सादा जीवन हो गया। भोजन में तामसी पदार्थों का स्थान नहीं रहा। बराबर यही महसूस होता है कि ॐ श्री सतगुरुदेव भगवान का हाथ हमारे मस्तिष्क पर है उनकी क्षत्रछाया में रह रहा हूँ। अनुभव तो पग-पग पर होते रहते हैं, जिसका उल्लेख करना सम्भव नहीं।

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थों में प्रकाशित ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के विधान को धारण करने से हुआ–

आनन्दमय जीवन हमारा
शान्तिमय जीवन हमारा
सुखमय जीवन हमारा
प्रेममय जीवन हमारा
सेवामय जीवन हमारा
ध्यानमय जीवन हमारा
ज्ञानमय जीवन हमारा।

–लघुसेवक
कृपाशंकर आनन्दमय, कानपुर।

दुर्जन यदि विद्वान हो तो भी उसका संग नहीं करना चाहिये क्योंकि मणि से सुशोभित साँप क्या भयानक नहीं होता?

ॐ श्री गुरुदेव भगवान शरणं

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ श्री महापुरूष देव जी के चरण कमलों में सादर प्रणाम।

भगवन जी,

मैं इस अल्प बुद्धि का क्या प्रदर्शन करूँ आप तो मेरे मन की बात जानने वाले हैं। आपसे मैं क्या निवेदन करूँ, कुछ कहा नहीं जाता। मैं तो मनसा वाचा कर्मणा आपकी सेवा के ''मनस्येकं वचस्येंक कर्मणयेकं महात्मनाम् '' आप तो पवित्र और पुनीत सागर हैं। मैं तो विकार युक्त नद् नदी रूप हूँ। जिस प्रकार कंकण पत्थर से युक्त नदी आगाधागार में गिरने से स्वयं सागर कहलाती है और उसके साथ लगे हुये पत्थर, मोतियों के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं ठीक उसी प्रकार मैंने भी क्षुद्र नदी के रूप में अनेक कंकण पत्थर रूपी दुर्गुणों से युक्त आप में समाविष्ट होकर स्वयं रत्नागार होने की चेष्टा की पर सांसारिक विषयों को अपनाना ही पड़ा। क्या मेरा अभी समय नहीं आया है।

मुझे जो लाभ हुये वे कह सकने में असमर्थ हूँ क्योंकि–

''अविगत गति कहु कहत न आवे''

जो लाभ मुझे हुये वो इस अपुनीत वाणी से कह नहीं सकता, न लिख कर ही व्यक्त करने में समर्थ हूँ। यदि मैं व्यक्त भी करूँ तो ''लाभ'' का अपमान होगा। मेरे साथ आप प्रतिक्षण, प्रतिपल हैं। ऐसा मुझे भासित होता है।

हाय रे! दुर्बुद्धि तू कैसी कुटिल है कि अपने भगवान के दर्शन से वंचित रहा। पूरा लगभग एक माह हो गया, जैसे बहुत दिन बीत गये हों। मुझे आप कब अपना पुनीत दर्शन करायेंगे? मुझसे क्या गलती हो गई जो आप मुझसे मुख मोड़ लिये, क्या मैं आपसे दूर हूँ? नहीं नहीं.... यह कदापि नहीं हो सकता। मैं तो आप ही का हूँ फिर आपसे दूर?

क्या आप मुझे क्षमा करेंगे, मुझसे आप मत रुठें।

''जीवन को मैंने सौंप दिया, हे नाथ तुम्हारे हाथों में।
उद्धार पतन अब मेरा है, हे नाथ तुम्हारे हाथों में।।

क्या आप दर्शन से वंचित रखेगें?

मेरे हृदय में श्री आप की अनुभूतियाँ अब भी विद्यमान हैं। मैं अपने प्यारे मंत्र ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' को अपने जीवन वीणा पर अवश्य झंकृत करूँगा। और जीवन को सफल बनाऊँगा।

मुझे विश्वास है कि आप दयालु हैं, कृपामय हैं– मुझे ठुकरायेंगे नहीं। मैं अपने विज्ञान के विषयों में लग गया, प्रैक्टिकल होने जा रहे हैं इस कारण आपके शुभ दर्शनों से वंचित रह गया।

अब जल्दी ही मुझे प्रतीत होता है कि आपके श्री चरणों के दर्शन कर सकूँगा।

आश्रम निवासियों को मेरी सद्भावना से ओतप्रोत ''ॐ आनन्दमय''

तुम सब जानहू अन्तर्यामी
पुरबहु मोर मनोरथ स्वामी

–आपका
शारदा प्रकाश उपाध्याय

साधु और असाधु

१- संयम-सेवा, स्मरण-ध्यान और समता-सन्तोष के अनुरागी मानव साधु हैं।

२- काम-क्रोध, लोभ-अहंकार और नाराजगी के रागी मनुष्य असाधु हैं।

स्मृति रहे ! ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की आज्ञानुसार परमार्थी प्रेम को धारण करने से यह ब्रह्मवाटिका आनन्दमयी है और अहंकारी प्रेम को धारण करने से इस विश्ववाटिका का सब कुछ चूहेदानी है।

ॐ श्री गुरुभगवान् शरणम्

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन, मैं सन् १९५४ में श्री आनन्दलता जी आनन्दमय के परिवार का एक प्रमुख अंग बनकर इंदौर से इलाहाबाद आई थी। तब से इस विश्वशान्ति आश्रम के दिव्य आनन्दमय सत्संग में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जब तक मैं इलाहाबाद में रही, अपने पारिवारिक जनों के साथ सत्संग में जाने का सदैव सुअवसर प्राप्त होता रहा। आनन्दमय सत्संग की अमिट छाप मेरे मन पर पड़ी, जिन बातों से मैं विशेष प्रभावित हुई, वे इस प्रकार हैं–

१- यहाँ सम्पूर्ण मानव, जाति के हित की बात कही जाती है, किसी एक वर्ग की नहीं।

२- सारा ज्ञान पाखण्ड से रहित है। आडम्बर का कहीं स्थान नहीं है।

३- जो भी ज्ञान सत्संग में बोला जाता है, उसको पालन करने पर वह समाज के लिए निश्चित रूप से उपयोगी सिद्ध होता है।

४- ध्यान योग पर विशेष बल दिया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि छात्र छात्राओं के मन की एकाग्रता बढ़ती है और प्रत्येक कार्य कुशलता पूर्वक दक्षता पूर्वक सम्पन्न होता है।

५- विकासशील देश और समाज के लिए केवल ज्ञान जरूरी नहीं है, मन और आचरण का सुधार उससे ज्यादा जरूरी है।

मैं यह मानती हूँ कि श्री विश्वशान्ति आश्रम के पूरे नियमों का मैं पालन नहीं कर पाती हूँ। किन्तु मेरी श्रद्धा किसी अन्य विचार धारा में नहीं है। मैं कभी निष्क्रिय नहीं बैठती, सदैव किसी सेवा कार्य में लगी रहती हूँ एवं वाणी से महापुरुष भगवान के हृदय कमल से प्रकट हुये योग सिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का ही केवल जाप करती हूँ। मेरा मन समशान्त बना रहता है। मेरा जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत हो रहा है। ॐ आनन्दमय भगवान की कृपा की झलक मिलती रहती है।

–पुष्पांजलि सहित
नीलिमा (सागर, म०प्र०)

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मेरे आनन्दमय मुझे अपना लेना।।टेक।।
ठोकरें खाई बहुत झूठे जगत के प्यार पर।
इसीलिए आयी हूँ, आनन्दमय तुम्हारे द्वार पर।।
दु:खी दीन को दास बना लेना।।१।।
अब मुझे तारो न तारो, यह तुम्हारे हाथ हैं।
अगर न तारोगे तो बदनामी तुम्हारी नाथ है।।
जरा नाम की लाज बचा लेना।। मेरे।।
भक्त कितने आप पर जीवन, निछावर कर गये।
नाम लेकर आपका पापी, हजारों तर गये।।
मुझ सेवक को भी चरणों में ले लेना।। मेरे।।
पातगी का बोझ है अधर्मों की संगत साथ है।
काम क्रोधादि लुटेरों का हृदय में वास हैं।
इसी नाते से नाथ मिला लेना।। मेरे।।
पवन माया की चलती हैं, श्रम भँवर रहता है साथ।
बीच भव सागर में बेड़ा भक्त का बहता है नाथ।।
यह धार से पार लगा देना।। मेरे...।।

ॐ आनन्दमय भगवान की जय

समस्त देवी समाज को सप्रेम ॐ आनन्दमय स्मरण

मैं एक ऐसे परिवार में उत्पन्न हुई जहाँ सभी सम्बन्धी राजसी भोगों में ही लिप्त रहते थे। मैं अपने माता-पिता की एक मात्र सन्तान थी। इस कारण मेरा पालन पोषण बड़े लाड़-प्यार से हुआ। छोटी अवस्था में ही विवाह हो गया था। ससुर-गृह में कुछ भगवत् चर्चा की छाया थी।

मैं रोग ग्रसित रहती थी। एक दिन एक किताब में देखा कि योगाभ्यास से शरीर निरोग हो जाता है। परन्तु किससे सीखें? भगवत् कृपा से एक गुरु मिले, कुछ योगाभ्यास बताया। फिर भी सन्तोष नहीं हुआ। इसी समय एक दूसरे महापुरुष के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनसे भी मंत्र लिया और साधना में लगी परन्तु पूर्ण शान्ति न मिली।

दैवयोग से पति का देहान्त हो गया । अब तो यही चिन्ता रहती है कि कोई भी महापुरुष का दर्शन मिले जिससे इन विपत्तियों से छुटकारा मिले। अधिक से अधिक समय महापुरुषों के संग और भगवत चर्चा में बिताने लगी। चार वर्ष बीते अब तो जीविका निर्वाह करने का प्रश्न आया, उसमें भी थोड़ा समय देने लगी। महात्माओं के संग-सेवा से जो लाभ चाहती थी न मिला और श्रद्धा घटने लगी। मन में पूर्णतया निश्चय हो गया कि ईश्वर तो है परन्तु उससे मिलाने वाला कोई नहीं है।

श्री भगवान की कृपा से श्रीमती मर्यादा देवी से परिचय हुआ। उनके कहने से प्रथम दिन यह सोचकर सत्संग में आई कि कुछ नहीं तो भगवान की चर्चा सुन लूँगी। यहाँ पर कुछ ध्यानमग्न पुरुषों का दर्शन पाया और यह प्रतिज्ञा सुनी कि एक सप्ताह में ही ध्यान लग जाता है। एक हफ्ते अवश्य ही आकर यहाँ की सत्यता का अनुभव करूँगी। जब मैं तीन दिन आई तो तीसरे दिन कुछ क्षणिक ध्यान-शान्ति का नशा आया फिर भी विश्वास न हुआ। परन्तु उत्कंठा बढ़ गई। सातवें दिन श्री भगवान जी की कृपा से यह अनुभव हुआ कि ध्यान भी एक वस्तु है। यह केवल कल्पना ही नहीं है।

सात दिन लगातार आकर बीच-बीच में नागा भी किया। इससे मुझे मन की एकाग्रता व ध्यान का अनुभव होता रहा। फिर कार्यवश करीब एक मास गैर हाजिर रही जिससे मुझे बेचैनी सी प्रतीत होने लगी और ऐसा ज्ञात होता मानो कुछ खो गया हो। इस प्रकार जनवरी, फरवरी का जो अनुभव था वह समाप्त हो गया। मार्च का एक सप्ताह भी बीत गया। इधर फिर मुझे झँझटों से छुटकारा मिला तब मैंने निश्चय किया कि जितना अधिक से अधिक समय सत्संग में दे सकूँगी, दूँगी।

मार्च से अब तक जो कुछ अनुभव हुआ वह मैं आप लोगों के समक्ष रखती हूँ। यद्यपि मेरा अनुभव विशेष नहीं है उसका कारण मैं स्वयं ही हूँ।

सर्वप्रथम तो मुझे यहाँ के सत्संग में रूचि उत्पन्न हुयी, जो तीन वर्ष से भगवत् चर्चा से मेरा मन उपराम हो गया था। मैं भूलकर भी सत्संग में न आती। फिर जो मनुष्य राजसी वस्तुयें मुझे बहुत प्रिय थीं उनसे मुझे वैराग्य होने लगा। प्रारम्भ से ही स्वादिष्ट भोजन की आदी थी परन्तु अब तो जो कुछ अथवा बिना नमक का मिल जाता है तो कष्ट नहीं होता। राजसी ही वस्त्र प्रिय थे। मोटा वस्त्र पहनकर बाहर निकलनें में लज्जा और दु:ख प्रतीत होता था। अब तो उसकी भी चिन्ता छूट गयी। स्वच्छ वस्त्र जैसा भी मिलता है सहर्ष पहन लेती हूँ। मन में सदा चिन्ता-दु:ख तथा भाँति-भाँति के विकार भरे रहते थे। जिससे सदा दु:खी रहती। सदा मन में अनुभव होता कि संसार में घोर अन्धकार है और उस अन्धकार में मैं अकेली भटक रही हूँ। कोई सहारा नहीं देता, चारों तरफ सूना प्रतीत होता है। परन्तु जिस दिन से श्री भगवान जी के शरणागत हुई उस दिन से मेरे मन का एकाकीपन दूर हुआ। मुझे अनुभव होता है कि मेरा संरक्षक कोई है। कोई दु:ख आयेगा तो श्री भगवान अवश्य दूर करेंगे। मुझे कोई चिन्ता नहीं करनी है। मेरी सभी प्रकार की व्यवस्था श्री प्रभु करेंगे। क्रोध भी शनै: शनै: दूर हो रहा है। यह सभी श्री प्रेमियों को विदित है कि मेरा ध्यान विशेष नहीं लगता उसका कारण मैं स्वयं समझती हूँ वह यह कि इतनी आयु राजसी सुख तथा उसकी इच्छा में ही बीता। शारीरिक कष्ट तथा समय के अभाव के कारण मेरा प्रयत्न शिथिल हो रहा है परन्तु मुझे पूर्ण विश्वास है कि जिस दिन यह शरीर रूपी वस्त्र स्वच्छ

हो जायेगा उसी दिन प्रभु की कृपा से ध्यान प्राप्त हो जायेगा। और अधिक क्या लिखूँ। अल्प ज्ञान द्वारा जो कुछ लिख सकी लिखा। आप सभी सज्जनों से प्रार्थना है यदि कोई शब्द अशुद्ध अथवा अनुचित हो तो क्षमा करेंगे।

–निवेदिका
गिरजा देवी

''गम्भीर – विचार''

ॐ श्री सद्गुरू देवाय नमः
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

गर्भाधान में बालक सुख-दुःख नामक और शान्ति-अशान्ति नामक समस्त द्वन्दों से अतीत रहता है। यदि गर्भाधान में बालक को किसी प्रकार का कष्ट होता है तो वह दूसरों के श्रवण करने योग्य रूदन की बिगुल बजाता, परन्तु ऐसी आवाज किसी पशु के गर्भ में भी नहीं होती।

जब शिशु का जननी के गर्भ से बाहर आगमन होता है तो उसे कष्ट का ज्ञान होता है, तब वह कष्ट जनित वाणी उच्चारण करता है और कष्ट निवारण होने पर शान्त हो जाता है। उस बालक को जब-जब कोई कष्ट जनित प्रतिकूलता का ज्ञान होता है तब-तब वह अपनी वाणी द्वारा सूचना देता है। तद्नुसार अधिकारी उसके कष्ट को निवारण करते हैं, जिससे वह बालक पुनः शान्त हो जाता है, इस गाथा से यह ज्ञान होता है कि गर्भाधान की अवस्था आनन्दमयी-शान्तिमयी है इसी कारण शिशु अवस्था सर्वप्रिय होती है। वही बालक जब दर्शन श्रवण जनित कामनाओं का दर्शन कराता है तब अप्रिय लगता है। माता द्वारा कुछ कामनाओं की पूर्ति होने पर वह बालक और अधिक लोभ की वाणी उच्चारण करता है तब वह बालक अधिक अप्रिय लगता है। वही बालक जब क्रोध के स्वाङ्ग को धारण करता है, तो सब कोई उस पर नाराज हो जाते हैं वही बालक जब क्रोध का आचरण करता है तो उसको यथा योग्य दण्ड दिया जाता है।

भगवन् । इस गाथा से यह ज्ञान हुआ कि निष्कामी मानव प्रियता और प्रसन्नता के दाता हैं कामी मनुष्य अप्रियता और अप्रसन्नता के दाता हैं। लोभी मनुष्य के भाव आचरण कामी से अधिक प्रतिकूलता दायक होते हैं और क्रोधी के भाव आचरण शीघ्रता पूर्वक कलह करने-कराने वाले होते हैं।

भगवन् । निष्कामता के भाव-आचरण, आनन्द-शान्ति वर्द्धक हैं। सकाम भाव-युक्त आचरण दुःख अशान्ति दायक हैं, लोभ-युक्त आचरण अधिक दुःख-अशान्तिप्रद हैं और क्रोध-युक्त भाव आचरण दुःख-अशान्ति के भण्डार हैं।

भगवन् । निष्काम तत्त्व के ज्ञाता ब्रह्मदर्शी महात्मा का ज्ञान पूर्ण है। कामी मनुष्यों का ज्ञान परिणाम में हानि कारक है, जिसको श्री गीता विधान में विष रूप बतलाया है, अब लोभी के ज्ञान की और क्रोधी के ज्ञान की क्या महिमा गाई जाए।

ॐ शान्तिमय

मनुष्य का सच्चा कर्त्तव्य क्या है?

ॐ आनन्दमय भगवान के सिवाय किसी दूसरी चीज से प्रेम न जोड़ना।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के मंगलमय विधानों के तत्व से अनभिज्ञ अहंता-ममता रूपी मान बड़ाई के मनन-विचारों में उलझे हुये शिथिल साधकों के प्रतिः—

ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी के प्रत्येक मंगलमय विधानों के तत्व-रहस्य को समझते हुये, सम-शान्त, प्रसन्नता की भावना में मग्न अमूल्य समय की गति में तीव्रता पूर्वक श्रद्धा-प्रेम बढ़ाने में सतत् प्रयत्नशील ॐ आनन्दमय अनुरागियों के अतिरिक्त जो अपने अहंता-ममता के मनन विचारों से ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के द्वारा किये गये विधानों को मनुष्य कृत्य मानकर राग, द्वेष, कपट, छल के मनन विचारों में उलझ जाते हैं, वह अपनी स्वयं की तो महान हानि करते ही हैं, साथ-साथ जिनके सम्पर्क में जाकर इस प्रकार मन में भरे अहंता-ममता, राग-द्वेष के मनन-विचारों को कथन श्रवण कराकर उनके अन्दर भी हानि के मनन विचारों से भ्रम पैदा करते रहते हैं, परन्तु सावधान रहना चाहिये, ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के द्वारा किये हुए विधानों में सदा कूटस्थ विचारों में संतुष्ट आनन्दमय अनुरागियों पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता, अपितु उन्हीं के द्वारा किये राग-द्वेष जनित दुष्कर्म का प्रभाव उलट कर उनको ही ब्रह्म-विधान विरूद्ध आचरणों से उनकी श्रद्धा को छिन्न-भिन्न कर भगवत् दण्ड विधान से शोकातुर कर देता है, जैसे सूर्य-चाँद पर थूकने से थूक अपने मुख पर आ गिरता है।

मनन विचारों की शुद्धता ही ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी की ''सच्ची प्रेम भक्ति'' है।

अतः विनम्र निवेदन है, प्रार्थना है कि ऐसे दुर्लभ बहुमूल्य जीवन का समय और शक्ति जो ॐ आनन्दमय प्रभु की कृपा से प्राप्त हुई है, उसका सदुपयोग, श्री प्रभु पिता जी के किये गये विधानों में आनन्दमय अनुरागियों के सानिध्य से श्रद्धा-प्रेम विश्वास रूपी शस्त्र द्वारा अपने कुण्ठित श्रद्धा-प्रेम को हनन करने वाले मनन विचारों को काटकर सजग हो जाना चाहिये।

इस ब्रह्म सृष्टि में ॐ आनन्दमय प्रभु पिताजी द्वारा ही निर्माण कार्य, पालन करने का कार्य एवं संहार करने का कार्य हो रहा है, भूत में भी हुआ और भविष्य में भी होता रहेगा।

इसमें ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के अतिरिक्त किसी का भी हाथ नहीं है, इसलिये उनके द्वारा होने वाले विधानों में सम-शान्त प्रसन्न रहते हुये उनकी कृपाओं का प्रभाव एवं शक्ति का अनुभव करते रहना चाहिये, आवश्यक सेवा-पूजा के कार्यों को करते हुए ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान के नाम रूप की सतत् - स्मृति ही सर्वश्रेष्ठ समस्त दुःखों से छूटने का एक मात्र निश्चित परम पद प्राप्ति का साधन है श्री गीता अध्याय ८ श्लोक १४ ! **ॐ शान्तिमय**

श्री अनुभव अंक से

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मुझे श्री भगवान जी का सत्संग प्राप्त हुए एक वर्ष हुआ है। पहले ही दिन सत्संग में जाने से मुझे बड़ा आनन्द आया। मैं कभी-कभी सायंकाल ही सत्संग में जाती रही। उस समय तक मेरा ध्यान नहीं लगा था। श्री महापुरुष भगवान जी के आदेशानुसार ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जाप आरम्भ कर दिया तथा फिर प्रात: ध्यान सीखने के लिए सत्संग में जाने लगी। श्री महापुरुष भगवान जी के श्री चरणों में बैठ कर अभ्यास करने से दो ही रोज के अन्दर मेरे हृदय में आनन्द शान्ति स्थापित हो गई। मेरा ध्यान दो घण्टे तक लगने लगा और श्री महामंत्र का जप निरन्तर होने लगा। जब मैं ध्यान करने बैठती हूँ तो ऐसा आनन्द आता है कि वर्णन नहीं कर सकती। अब तो मेरा ध्यान और भी बढ़ गया है व मेरे हृदय में आनन्द की तरंगे उठने लगी हैं। अब मैं यदि किसी दिन ध्यान न करूँ तो मेरे हृदय में अशान्ति छाई रहती है तथा बड़ा कष्ट होने लगता है।

एक दिन पैर में तकलीफ के कारण मैने सोचा कि आज ध्यान के लिए सत्संग मैं कैसे जाऊँगी परन्तु जब गई तो कुछ भी कष्ट नहीं हुआ और जब श्री आश्रम से लौटी तो पैर विल्कुल ठीक हो गया था।

एक दिन स्कूल जाने में देरी होती देखकर मैं बिना ध्यान किए ही जाने को तैयार हो गई। परन्तु फिर किसी कारणवश न जा सकी और सेवा कार्य में लग गई। भोजन बनाते समय गरम-गरम दाल ऊपर गिर गई, मेरे हृदय में ज्ञान हुआ कि आज ध्यान न करने का दण्ड मिला है। उसी रात्रि में स्वप्न में मैंने देखा कि श्री महापुरुष भगवान कह रहे हैं कि ध्यान रोज किया करो दण्ड नहीं मिलेगा। तब से मैं रोजाना सुबह-शाम ध्यान करने लगी हूँ तथा सर्व प्रथम ध्यान करके अन्य कोई कार्य करती हूँ।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय के जप से मुझे कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का ज्ञान भी हुआ है। तथा मेरे चित्त में शांति एवं प्रसन्नता का प्रादुर्भाव होने लगा है। मैं पहले बहुत क्रोध करती थी परन्तु अब मेरा क्रोध शांत हो गया है जिससे बड़ा लाभ हुआ है। पहले मुझे आलस्य व भय बना रहता था वह भी अब सब भाग गया है। अब मुझे मिर्च, मसाला, प्याज आदि बिल्कुल अच्छे नहीं लगते हैं और रंगीन व रेशमी वस्त्र भी अच्छे नहीं लगते हैं। श्री आश्रम प्रेमियों की तरह सात्त्विक भोजन व सफेद वस्त्र ही प्रिय लगते हैं। अब मुझे राजसी मानव से भी वैराग्य हो गया है और मन यही चाहता है कि वहाँ जाऊँ जहाँ श्री आनन्दमय भगवान का लाभ है।

मेरे भ्राता तामसी विचारों के हैं। जब मैं श्री भगवान जी के सत्संग में जाती तो वह कोई न कोई बाधा उपस्थित कर देते परन्तु मैं चुपके से चली ही जाती हूँ। एक दिन उन्होंने कहा कि यदि अब तू जायेगी तो मैं तेरी टांगे तोड़ दूँगा। मैं चुप रही और मन ही मन श्री महापुरुष भगवान के श्री चरणों में प्रार्थना करती रही कि हे प्रभु आप ही मेरी व्यवस्था बनाना। मेरे भ्राता की टाँगों में ऐसी पीड़ा हुई कि वह दो माह चारपाई से न उठ सके और बहुत रुपया खर्च होने के साथ-साथ घर वालों को भी बड़ी परेशानी हुई। मेरे हृदय में ज्ञान हुआ कि न्यायकारी श्री प्रभु का दण्ड है।

मेरी बहन जो दसवें दर्जे की छात्रा थी दिन-रात किताबें पढ़ती रहती थी और न तो सत्संग-ध्यान और न घर की कोई सेवा ही करती थी। परन्तु मैं तो भजन-ध्यान भी खूब प्रेम से करती और घर में सेवा भी करती थी एवं कुछ समय पढ़ाई में भी लगाती थी। सभी घर वाले कहते थे कि तू फेल हो जाएगी परन्तु दिन रात पढ़ने वाली और सेवा स्मरण से वैराग्य रखने वाली बड़ी बहन तो फेल हो गई तथा श्री महापुरुष भगवान की कृपा से मैं पास हो गई।

—ॐ शान्तिमय

''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र दिमागी संकटहारी है और ध्यान अमृत दायक है।

ॐ श्री आनन्दमय भगवान की जय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन्! जहाँ तक अनुभव का प्रश्न है मेरे विचार से तो अनुभव न केवल सुनने या कहने का विषय है पर यह तो अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक आनन्दकद सच्चिदानन्द घन ॐ श्री आनन्दमय भगवान के मतानुकूल आचरण एवं पुरुषार्थ कर स्वयं के अनुभव करने का विषय है। जैसा कि श्रद्धा एवं प्रेम की वृद्धि हेतु हमारे अग्रसर पथ प्रदर्शक महानुभावों, महापुरुषों एवं सत्संगी प्रेमियों ने अपने-अपने समकालीन अथवा दीर्घकालीन अनुभवों को कहने एवं सुनाने का मार्ग अपनाया है तदानुसार मैं अपने कुछ समकालीन अनुभवों को संक्षिप्त में आप सब प्रेमियों के सन्मुख कहने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

जिस दया एवं करुणा के साथ श्री करुणा सागर, पतितपावन, परम दयालु, भक्त वत्सल भगवान ॐ श्री आनन्दाचार्य जी ने मुझे इस सन्मार्ग का दर्शन करा उस पर चलने के लिये प्रेरित किया, मैं अपने को उस लायक पात्र नहीं समझता हूँ। पर भगवान तो परम दयालु, सबके पालनकर्ता एवं समद्रष्टा हैं न। भला ऐसी कृपा क्यों न करते तथा इस संसार सागर से अतिशीघ्र तारन वाली आनन्दमयी शान्तिमयी नौका का आश्रय क्यों न देते।

जैसा कि हमें अब भी राजसी तामसी एवं अज्ञानी व्यक्तियों द्वारा सुनने को मिलता है, तद्नुरूप पहले मैंने भी इस महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय को जाली मंत्र समझा तथा इस सन्मार्ग को महापुरुष श्री राम एवं श्री कृष्ण के प्रतिकूल अपने को बहकाने एवं फंसाने का ढोंग समझा। पर भगवान की असीम अनुकम्पा से शीघ्र ही अज्ञान दूर हो गया और मालूम हुआ कि केवल यही ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय श्री सुखशान्ति, गुण-ज्ञान, ध्यान आनन्द, पद प्रभाव मोक्ष दायक योग सिद्ध महामंत्र हैं जिनके जप एवं ध्यान से हमें राजसी-तामसी भाव-आचरणों से वैराग्य हो सकता है तथा भगवत् अनुकूल गुण ज्ञान भाव आचरणों की जागृति एवं आनन्द शान्ति की प्राप्ति हो सकती है।

अत: उसी समय से मैंने इस योग सिद्ध महामंत्रों का जप एवं ध्यान करना प्रारम्भ कर दिया। फिर क्या था विलक्षण आनन्द का अनुभव होने लगा और शनैं:-शनै: भगवत् प्रेम बढ़ने लगा तथा यथा भगवत् प्रेमियों के विभिन्न अनुभवों को श्रवण करता हूँ। भगवान में अनुरक्ति होती जा रही है और सत्कार्यों की प्रेरणा मिलती रहती है। दैनिक जीवन में भी काफी परिवर्तन होने लगा है। पहले विनोदी शब्द उच्चारण कर हँसने की आदत सी हो गई थी पर भगवत् कृपा से वह अब काफी दूर हो रही है। खटाई मिर्च खाने की आदत धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। क्रोध एवं लोभ में तो काफी कमी हो गई है। राजसी तामसी धनी पदाधीश मानवों की भाँति स्वयं बनने की कल्पनाओं का ह्रास हो रहा है। जो पहले भगवद् भक्तों की सेवा करने में भी थोड़ी हिचक थी अब वह समाप्त हो गई है। अध्ययन कार्यों में भी काफी सुविधा प्राप्त हुई है। गृह कार्य भी सरलता एवं सरसता के साथ होने लगे हैं। इन सभी दैनिक सुधारों की ओर झाँकते हुये मुझे पूर्ण आशा ही नहीं विश्वास है कि यदि इसी प्रकार भगवान ने दया दृष्टि रखी और साथ ही मेरा कुछ पुरूषार्थ भी रहा तो इन सर्व अवगुणों एवं तामसी वृत्तियों का नाम निशान भी समाप्त हो जायेगा और जीवन सफल होकर भगवत् चरणों में पूर्ण अनुरक्ति हो जायेगी।

भगवन्! धन, यौवन अस्थिर है केवल भगवत् प्रेम और भक्ति ही स्थिर है, उन्हें प्राप्त करना चाहिये। प्राप्त करने का सबसे अच्छा उपाय, हर समय भगवान ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप एवं ध्यान की स्मृति बनायें रखना है। इस असार संसार में केवल ॐ आनन्दमय नाम ही सार है। संसार की असारता पुराने खण्डहरों और श्मशानों को देखने से प्रत्यक्ष प्रतीत होता है। भगवान् के ध्यान से ही कल्याण की प्राप्ति होती है। अत: निस्वार्थ भाव से विशुद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जाप करें।

—बद्री प्रसाद आनन्दमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं सदैव से ही सत्संग प्रेमी रहा हूँ। मैंने प्रसिद्ध कथा वाचकों का सम्पर्क किया है और विभिन्न उपदेशकों के उपदेशों को श्रद्धा-प्रेम पूर्वक श्रवण किया। परन्तु मेरा हृदय किसी प्रकार भी तृप्त नहीं हुआ और उस तृप्ति की अभिलाषा से ही मुझे श्री महापुरूष देव के दर्शन प्राप्त हुए।

मैं छुट्टी के दिन त्रिवेणी स्नान करता और वहाँ से लौटकर किसी न किसी भगवत् चर्चा में जाया करता था। एक दिन मैं स्नान करके लौट रहा था, तो सामने गॅवर्नमेंट की दीवार पर यह लिखा हुआ पढ़ा कि ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' जपें, श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ पढ़ें, आपका भाग्य उदय होगा। इन वाक्यों को पढ़कर मेरा मन इनकी ओर इतना आकर्षित हुआ कि मैंने उसी समय से श्री महामंत्र का जप करना प्रारम्भ कर दिया और इसके केन्द्र का पता करने के लिए लालायित रहने लगा, भगवत कृपा से केन्द्र का पता भी चल गया।

मैं एक दिन प्रात:काल सत्संग में गया। सत्संग करने से मुझे बहुत आनन्द प्राप्त हुआ। दिन भर मेरे मन में आनन्द और शान्ति बनी रही, मुझे ऐसा भान हुआ मानों कि निधि प्राप्त हो गई हो। तब से मैं समय-समय पर सत्संग में जाने लगा। अब मैं राग-द्वेष और अनुकूलता-प्रतिकूलता के प्राप्त होने पर उच्च भावों में स्थित रहकर सेवा कार्य में प्रवृत्त रहने का प्रयत्न करता हूँ। जब से मैंने श्री महापुरूष देव के ज्ञान ग्रन्थ १००० की संख्या में प्रकाशित करवाए हैं, तब से ध्यान की इतनी वृद्धि हुई कि उसका वर्णन करना असम्भव है। विशेष क्या कहूँ जितना श्री प्रभु ने ध्यान दिया है, मैं उतना बैठ नहीं पाता। हर समय ध्यान की ही वृत्ति बनी रहती है। गीता जयन्ती के अवसर पर मैं एक दिन लखनऊ की एक भगवत् चर्चा में लगातार ८ घण्टे ध्यान में बैठा रहा।

ध्यान के अतिरिक्त मेरी शारीरिक, आर्थिक और सामाजिक सभी प्रकार की उन्नति हुई है। यदि मेरे वचनों पर किसी को संशय हो, तो मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप एक बार ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र को एक माह जपकर अनुभव करें और श्री महापुरूष भगवान का गुण प्रभाव देखना हो, तो श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ का दैनिक पाठ करके देखें। ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र के जप से जो नित्य-प्रतिदिन श्री प्रभु जी के प्रभाव का पग-पग पर अनुभव होता है, उसके विषय में तो कुछ कहना ही नहीं बनता। बस इतना ही विचार उठता है, जो ध्यान-आनन्द, गुण-ज्ञान, प्रभाव का अनुभव मुझे प्राप्त हो रहा है। यह सम्पूर्ण विश्व के मनुष्यों को हो जाए। मैं सम्पूर्ण विश्व का श्री विश्वशान्ति आश्रम के रूप में दर्शन करूँ।

ॐ शान्तिमय -एक साधक का अनुभव

यह संसार है
दु:ख की खाई
तड़पत है नह, मीन
की नाँई, अब तो
होश सम्भाल रे
मनुआ बावरिया।

काम विजयी मंत्र
ॐ आनन्दमय क्रोध
विजयी मंत्र ॐ
शान्तिमय आत्मिक
आनन्द-शान्ति का
दाता है।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भारत देश में दीर्घकाल से विभिन्न प्रकार के धार्मिक मत-मतान्तर प्रचलित हैं। सभी मतों के अनुरागी अपने को धर्मात्मा समझते हैं। परन्तु उनसे यदि यह प्रश्न किया जाता है कि आपको अपने धार्मिक कर्मों से मानसिक आनन्द-शान्ति की प्राप्ति हुई तो इस विषय में वह निरुत्तर हो जाते हैं और अन्य भौतिक लाभ व हानियों का वर्णन करते हुए यही कहते हैं कि धर्म का लाभ तो अगले जन्म में होगा। जैसे- भारत देश में बाईबल के वक्ता और श्रोताओं से पूछा जाए कि आप लोगों को गॉड भगवान् से क्या प्राप्त हुआ? तो वह कहेंगे कि दीर्घकाल तक शासन मिला परन्तु अब निन्दा, अपमान और तिरस्कार प्राप्त हो रहा है।

कुरान के वक्ता और श्रोताओं से पूछा जाए कि आपको अल्लाह भगवान् से क्या प्राप्त हुआ? तो वह कहेंगे कि बहुत समय तक पद-दलित रहने के पश्चात अब पाकिस्तान का राज और क्रोध प्राप्त हुआ।

पुराणों के वक्ता और श्रोताओं से पूछा जाये कि आपको भगवान से क्या लाभ हुआ तो वह कहेंगे कि हमें धन, भवन और मुक्ति दायक सन्तानों का लाभ हुआ। जिसके कारण हम चिन्ता, क्रोध, भय और रूदन की ज्वाला से जलते हुए नाराज रहते हैं।

वर्तमान के आत्मज्ञानी सन्यासियों से पूछा जाये कि आपको ॐ ब्रह्म से क्या लाभ हुआ? तो वह कहेंगे कि हमें जमीन, जायदाद और मठ-मन्दिरों से युक्त यश, मान, प्रतिष्ठा का लाभ प्राप्त हुआ जिसके कारण अब हम लोग भयातुर हैं। कुछ साधु सन्यासी कहेंगे कि अभी तो अकर्मण्य रहते हुए शिक्षा प्राप्त करते हैं इस त्याग तपस्या के फलस्वरूप हमें स्वर्ग मिलेगा और पुन: पृथ्वी के राजा होंगे।

भारत के राजा-रानी और जमींदारों से पूछा जाये कि आपको यज्ञ, दान, तीर्थ, व्रत आदि धर्मों के पालन करने से क्या लाभ हुआ? तो वह कहेंगे कि समाज द्वारा तिरस्कार जनित दारूण दु:ख और मानसिक अशान्ति। भारत के काश्तकारों और मजदूरों से पूछा जाय कि आप लोगों को भगवान् से क्या लाभ हुआ? तो वह कहेंगे कि अभी तक तो हमें दरिद्रता और मूर्खता का लाभ प्राप्त हुआ था परन्तु अब हम भी राज्य अधिकारी होने के पात्र बन रहे हैं।

वर्तमान में तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और नारी सब कोई राजपदों के अधिकारी होने के अभिलाषी हैं अस्तु

धर्म से लाभ के विषय में

उपरोक्त प्रश्नोत्तरों के सदृश अन्य मतावलम्बी भी इसी प्रकार के ही विभिन्न उत्तर देंगे। केवल भारत ही नहीं दूर देश निवासियों से भी यदि पूछा जाये कि आपको गॉड भगवान से क्या मिला तो वह लोग उत्तर देंगे कि हमें उद्योग मिला जिसके प्रभाव से हम यत्र विद्या, कृषि विद्या और चिकित्सा विद्या के पारदर्शी हैं। परन्तु अब अस्त्र, शस्त्र विद्या के प्रयोग से विश्व को शांति प्रदान करने का विचार कर रहे हैं। परन्तु यदि श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के श्रोता और वक्ताओं से पूछा जाये कि आपको ॐ आनन्दमय से क्या लाभ हुआ? तो इस प्रश्न के उत्तर में सेवामय ध्यानयोग अभ्यासी साधक जन निवेदन करेंगे कि –

१- *हमें मानसिक शान्ति मिली है*

२- *ध्यानयोग जनित आत्मिक आनन्द का लाभ हो रहा है*

३- *सात्त्विक ज्ञान के प्रभाव से उत्तम गुण धारण*

करने का स्वभाव हुआ है।

४- *यथा शक्ति सेवा करते हुए काम, क्रोध, और अहंकार को दमन करना हमने अपना कर्तव्य समझा है।*

५- *अन्य प्रेमी जनों का ध्यान लगवाने की योग्यता प्राप्त हुई है।*

६- *ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् की कृपा से हम सदा सम-शान्त प्रशन्न रहने का अभ्यास करते हैं जो मानव देह का आदर्श है।*

हमारे रचयिता और पालनकर्ता न्यायकारी दयामय प्रेमास्पद ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् से और क्या-क्या लाभ होता है इस विषय का भिन्न-भिन्न अनुभव इस ग्रन्थ में प्रकाशित है उसको पढ़ने की कृपा करें।

विनीत प्रार्थना

भगवन् ! विनीत प्रार्थना यह है कि श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ द्वारा शिक्षित प्रेमीजनों के .....अनुभव लेख प्रथम अंक में प्रकाशित करवाये थे और इस दूसरे अंक में कुछ.... लेखों को प्रकाशित कराकर आपके कर कमलों में अर्पण किया है। इसके अतिरिक्त–

सैकड़ों श्री ध्यानयोग अभ्यासी साधक जनों के अनुभव लेख श्री विश्वशान्ति आश्रम के संग्रहालय में विद्यमान है जिनको यथा समय प्रकाशित कराते रहने का विचार है।

विचारशील भगवन् ! आपसे पुन: करवद्ध प्रार्थना है कि इन लेखों को मन की एकाग्रता पूर्वक पठन करने का समय प्रदान करें, तत्पश्चात श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ भाग १ पृष्ठ १४४ का और भाग २ पृष्ठ २०४ का आपकी सेवा में प्रकाशित है उसको श्री विश्वशान्ति आश्रम से प्राप्त कर भगवत आनन्द, शान्ति दायक ध्यानयोग के सदाव्रती बनें।

ॐ शान्तिमय

ॐ श्री विधानाचार्य देव शरणम्

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

परम् पूज्य, व ब्रह्म विद्या के पारदर्शी ॐ श्री इष्टदेव भगवान की सतत् स्मृति रखते हुये, आज मैं उस सुख का अनुभव कर रही हूँ जो अपार सम्पत्ति खर्च करने पर भी प्राप्त नहीं हो सकता। आनन्द शान्ति की वर्षा करने वाले परम हितैषी श्री गुरू भगवान ने अपने परम शक्ति दायक दिव्य ज्ञान को देकर मेरे सब प्रकार के दु:खों का नाश कर मुझ तुच्छ पर ऐसी कृपा की है कि अब भगवान के बिना रहना असम्भव हो गया है।

१८ वर्ष की आयु में ही इतना भारी सांसारिक दु:खों की प्राप्ति हुई कि उस दु:ख से निपटना मेरे वश में नहीं था मैं रात-दिन श्री भगवान से प्रार्थना करने लगी कि हे प्रभो इतने भारी अपराध किये हैं कि जिनका ये दण्ड मुझे मिल रहा है। अब मुझ पर अपनी कृपा कीजिए कि जिससे मैं आपके दिव्य नाम रूप को एक क्षण भी न भूलूँ, निरन्तर आपको भजूँ और आपका दर्शन करूँ बस इस प्रकार होते-होते मेरा प्रेम श्री भगवान में होता चला गया। फिर ध्यान लगने लगा ध्यान मैं भगवान की ज्योति दिखाई देने लगी फिर तो तमाम दु:खों का ही नाश हो गया और आज मैं अकारण ही दया बरसाने वाले शुद्ध सचिदानन्द धन ॐ श्री आनन्दमय भगवान की शरण हूँ और अपने प्रभु पिताजी से प्रार्थना करती हूँ कि हे प्रभो मैं जो कुछ भी हूँ आप जानते हैं आपने मुझ तुच्छ पर इतने उपकार कियें हैं कि जिनका वर्णन करना मेरे वश में नहीं है, केवल अनुभव कर रही हूँ।

अन्यथा इतने दु:खों से कैसे पार पाया जाता कोई, नजर नहीं आता था। बस कृपा करके हे श्री आनन्दमय भगवान मुझे इतनी शक्ति दो कि जिससे मैं श्री आपकी मर्यादा का पालन कर सकूँ। काम, क्रोध व अहंकार का नाश हो जाय। हे प्रभो मैंने अनुभव किया है कि जहाँ आप हैं वहाँ सबकुछ, जहाँ आप नहीं वहाँ कुछ नहीं है, इसलिए आप मुझे न छोड़िए वरना उद्धार कौन करेगा। तुच्छ

सेविका– पद्मा आनन्द,
सहारनपुर, हसनपुर देहली रोड।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

आश्रम की सेवाओं की जानकारी

२००८ में प्रयाग तट पर अर्धकुम्भ मेले के क्षेत्र में आश्रम द्वारा शिविर का आयोजन एवं ध्यानयोग, ज्ञानयोग, कर्मयोगदायक श्री गीता के सत्यधर्म का प्रचार जनवरी-फरवरी में हुआ। शिविर में १२ दिनों तक समय-समय शीत निवारण हेतु चाय-बिस्कुट का प्रसाद आश्रम की ध्यानमग्न माता श्री ''ध्यानप्यारी जी'' के प्रेरणा से जनता जनार्दन में वितरण किया गया।

५ फरवरी को त्रिवेणीपुरम् झूंसी स्थित आश्रम में चार दिवसीय अर्धवार्षिक सत्संग ''श्रद्धांजली दिवस'' के रूप में मनाया गया। जो हर वर्ष निश्चित है।

डायमन्ड कोचिंग सेन्टर इलाहाबाद के प्रबन्धक की अध्यक्षता में 1 जनवरी 2009 में होने वाले सत्संग का छाया चित्र

श्री विश्वशान्ति आश्रम का वार्षिक सत्संग समारोह का कार्यक्रम **दिनांक २१ सितम्बर से २५ सितम्बर** तक होना निश्चित है। जो बड़े श्रद्धा-प्रेम, उत्साह पूर्वक मनाया गया था, जिसमें स्थानीय जनता के अतिरिक्त दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, मुम्बई, मुरादाबाद, सहारनपुर, हरिद्वार, बिजनौर, इन्दौर, राजस्थान, बरेली, गाजियाबाद, आसाम, मध्यप्रदेश आदि दूर-दूर से पधारे हुए भक्त जनों ने सत्संग रस पान किया था।

पुन: **आश्रम का प्रचार वाहन प्रचार-भ्रमण में** सर्वप्रथम अध्यात्मिक नगरी, मथुरा (गोवर्धन), चित्रकूट पहुँचा, वहाँ से अयोध्या गया। आश्रम द्वारा प्रकाशित सत्य ज्ञान का प्रचार-प्रसार करता हुआ वाहन कानपुर में होने वाले वार्षिक सत्संग में शामिल हुआ। तत्पश्चात वार्षिक होने वाले सत्संग जैसे- दिल्ली, गाजियाबाद, सहारनपुर, हरिद्वार, बिजनौर, मुरादाबाद, गढ़मुक्तेश्वर, लखनऊ, रायबरेली में शामिल होते हुए प्रचार वाहन इलाहाबाद वापस आ गया। प्रचार में जाने वाले प्रचारकों की संख्या १० थी। सभी के चेहरे पर उत्साह प्रसन्नता झलक रही थी।

७ जनवरी २००८ को आश्रम में ही जनहितार्थ नि:शुल्क होमियो पैथिक औषधालय खोला गया था, प्रतिदिन औषधालय में विशेषज्ञ डाक्टर द्वारा अस्वस्थों की सेवा प्रेम से की जा रही है। यहाँ भारी संख्या में रोगियों को रोगों से मुक्ति हो चुकी है।

अत: पाठक बंधुओं से निवेदन है कि औषधालय के विषय में अन्य रोगियों को जानकारी देकर स्वयं पुण्य के भागी बनें।

आश्रम के ध्यानयोग मंदिर में दैनिक सत्संग का कार्यक्रम होता है, और प्रत्येक रविवार को होने वाले सप्ताहिक सत्संग में पधार कर जीवन सुखमय एवं आनन्दमय बनाने की प्रार्थना है।

ॐ शान्तिमय

ॐ श्री महापुरुष देवाय शरणम्

भगवन् ! विश्वशान्ति ग्रन्थ के ज्ञान का प्रभाव अवर्णनीय एवं शब्द रहित है। मैं अपने विद्यार्थी जीवन काल में बहुत सारी पुस्तकों से ज्ञानार्जित किया परन्तु 'श्री विश्वशान्ति ग्रन्थों के ज्ञान के बराबर कोई ऐसी पुस्तक नहीं जिससे इसकी तुलना हो सके। श्री विश्व शान्ति ग्रन्थ अतुलनीय है, जो महापुरुष भगवान द्वारा वर्णित है।

यह सत्य है हम अपनी ऊर्जा को व्यर्थ कार्यों में लगाकर चिंतित एवं क्रोधित रहते हैं। जो हमारे जीवन के धीमी मौत के कारण होते हैं।

श्री विश्वशान्ति आश्रम के सत्संग और ग्रन्थों के पठन-श्रवण और ध्यान से हम ऊर्जा संरक्षित करने में सफल हो सकते हैं। इसमें संशय नहीं है।

ध्यान ही एक ऐसी विद्या है जो हमारे प्राप्त सम्पूर्ण जीवन को आनन्द और शान्ति से भर देती है। तो व्यक्ति ज्ञानमय हो जाता है। बुद्धिमान पुरुष वही है जिनका अध्यात्मिक और मानसिक विकास दोनो हुआ हो।

पहले ज्ञान नहीं, पहले महापुरुष हुए उन्होंने ज्ञान की खोज की, अब क्यों नहीं? भगवान की कृपा सब पर है, आप पहचानिए तो सही।

आनन्दमय प्रभु के श्री विश्वशान्ति ग्रंथ रूपी वर्षा में भीगाए तो, ज्ञान की फसल लहरा उठेगी। आप अनुभव करके लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

ॐ शांतिमय

कृपापात्र लघु सेवक- अजय प्रकाश (छात्र)
त्रिवेणीपुरम, झूँसी।

ॐ श्री समधिमग्न महापुरुषदेव शरणम्

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवन मेरे मन में शुरू से ही इच्छा थी कि मैं भगवान को प्राप्त करूँ, लेकिन यह नहीं पता था कि कैसे करूँ। घर में पूजा-पाठ व गीता पढ़ती थी, लेकिन ज्ञान नहीं था। एक दिन मेरी भूतपूर्व सहेली जो अब इलाहाबाद में है उनको मैं भाभी जी बोलती हूँ और बहुत इज्जत करती हूँ। जिनका नाम है श्री शकुन्तला पाण्डे आनन्दमय उनकी मैं बहुत आभारी हूँ। जिन्होंने मुझे इस संसारी रूपी सागर से बचाकर आनन्दधाम में पहुँचा दिया। यों तो प्रारब्धवश सुख, दु:ख आते ही रहते हैं। अब सुख, सुख नहीं लगता और दु:ख भी दु:ख नहीं लगता हर समय आनन्द व प्रसन्नता बनी रहती है। यह जब ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय को जपने व गुरूदेव पिताजी की आज्ञा अनुसार चलने से ही हुआ है।

जो भी साधक जितना प्रभुजी के बताये हुए मार्ग पर चलेगा उन नियमों को धारण करेगा वह उतना ही अपने जीवन में सुख शान्ति व उन्नति पायेगा। यह मेरा पक्का अनुभव है।

जिस दिन मैं पहली बार आश्रम गयी थी और वहाँ पर पूज्यनीय छोटी बहन जी के श्री मुख से ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय की गूँज सुनी तभी से मेरा मन उस गूँज ने हर लिया था। आज भी पूज्यनीय व बहन जी की याद से नेत्र सजल हो जाते हैं। और जब यह मंत्र बोला गया कि जो भगवन आज हैं वे ध्यान से सुने यह ध्यान के मंत्र उन्ही के लिये है। तो मैंने यह सोचा कि यह ध्यान सिर्फ मेरे ही लिये हो रहा है और

मैं आज तक वो दिन भूली नहीं हूँ और उसी विधि के अनुसार सुबह व शाम दोनो समय संध्या प्रार्थना व ध्यान करती हूँ और यही चाहती हूँ कि जितना भी हो सके यह दिव्य सम्पत्ति का प्रचार करती रहूँ। जिसको भी यह मंत्र बताया है उसको बहुत लाभ मिला।

एक महिला मिली उसने कहा बहन मैं बहुत परेशान हूँ और तुम बहुत प्रसन्न दिखती हो क्या कारण है, तब मैंने उससे पूछा क्या बात है जो परेशान हो? तब उसने कहा कि एक तो मुझे गुस्सा बहुत आता है। कुछ समस्यायें हैं। तब मैंने उससे कहा कि हमारे गुरूदेव हैं और यह उनका मंत्र है ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय आप इस मंत्र का जाप एक महिना करके देखो और यह सच्ची प्रेम भक्ति है। इसको सुबह शाम पढ़े मैं उनके घर जाकर पढ़ने की विधि बता दी उस महिला ने विधि से जाप किया। तो वह एक दिन बहुत प्रसन्न मुद्रा में आयी। और कहने लगी बहन तुमने तो एक महिना जाप के लिए कहा था किन्तु आज मुझे मंत्र जाप करते हुए केवल २० दिन ही हुए हैं। जो मेरी समस्या थी वो भी हल हो गयी और मुझे गुस्सा बहुत आता था वह भी कम हो गया है। क्या जादू किया तुमने, मैंने कहा मैंने नहीं मेरे प्रभु ने किया है फिर एक दिन आयी और कहने लगी आज बताओ मुझे क्या मिला और कहने लगी कि आज गुरूदेव आये थे और दर्शन देकर कहने लगे खुश रहना। ऐसे मेरे प्रभु जिनको नहीं देखा उनको भी दर्शन देकर कृतार्थ कर देते हैं। इसलिए वे अर्न्तयामी हैं। और सबके हृदय की बात जानते हैं। अब तो प्रभु से मेरी यही प्रार्थना है कि जब तक यह जीवन है तब तक निष्काम भाव से तेरा सुमिरण, तेरा पूजन और प्रभु बस एक तेरा ध्यान ही करती रहूँ और कराती रहूँ। बसो आनन्दमय मेरे तन मन में।

–लघु सेविका श्यामलता आनन्दमय, हरिद्वार

मोक्ष का ज्ञान

श्री ध्यानमग्न सज्जनों की सेवा और ध्यानयोग के अनुरागी गुणवीर भक्तों को ॐ आनन्दमय प्रभु जी सदा-सर्वदा आनन्द-शान्ति में मग्न और प्रसन्न रखते हैं तथा ब्रह्मपद प्रदान करते हैं।

जन्म-मृत्यु का ज्ञान

कामी-क्रोधी दुर्जनों की सेवा के रागी और ध्यान-योग के त्यागी मनुष्यों को ॐ आनन्दमय प्रभु जी चिन्ता, नाराजगी युक्त दु:खी-अशान्त रखते हैं तथा उनसे क्रोध और रूदन कराते हैं।

स्वार्थी मनुष्यों से प्रेम करने का फल कैसा?

सर्प से प्रेम करने के जैसा।

श्री ध्यानमग्न महात्मा से प्रेम करने का फल कैसा?

शिशु के लिये माता के दूध जैसा।

क्रोधी बालक को दुर्योधन का और क्रोधी बालिका को सूपनखा का स्वरूप समझें।

मनुष्य धन-जन की वृद्धि करने में लगा है गुणों की प्रवाह नहीं करता। धन-जन एक बार दुल्हे की तरह मालूम देता है किन्तु शैने: शैने: अशान्ति दायक हो जाते हैं। मनुष्य को चाहिये कि वह गुणों की वृद्धि करे। गुण बल के साथ धन-जन की क्या कमी रहेगी?

विशेष स्मृति रहे। जो मनुष्य ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के अमृतमय-परमपद दायक, दिव्य, गुणों का त्याग कर आदेश दाता बनने के कर्म करते हैं। उन

मनुष्यों को ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी भय, शोक, विषाद, दुखम् और अशम, नामक दण्ड के भागी बनाते रहते हैं।

हे प्रिय आत्मन् । ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान का जप-ध्यान स्मरण-चिन्तन और इन्द्रियों का संयम, ॐ आनन्दमय भगवान की आज्ञानुसार सात्विक सेवा तथा सुहृदयता-समता युक्त प्रियता-प्रसन्नता, यह दिव्य साधन ॐ आनन्दमय भगवान की शरणागति के मुख्य अंग हैं, जो आठ सिद्धि दायक हैं।

ॐ श्री विश्व हितैषी श्री आनन्दमय भगवान प्रणाम

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री महापुरुष देव की मुझ बालक पर जो कृपा हैं, उनकी व्याख्या के लिए मेरे पास शब्दों की कमी का अनुभव हो रहा हैं, परन्तु फिर भी धीरज से अपनी भाषा द्वारा हृदय के विचारों को स्पष्ट करने की चेष्टा करुगाँ। ज्ञानवान प्रेमी त्रुटियों को क्षमा करेगें।

मैं भी राजसी तामसी मनुष्यों की भाँति अपने को अमर मानकर, नाना प्रकार के भोग भोगने के हेतु राजसी तामसी मनुष्यों के आदेशनुसार कर्म करके श्री आनन्दमय भगवान की जेल एवं कालापानी को प्राप्त था। अपनी इस अल्प आयु में ही मैं चिन्ता क्रोध, भय एवं हर्ष शोक आदि को ग्रहण कर मन को शत्रु बनाने पर तुला था, उस समय इस छोटी सी आयु में चिन्ता क्रोध की मानों एम.ए. प्राप्त थी। ऐसी अवस्था में मैं उन श्री प्रेमियों को श्रेय देता हूँ, कि जिन्होंने सपरिवार इस श्री शुभ धाम के ज्ञान को धारण करने के लिए एवं इस ज्ञान की एम.ए. पास करने के लिए मुझे ज्ञान दिया। मैं अपने मन में अज्ञान जनित राजस-तामस कर्मों के ज्ञान को संग्रह किया करता था, जिससे चिन्ता-क्रोध की वृद्धि हो रही थी। परन्तु अब उनका स्थान आनन्द, शान्ति, प्रेम-प्रसन्नता सहनशीलता और समता ने लिया है। मेरा यह अहोभाग्य है जो इतने बड़े परिवार में केवल मुझको ऐसा ज्ञान प्राप्त है एवं श्री विश्वशान्ति आश्रम का दर्शन करने का सुअवसर प्राप्त है। शेष प्राय: जो मेरे से बड़े हैं, चिन्ता क्रोध, भय, रुदन के कालापानी में वास कर रहे हैं, और उसी में अपने को धन्य मानते हैं। मुझको भी अज्ञान जनित मोह ममता का जाल दिखाते रहते हैं और अपने को मेरा सुहृद बतलाते हैं, एवं आश्रम के प्रति अश्रद्धा के खड़ाऊ पहनाते हैं, परन्तु वह नहीं जानते कि श्री प्रेमियों ने एवं श्री गीता जी का ज्ञान एवं श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के पठन-पाठन मनन-विचार ने अश्रद्धा रूपी खड़ाऊ जिस पर मैं खड़ा था चूर-चूर कर दिया है। और श्री आनन्द ध्यान की विजली को स्पर्श करने का सुअवसर प्राप्त हो चुका है और राजसी-तामसी पुरूषों का ज्ञान अब मेरे सामने तुच्छ है, इन राजसी-तामसियों को मैं अब एक साँप से भी दुष्कर मानता हूँ, क्योंकि

'सर्प दुर्जनयो मध्ये वर सर्प न दुर्जन।
साँप दशति कालेन दुर्जन तू तो पदे-पदे।।

इस प्रकार तो राजसी-तामसी पुरूषों का संग तो एक साँप के संग से भी दुष्कर है, जो कि सदा मेरे को क्रोध चिन्ता युक्त अन्धकार में ही रखना चाहते हैं, और चाहते थे। परन्तु मेरा भी श्री आनन्दमय भगवान् की अनन्त असीम कृपा से इस श्री ज्ञान एवं सुन्दर वातावरण में श्रद्धा रूपी पैर जम गये हैं, और शीघ्र से शीघ्र मेरी आत्मा इस आनन्द का लाभ उठायेगी क्योंकि अब वह दिन दूर नहीं कि श्री महापुरूषों के दर्शनार्थ एक बहुत बड़ी पंक्ति में खड़ा होना पड़ेगा।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
आपकी सेवा में उपस्थित प्रेमी
कुलदीप चन्द आनन्दमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मैं जब पहली बार कम्पनी बाग में सत्संग में अपने सास, ससुर और ननद के साथ गयी थी, तो प्रभु जी वृक्ष के नीचे ध्यानावस्थित बैठे थे हम उनके चरणों में जैसे ही सिर झुकाकर प्रणाम किया मानों हमारे शरीर में इतनी शान्ति प्रसन्नता का अनुभव हुआ कि मैं आज भी उस दिन को नहीं भूल पा रही हूँ। मुझे सत्संग में आना बहुत अच्छा लगता है और मैं घर में भी कीर्तन, भजन गुनगुनाती हूँ तो हमको बहुत अच्छा लगता है और मन भी प्रसन्न रहता है। मैं नित्य स्वाध्याय करती हूँ और अपने बच्चों से भी कराती हूँ और कहती हूँ अगर श्री करूणानिधान प्रभु जी की कृपा हम सभी पर बनी रहेगी तो हम सभी बहुत खुशहाल रहेंगे। हमें कभी किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी। हमारी बेटियाँ भी ॐ आनन्दमय प्रभु जी में बहुत श्रद्धा रखती हैं। बेटे बहू एवं दोनों पोतियाँ ॐ आनन्दमय का कीर्तन हमारे साथ करती हैं। जब मैं आरती गाती हूँ तो श्रद्धा बड़ी पोती हमारे साथ पूरा आरती गाती है। और पूजा-पाठ, ग्रन्थों को खूब ध्यान से देखेगी। और कहेगी दादी जी हमें आरती याद है हम गाते हैं न आपके साथ। हमें आप सत्संग में ले चला करिये। चार साल की है सैतानी भी बहुत करती है। इसी कारण कभी-कभी आ ही जाती है। जब कम्पनीबाग में पहले हर रविवार को सत्संग हुआ करता था, तो हर बार आनन्द ब्रम्ह जी नाम के एक सज्जन आते थे तब मैं उन्हें जानती भी नहीं थी। माता जी के बताने से पता चला था कि आनन्द आत्मा जी के ससुर जी हैं। वो सज्जन इतना अच्छा बोलते थे कि उनके शब्द आत्मा तक छू जाते थे। कहते थे कि श्री पूज्यनीय समाज की सेवा पूजा में ज्ञान अंजुली सहित मानसिक पुष्पांजली। भगवन् ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष भगवान के परम कोश से प्राप्त हुआ ॐ आनन्दमय भगवान् का यह महामंत्र का उच्चारण करना पूजा सामग्री है, यह पूजा सामग्री ममता और अहंकार का विनाश करने वाली है। ॐ श्री ब्रम्हज्ञान उच्चारण करता साधक यदि अपने दिमाग कोश को श्रेष्ठतापन के भावों को लेकर उच्चारण करता है तो वह निरहंकारी प्रेम विद्या का विद्यार्थी नहीं है और वह वैसे ही पश्चाताप करेगा जैसे अगाध दलदल की फँसी अपनी नौका में पाशांण खण्ड भरने वाला पश्चाताप करता है।

हे प्यारे मन श्रेष्ठपन की मान बड़ाई और पूजा प्रतिष्ठा के गंदे फल पुष्पों को स्वीकार करना है कब, ब्रह्मदर्शी पंडित महात्मा के पद को प्राप्त कर लेंगे तब अन्यथा प्रेम पात्री नहीं रहने देंगे, कलह पात्री बनायेंगे। ये ज्ञान हमें सुनकर बहुत अच्छा लगता था। मेरे पतिदेव जी भी हमें बहुत सी बातें प्रभु जी के बारे में बतलाते थे कि हम लोग माताजी के साथ में दिन-दिन भर सत्संग किया करते थे। ऐसे ही एक बार हम तेलियरगंज आश्रम में माताजी पिताजी के साथ गये थे तो श्री गुरु जी ने छत पर से दर्शन दिये। इशारे से बोले कि इधर से सूत्र पढ़ते नदी की ओर जाओ और उधर से आते समय सूत्र पढ़ते आओ, माता जी हमें यही बताई थीं। प्रभु जी का यही कहना है। फिर प्रभु जी हाँथ से आशिर्वाद देते हुए पीछे चले गये। उनके दर्शन और आशिर्वाद से मन में बड़ी प्रसन्नता हुई थी। एक बार कम्पनी बाग में हम उनके चरणों में सिर झुकाया, माला पहना कर प्रभु जी हमें हाथ दिखाकर आशिर्वाद दिये। एक तरफ सभी सत्संग प्रेमी देख रहे थे। उस समय कम्पनी बाग में इतनी भीड़ हुआ करती थी कि वहाँ का दृश्य देखते ही बनता था। वहाँ माइक पर ग्रन्थों को पढ़ाया भी जाता था, तो हमारे ससुर ओमकार नाथ जी हमसे कहते घर में खूब पढ़ा करो वहाँ पढ़ाने पर डरना नहीं, न अटकना, इसी कारण रोज पढ़ते थे। भजन, का स्वाध्याय प्रतिदिन बाजा बजाकर हमें कराते थे सभी पीछे-पीछे बोलते थे, जिससे हमारा अभ्यास कराने के लिए हिम्मत बनी रहे श्रद्धा भी बनी रहे और श्री प्रभुजी शक्ति भी प्रदान करते रहें। और शरम, संकोच भी खत्म हो जाये। गीता का अभ्यास भी कराते थे।

ॐ शांतिमय
आपकी सेविका
दुर्गा देबी, इलाहाबाद।

ॐ आनन्दमय ! ॐ शान्तिमय

श्री सत्संग सुधा

हे प्रिय आत्मन् ! हमें जो कुछ भी स्थावर जगम अर्थात जड़-चेतन प्राणी-पदार्थों का दर्शन-श्रवण प्राप्त हो रहा है उन सबके रचयिता एक मात्र ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी ही हैं। ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी दयामय हैं और प्रेममय हैं। वह अपनी अदृश्य शक्ति द्वारा इस आश्चर्यमयी ब्रह्मवाटिका की रचना करते रहते हैं। इसमें परिवर्तन करते हैं और विनाश की व्यवस्था भी स्वयं ही करते करवाते रहते हैं।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी ने इस ब्रह्म-सृष्टि के जलचर, थलचर और नभचर समस्त प्राणियों में से केवल मानव देहधारी नारी-नरों को प्रतिकूलता निवारण की विशेष सुगमता प्रदान की है। अपनी प्रतिकूलताओं को निवारण करने के लिये जैसे हाथ पैर मानव देह धारियों को दिये हैं वैसे अन्य को नहीं दिये हैं।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी मानव देहधारी नारी-नरों को ही वनस्पति विद्या के, यंत्र विद्या के और चिकित्सा विद्या के पदार्थ तैयार करने का ज्ञान और शक्ति प्रदान करते रहते हैं।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी मानव देह-धारी नारी-नरों को ही दूसरों की सेवा करने की योग्यता प्रदान करते हैं।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी मानव देहधारी नारी-नरों के दिमाग में जो अनेकों प्रकार की योग्यतायें प्रदान करते रहते हैं यह सब उनके विशेष दया-प्रेम का ही परिचय है।

स्मृति रहे ! ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी ने यह सब सुविधायें पशु पक्षियों को नहीं दी है। हाँ पशु पक्षी एक दूसरे से कलह करते देखे जाते हैं। एवं अपनी प्रतिकूलताओं को निवारण करने में असमर्थ होकर क्रोध और रूदन भी करते देखे जाते हैं अस्तु।

जो नारी-नर ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की विशेष दया और प्रेम को समझकर उन्हें अपना स्वामी मालिक समझने लगते हैं एवं सदा-सर्वदा उनकी आज्ञानुसार कर्म करने और करवाने में प्रयत्नशील रहते हुये उनके विधान को धारण करते हैं उन प्रिय भक्त नारी-नरों को ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी इस ब्रह्म वाटिका की श्रेष्ठ सेवा करने की ज्ञान और शक्ति प्रदान करते हैं तथा ध्यान-अमृत भी पान कराते रहते हैं।

हे प्रिय आत्मन् ! जो नारी-नर ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के विधान को धारण कर उनकी कठपुतली बन जाते हैं उनको ॐ श्री प्रभु पिता जी अपना परम पद प्रदान करते हैं और उन जिज्ञासु भक्तों द्वारा द्वादश भक्ति करने के पात्र बना देते हैं। यह उनका आश्चर्यमय विशुद्ध प्रेम है।

आनन्दमय प्रभु की लगन में,
यह पाँचों न सुहात। विषय-भोग, निद्रा,
हँसी, जगत प्रीति, बहु-बात।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अब मैं अपने आनन्दमय को रिझाऊँ, ।।टेक।।

न डाली छेड़ूँ न पत्ता छेड़ूँ, न कोई जीव सताऊँ।
पात-पात में प्रभु जी बसत हैं, वाही को सीस नवाऊँ।।१।।

न गंगा जाऊ न जमुना जाऊँ, न कोई तीरथ नहाऊँ।
अठ-सठ तीरथ घट भीतर, तिन में मल-मल नहाऊँ।।२।।

न औषध खाऊँ न बूटी लाऊँ, न कोई वैद्य बुलाऊँ।
पूर्ण वैद्य मिले अविनाशी, वाही को नबज दिखाऊँ।।३।।

ज्ञान कुठार कस कर बाँधू, सूरत कमान चढ़ाऊँ।
पाँच चोर बसे घट भीतर, तिन को मार गिराऊँ।।४।।

न जोगी होऊँ न जटा बढ़ाऊँ, न अंग विभूत रमाऊँ।
जेहि रंग रँगे आप विधाता, और क्या रंग चढ़ाऊँ।।५।।

चन्द्र सूरज दोउ सम कर राख्यो, निज मन सेज विछाऊँ।
कहत आनन्दमय सुनियों प्यारों, आवागमन मिटाऊँ।।६।।

ॐ शान्तिमय साधिका- माता ध्यान प्यारी

श्री मानव भाग्य विधाता से

स्मृति रहे ! *दिमागी शान्ति व आत्मिक आनन्द-शक्ति ॐ आनन्दमय प्रभु जी उन्हीं मानवों को प्रदान करते हैं जो मानव निष्काम तत्व के ज्ञाता हैं।*

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ *के दिव्य शब्द श्रद्धालु मानव के मन को सम-शान्त और प्रसन्न रखने में समर्थ हैं तथा ध्यान-समाधिमग्न श्री शान्ति मानों के हृदय कमल से प्रकट होने के कारण प्रत्यक्ष आनन्द-शान्ति दायक वरदान रूप हैं।*

इस भगवत विधान की उपासना *के अतिरिक्त व्यक्तिगत शान्ति व देश शान्ति और विश्वशान्ति होनी सम्भव नहीं।*

काम विजयी *ॐ आनन्दमय महामंत्र चिन्ता और नाराजगी का नाशक तथा आत्मिक आनन्द का दाता है। क्रोध विजयी ॐ शान्तिमय महामंत्र दिमागी शान्ति का दाता है।*

स्मृति रहे ! *सद्गुण-सम्पन्न सदाचारी विद्यार्थी परिवार के देश के और विश्व के लिये भाग्य विधाता होने का विधान है।*

प्रेम-प्रसन्नता *के त्यागी और चिन्ता क्रोध के रागी अध्यापक-अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षित छात्र-छात्राओं का चरित्र होगा कैसा? तामसी दुर्योधन और सूपनखा के जैसा। ॐ शान्तिमय*

संयम, *सेवा स्मरण युक्त समता-सन्तोष के*

विद्वान छात्र-छात्रायें आनन्द और शक्ति-दायक राम-राज्य की प्रतिष्ठा करेंगे।

***इस देव-श्रेणी** के मानव अपने निवास स्थान को ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की कृपा-शक्ति युक्त आनन्द-शान्ति सम्पन्न बनाते हैं।*

***काम-क्रोध-लोभ** युक्त ईर्ष्या द्वेष परायण अहंकारी वीर-वीरांगनाएँ दु:ख अशान्ति दायक रावण राज्य की व दुर्योधन राज्य की स्थापना करेंगे।*

इस असुर श्रेणी के मनुष्य अपने घर को भगवत न्याय, दण्डयुक्त दु:खमय अशान्तिमय एवं कलहधाम बनाते हैं।

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ १ से

श्री ध्यानयोग रहित उपदेशक काम-क्रोध और चिन्ता-नाराजगी के तीरों से पीड़ित है उनसे मानसिक आनन्द-शान्ति और मुक्ति चाहने वाले मनुष्य अन्ध-श्रद्धालु हैं।

दिव्य गुणों को धारण करने का और आसुरी गुणों को त्याग करने का नाम ब्रह्मज्ञान है।

दिव्य गुण सम्पन्न ब्रह्मदर्शी महामानव को ब्रह्मज्ञानी अथवा आत्मज्ञानी कहते हैं।

श्री महापुरुष देव के आदेशानुसार समस्त कर्म करते हुये भगवत कृपा से जो धन-जन, यश-मान आदि की प्राप्ति हो उसमें ममता, प्रेम और अहंकार के भावों का त्याग करते रहने से वह सुख-शान्ति दायक होने का विधान है।

अपनी आजीविकार्थ उद्योग सेवा-कार्यों की शिक्षा प्राप्त करना, ॐ आनन्दमय-भगवान का आदेश है।

अकर्मण्यता से शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक और बौद्धिक पाँचों प्रकार के रोगों की वृद्धि होनी सम्भव है, अत: यथा ज्ञान-शक्ति सेवा-स्मरण करते रहना चाहिये।

चित्त की प्रसन्नता समता की दाता है और नाराजगी क्रोध की जननी है तथा परिणाम हानिकारक ज्ञान की माता है जो मनुष्य अनर्थकारी, नाराजगी को आदर देता है, उसका पतन होते रहने का विधान है। **(श्री गीता अ० २ श्लोक ६३)**

मन इन्द्रियों को कामी-क्रोधी बनाते रहना, दु:ख-अशान्ति की प्राप्ति का साधन है और अपने हृदय को दया-प्रेम युक्त सन्तोषी-समतावान बनाने का अभ्यास करते-रहना आनन्द-शक्ति की प्राप्ति का साधन है।

चौपट दिमाग के क्या लक्षण हैं?

कर्म करके पश्चाताप करना, चिन्ता करना और नाराज होना।

महाबीर दिमाग के क्या लक्षण हैं?

सदारूपता प्रसन्नता दायक कर्म करना, चिन्ता न करना और नाराज न होना।

स्मृति रहे ! दु:ख अशान्ति दायक चिन्ता-क्रोध की सिद्धि को प्राप्त करना अथवा ध्यानयोग युक्त आनन्द-शान्ति दायक समता-प्रसन्नता की सिद्धि को प्राप्त करना पुरुषार्थ का विषय है।

१- क्या इन्द्रिय-भोग रमण से किसी को सन्तोष है?

२- क्या आपने अपने मन सहित आठ इन्द्रियों को दमन कर अपने आज्ञाकारी बनाया है?

३- स्मृति रहे ! इन्द्रिय संयमी मानव अपने सहित देश के मित्र होते हैं और इन्द्रिय भोगी मनुष्य अपने सहित देश के शत्रु होते हैं।

ॐ आनन्दमय भगवत-पद और दिव्य सम्पत्ति वितरण करने से क्षय नहीं होती। ॐ आनन्दमय पद सम्पत्ति को कोई चोर-डाकू छीन नहीं सकता। ॐ आनन्दमय पद-सम्पत्ति को कोई शत्रु नष्ट-भ्रष्ट नहीं कर सकता।

पाप का ज्ञान

मन सहित आठ इन्द्रिय द्वारा राजसी प्रेम-पूर्वक भोग-विलास करने वाले मनुष्यों का जीवन द्वेष-शोक युक्त पापमय होते रहने का विधान है।

कलह और रूदन का ज्ञान

जो मनुष्य ॐ आनन्दमय प्रभु पिता द्वारा रचे हुए प्राणी-पदार्थों को अपना बनाने का प्रयत्न तो करते हैं परन्तु ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की आज्ञापालन करना स्वीकार नहीं करते, उन मनुष्यों को श्री न्यायकारी प्रभु जी कलह और रूदन आदि के दण्ड द्वारा श्वान जाति के पशुओं के सदृश व्याकुल रखते हैं।

जो मनुष्य जनता-भगवान के सम्मुख तो सात्त्विक वाणी उच्चारण करे परन्तु उस वैधानिक ब्रह्मज्ञान को श्रद्धा-प्रेम पूर्वक धारण न करे, वह स्वाङ्गी-वाचाल मनुष्य साकार-निराकार भगवान द्वारा दण्ड का भागी होकर मरे।

स्मृति रहे ! *ॐ आनन्दमय प्रभु पिता द्वारा पद-प्रतिष्ठा प्राप्त किए बिना जो मनुष्य दम्भ-बल अथवा दर्पबल के अभिमान द्वारा भोगते हैं सत्कार मान और सेवा-पूजा उन मनुष्यों को ॐ श्री न्यायाधीश जी भुगताते आए हैं– दुखशोकामयप्रदा: ॐ शान्तिमय !*

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की दिव्य सम्पत्तियुक्त पद-शक्ति को प्राप्त किये बिना, सब प्रकार की अनुकूलता-प्रतिकूलताओं की जननी है।

गुरू-भक्त महात्मा की प्रतिकूलता को वैसे ही सहन करता है, जैसे परमात्मा द्वारा प्राप्त हुई प्रतिकूलताओं को सब कोई सहन करते हैं। परमात्मा पर कोई पंचायत करने नहीं जाता।

प्रथम श्रेणी के श्रद्धालु भक्त ॐ श्री गुरू देव भगवान पर पंचायत करने करवाने के संकल्प को दमन कर देते हैं। ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ब्रह्म-दर्शन होने के पूर्व ज्ञान के अहंकार का नशा, बड़प्पन भाव का नशा और आदेश दाता होने का नशा, सब प्रकार से पतन कारक हैं इसी का नाम है तामसी अहंकार !

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

भगवत-दर्शन में विश्वास की आवश्यकता

हम लोगों, को ॐ आनन्दमय भगवान के प्रभाव को जानने की आवश्यकता है, क्योंकि हम लोगों को ॐ आनन्दमय भगवान परमात्मा की जानकारी नहीं है। हम लोग इसीलिये हताश होते हैं, निराश होते हैं कहाँ तो सर्वशक्तिमान परमात्मा और कहाँ हम। हमें क्या भगवान के दर्शन हो सकते हैं? इस प्रकार हम समझते हैं, कहते हैं तो एक प्रकार से हम ॐ आनन्दमय भगवना पर लांछन लगाते हैं। अर्थात् उनका तो कोई हेतु (कारण) होता ही नहीं वे तो अकारण दया-ही-दया करते रहते हैं।

फिर दर्शन चाहते ही नहीं, हम भगवान के लिये पागल कहाँ हैं? व्याकुल कहाँ हैं? भगवान के दर्शनों के लिये तो, व्याकुलता होनी चाहिये, पागलपन होना चाहिए। मिलने की तीव्र-इच्छा होनी चाहिये।

भगवान कब मिलते हैं?

जब हम समझेंगे कि ॐ आनन्दमय भगवान से बढ़कर कोई वस्तु नहीं है भगवान के भजन-ध्यान से बढ़कर कोई वस्तु नहीं है। इनमें से कोई भी बात समझ में आ जाए, तो भगवान मिल सकते हैं। जब तक हम ॐ आनन्दमय भगवान से बढ़कर दूसरी वस्तु को समझ रहे हैं, तब तक भगवान दूर हैं। भगवान समझते हैं ,यह मुझसे बढ़कर दूसरी वस्तु को समझता है, उसका आदर करता है तब मैं किस तरह दर्शन दूँ? बहुत से आदमी-व्याख्यान सुनने के लिये इकट्ठा हुये, व्याख्यानदाता कई हैं फिर एक भला आदमी वहाँ व्याख्यान क्यों देगा।

हम कुछ न कुछ चाह ही रहे हैं और उसमें हमारा सन्तोष भी हो रहा है, भगवान देखते हैं- ठीक है। चाहना हमारी ऐसी होनी चाहिए कि दूसरे की गुंजाइश ही न रहे। जब तक गुंजाइस रहती है तब तक भगवान दूर खड़े रहते हैं।

ॐ आनन्दमय भगवान सब जगह व्याप्त हैं, दयालू हैं प्रभावशाली हैं, यह बतलाने का अभिप्राय यहीं है कि आपके हृदय में कमजोरी है कि भगवन हमें खूब भजन-ध्यान से मिलेंगे। हम पापी हैं, बात ठीक है। भजन-ध्यान तेज होने से भगवान मिलते हैं, किन्तु भजन-ध्यान तेज उनकी कृपा से ही होता है। भजन-ध्यान तेज हुये बिना भी भगवान मिल जाते हैं। भगवान के मिल जाने के बाद भी उससे भजन-ध्यान ही होगा।

ॐ आनन्दमय भगवान तो ऐसे हैं आपको विश्वास होना न होना दूसरी बात है। कैसा ही कोई नीच हो। न जाति की आवश्यकता है, न वर्ण की, न आश्रम की-केवल एक विश्वास की आवश्यकता है, फिर तो भगवान मिल सकते हैं। प्रेम तो होना ही चाहिए। विश्वास होने से प्रेम हो जाता है। बिना प्रेम हुये विश्वास से भी मिल जाते हैं।

ॐ आनन्दमय भगवान का गुण-प्रभाव बतलाया जाता है वह क्यों?

उनकी तरफ आकर्षित होने के लिए- गुण-प्रभाव भगवान से मिलाने वाले हैं, किसी के गुण-प्रभाव को जब हम सुनते हैं तब हमें उनसे मिलने की इच्छा होती है। महापुरुषों के और ॐ आनन्दमय परमात्मा के गुण-प्रभाव की कोई सीमा नहीं है। महापुरुषों के रहने का स्थान होता है, वहाँ जाकर मिला जा सकता है। परन्तु परमात्मा कहाँ मिले? तो महात्मा से तो जाकर मिलना पड़ता है परमात्मा तो वही प्रकट हो जाते हैं– फिर मिलते क्यों नहीं- इसलिए कि हमारे मन में विश्वास नहीं है।

किसी भी प्रकार से हमें विश्वास पैदा करना चाहिये, प्रेम पैदा करना चाहिये। प्रेम न भी हो तो विश्वास करना चाहिए, कि भगवान बिना प्रेम के श्रद्धा के भी मिलते हैं इतना श्रद्धा-विश्वास होना चाहिए कि बिना श्रद्धा-प्रेम से भी मिलते हैं चाहे इसे निश्चय कहो चाहे विश्वास कहो।

भगवान में समता-ज्ञान शान्ति आदि गुण अनन्त है। वे सर्वशक्तिमान हैं, जड़ को चेतन, चेतन को जड़ बना सकते हैं। जड़ को चेतन बना देना असम्भव बात है, असम्भव हमारे लिये है। भगवान के लिये नहीं है। जब वे ऐसे हैं, तब हमें अपने कल्याण के लिये चिन्ता ही क्यों होनी चाहिये? उनके विरद के ऊपर निर्भर होना चाहिये, फिर कल्याण की चिन्ता की आवश्यकता नहीं है। ॐ शान्तिमय

श्री गीता अ० ९ श्लोक २९,३०,३१,३२ अवश्य पठन करें। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री सत्संग सुधा

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

हे प्रिय आत्मन् ! मनुष्य देह धारी समस्त प्रतिमाओं में ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी स्वयं विराजमान है। और दर्शन-श्रवण मात्र समस्त-पदार्थ उनकी सम्पत्ति है अत: ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की आज्ञानुसार उनकी सम्पत्ति का सदुपयोग करते रहना मानव कर्त्तव्य है और उनकी आज्ञा के बिना किसी मानव का स्वतंत्रता पूर्वक अपने आज्ञाकारी बनाने की इच्छा करना, कामना करना वर्जित है। अन्यथा क्रमश: दिमागी शक्ति का और दिमागी सम्पत्ति का ह्रास-विनाश करते-करवाते रहेंगे।

स्मृति रहे! अपने आज्ञाकारी बनाने की इच्छा, द्वेष की माता है और द्वेष केवल बैरी दुश्मनों का निर्माता है, तथा वैरी-दुश्मन प्रतिकूलताओं के दाता हैं। कठिन दण्डधारा **श्री गीता अ० ७/२७, अ० १६/२१, अ० ३/४१ आदि में प्रकाशित है।**

इच्छा द्वेष समुत्थेन, द्वन्दमोहेन भारत।
''कामः आत्मानम् नाशनम्''
''कामः क्रोधः ज्ञान-विज्ञान नाशनम्''

भगवन! हम क्या इच्छा करें ?

समाधान– हे प्रिय आत्मन् ! सच्ची-प्रेम भक्ति में प्रकाशित विधि-विधान युक्त ॐ आनन्दमय प्रभु पिता को अपना मालिक बनाने की इच्छा करें। और तद्नुसार उनके आज्ञाकारी बनने की इच्छा से उस विधान के अनुसार सब प्रकार के कर्म-धर्म करें, यही इच्छा, यही कामना मानव के महा-मानव बनाने वाली है। यही निरंहकारी भक्ति, प्रेम-भक्ति दिमागी रोग नाशक है अन्यथा परिणाम हानिकारक कर्मो द्वारा मनोमय दिमागी कोष में विष, अग्नि और मानसिक वायु-बवण्डर की वृद्धि करते रहेंगे। तथा १२५ से अधिक रोगों द्वारा दिमाग को उबालते रहेंगे। इस महाघोर दण्ड का नाम है परेशानी। अनेक चित्त विभ्रान्ता मोह जाल समावृता: । हे प्यारे प्रेमियों मेंरे ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय नाम-रूप को मत भूलो। मुझे सर्वत्र, सब रूपों में और अपने हृदय दिमाग में मानों।

ॐ शान्तिमय

मनुष्य ज्यों ही यह मानने लगता है, मैं तो कुछ जानने लगा, तभी उसके ज्ञान के द्वार बन्द हो जाते हैं।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सन्त वचन

जीवन के उद्देश्य को जानने वाला ही मानव कहलाने का अधिकारी है। वास्तविक उद्देश्य आत्म साक्षात्कार है।

जीवन के सुअवसर को व्यर्थ विवाद अथवा व्यसनों में खो बैठना मूर्खता की पराकाष्ठा समझना चाहिये।

जीवन में एक ॐ आनन्दमय भगवान की उपासना से व्यष्टि को समष्टि में मिलादें यही मानवता की पूर्णता है। जीवन को श्रेष्ठ एवं प्रशंसनीय बनाने के लिये श्री विश्वशांति शास्त्र के उपदेशों को व्यवहार में लाना चाहिये।

जीवन में जो अहर्निश साथ देता है वही हम सबका अभिन्न सखा है। वह है परम सुहृद परमेश्वर जीवन को उज्जवल, तेजस्वी एवं प्रकाशमय बनाओं। वर्चस्वी जीवन ही वास्तविक जीवन है।

जीवन में विघ्न-बाधाएँ आती हैं, उन्हें सहर्ष स्वीकार करते हुये आगे बढ़ना चाहिये। विघ्न-बाधाओं में उलझकर हतप्रभ हो जाना पुरूषार्थ नहीं है।

जीवन सुसंग से सुधरता है और कुसंग से ही अवनति को प्राप्त होता है। अत: संग समझकर करें। जीवन में महान बनना कठिन है, पर परिश्रम से सफलता साध्य है। संयम और साधना महान बनाते हैं।

जीवन इस विश्व-वाटिका का अनोखा पुष्प है– जो विषयों के आतप से मुरझा जाता है। जीवन में नित्य नये मित्र ॐ आनन्दमय अनुरागी बनाना अच्छा है, पर एक भी शत्रु बनाना बुरा है।

जीवन की अन्तिम परीक्षा एक ही बार होती है– जिसका फल अच्छे-बुरे कर्मों पर निर्भर करता है। जीवन में किसी को अहंकारी बुद्धि द्वारा आज्ञा देना न सीखकर स्वयं ॐ आनन्दमय प्रभु की आज्ञा पालन करना सीखो। तभी महान बनोगे।

जीवन सुख की खान है, किन्तु उसको खोदकर सुखरत्न की निधि निकालने की विधि सीखनी होती है। जीवन में विषय सुख को वैसा ही समझो जैसा दाद का खुजलाना-प्रथम क्षणिक आनन्द फिर असह्य वेदना। जीवन दूसरों के सेवार्थ एंव जीवन में अनेक उलझनें आयेंगी, सुलझने का एक मात्र उपाय सत्पथ का अनुसरण करना है।

सत्पथ क्या है? सच्ची प्रेम भक्ति में विधान को पढ़ें। (श्री विश्वशान्ति आश्रम से प्रकाशित है।)

जीवन समाप्ति से पूर्व ही बुद्धिमान अपने सच्चे ध्येय की पूर्ति कर लेता है। जीवन को तुच्छ स्वार्थों में लगाकर सच्ची मानवता को गर्त में डालना है। अत: खोटे स्वार्थ से बचो। जीवन में दूसरों को सुधारने से पूर्व अपने मार्ग के काम-क्रोधादि दुष्कर्म को दूर करो।

जीवन सुख-शान्ति, प्रकाशमय तभी होगा जब अशान्ति और अज्ञान का समूलोच्छेद होगा। यह संभव है– साधन से, सत्संगति से।

जीवन का निर्माण स्वयं के हाथ में है, पवित्रता एवं पापात्मा का निर्णय कर्तव्यानुसार होता है। जीवन में न्याय का अपमान न करना ही वीरता है। न्याय का निर्णय शास्त्रों में है।

जीवन में कामना-पूर्ति की घृणित लिप्सा को त्याग दो। कामना पूर्ति की लिप्सा अत्यंत गर्हित होती है। जीवन में सब के विश्वासपात्र बनो, पर किसी के साथ विश्वासघात मत करो। विश्वासघात महाघातक है।

जीवन की समाप्ति होने से पहले ही भूल सुधार लें।

ॐ शांतिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

*भगवन्! **श्री गीता अ० ६ श्लोक १७** में श्री महापुरूष भगवान ने दु:खों का नाश करने के लिये पाँच आदेश दिये हैं–*

१- युक्त योग का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

२- युक्त आहार का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

३- युक्त विहार का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

४- युक्त कर्म का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

५- युक्त सोने का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

पहला आदेश- इनमें से प्रथम आदेश की महत्ता पर साधारण विवेचना किया गया था। अब शेष चार आदेशों की आवश्यकता का भी प्रतिपादन किया जायेगा।

दूसरा आदेश- दु:खों का नाश करने के लिये दूसरा आदेश श्री महापुरूष भगवान ने दिया कि ''**युक्त आहार बोधस्य**'' अभिप्राय यह है कि अन्न, फल, शाक, दूध, औषध आदि पदार्थ किस प्रकार, कितनी मात्रा में और किस मौसम में, किस आयु में किस प्रकार के श्रम में कैसे सेवन करें इसका ज्ञान भी ज्ञानवानों द्वारा प्राप्त करते रहना चाहिये। चिकित्सा विषयक ज्ञान बहुत बड़ा है अत: इस बात की आवश्यकता नहीं कि सब कोई इसे अध्ययन करें। हाँ जिनके पास यह ज्ञान है उनसे सेवा लेते रहना चाहिये।

तीसरा आदेश- अ० ६/१७ में श्री महापुरूष भगवान ने तीसरा आदेश दिया है ''**युक्त विहार बोधस्य**''। हमारे शरीर में जो नौ द्वार हैं उनके साथ हमें कैसा व्यवहार करना चाहिये इसे भी जानने की आवश्यकता है। हमारे शरीर के नौ द्वारों में प्रमुख द्वार हमारा मुख है। मुख के द्वारा कई प्रकार के कर्म किये जाते हैं। जिनमें से एक कर्म है वाणी द्वारा शब्द उच्चारण करना। मनुष्य को वाणी किस प्रकार उच्चारण करना चाहिये, इसके लिये श्री गीता **अ० १७/१५** में श्री महापुरूष भगवान ने बतलाया है:–

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रिय हितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते।।१७/१५।।

यदि हम अपनी वाणी इस विधान के अनुसार उच्चारण करने का अभ्यास नहीं करेंगे तो हमारी वाणी भगवत् विधान के विरूद्ध उच्चारण होगी। वाणी के व्यवहार में इतना प्रभाव है कि राज विधान के विरूद्ध दो चार तामसी वाक्य उच्चारण करने से उपस्थित सभा के लाखों मनुष्य शत्रु हो सकते हैं। अत: यदि नौ द्वारों के व्यवहार का ज्ञान प्राप्त नहीं किया गया तो दु:खों का नाश नहीं अपितु विकास होगा।

चौथा आदेश- भगवन्! इस **१७ वें श्लोक** में चौथा आदेश है–

''**युक्त कर्म बोधस्य**''। ॐ आनन्दमय प्रभु पिता ने मनुष्य का शरीर ही ऐसा रचा है कि यह जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त एक क्षण भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता। परन्तु वह यदि उन कर्मों को भगवत् विधान के अनुकूल करने का अभ्यास करता है तब तो वे कर्म भगवत् आनन्द-शक्तियुक्त भगवत् पद दायक होते हैं और यदि उन कर्मों को भगवत् अनुकूल करने का अभ्यास नहीं करता तो वे स्वाभाविक ही भगवत् विधान के प्रतिकूल होते रहते हैं। समाधान के लिये **श्री गीता अ० ३/५** में ज्ञान दिया है।

भगवत् अनुकूल कर्म क्या है इसका ज्ञान यद्यपि गीता में स्थान-स्थान पर दिया है, तथापि सुगमता पूर्वक समझने के लिये श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ आदर्श हैं।

अत: दु:खों का नाश करने के लिये तन द्वारा किसकी और कैसे सेवा करनी चाहिये इसका ज्ञान प्राप्त करना भी

आवश्यक है।

युक्त कर्म बोधस्य का एक अर्थ तो तन द्वारा सेवा करने का ज्ञान प्राप्त करना है और दूसरा अर्थ है धन द्वारा सेवा करने का ज्ञान प्राप्त करना है अर्थात् आर्थिक आय-व्यय करने का ज्ञान प्राप्त करना है। इस विषय में सर्वोत्तम विधान तो यह है कि भगवत् पदाधीश के आदेशानुसार आय-व्यय किया जाय परन्तु यह परम श्रद्धा का विषय है। दूसरी संख्या में आय करने में राज का आदेश मान लिया जाय और व्यय में भगवत् आदेश मान लिया जाय। इससे नीचे श्रेणी है कि राज्य के आदेशानुसार व्यय करें परन्तु इसका फल दु:खम और अशम: होगा। इससे नीचे जो राज्य विधान के विरूद्ध आय करना है उसके लिये तो कहना ही क्या है। उसके परिणाम स्वरूप का जीवन महादु:खमय-अशान्तिमय होने का विधान है।

आय-व्यय के विषय में भगवत् विधान तो यही है कि कर्मण्यवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन **(अ० २ श्लोक ४७)** परन्तु वर्तमान में किस मनुष्य को किस प्रकार आय-व्यय करनी चाहिये इसका ज्ञान भी ज्ञानवानों से प्राप्त करते रहना चाहिये।

पाँचवा आदेश- भगवन्! **अ० ६ के १७** वें श्लोक में श्री महापुरूष भगवान ने पाँचवा आदेश दिया है ''**युक्त स्वप्नोबोधस्य**'' शयन के विषय में भी मनुष्य को ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है कि उसे कितना सोना चाहिये, किस समय सोना चाहिये और कैसे सोना चाहिये। क्योंकि सोने के विषय में भी विभिन्न प्रकृति के मनुष्यों के विभिन्न विचार हैं। तामसी मनुष्यों का विचार होता है कि सोने के विषय में क्या ज्ञान प्राप्त करना है। गद्दा लगाया और सोया। तामसी मनुष्यों को श्री प्रभु जी अति अशान्त रखते हैं इसलिये वे कहते हैं कि उठो तो लूटो, ठगो, मारो, खाओ अन्यथा दु:खों का नाश करने के लिये सोते रहो। राजसी मनुष्य कहते हैं कि दु:खों का नाश करने के लिये खूब धन, सन्तान तैयार करो सोना छोड़ दिया जाय। परन्तु इससे उनके दु:खों का नाश नहीं विकास होता है। अत: सोने के विषय में भी ज्ञानवानों से ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

भगवन्! **अ० ६/१७** में दिये हुये पाँच आदेशों पर मनन विचार करने से यदि यह शंका हो जाय कि क्या युक्त आहार करने पर हमारा शरीर सदा निरोग रहेगा? क्या युक्त विहार करने से हमारे शरीर के नौ द्वार हमारे आज्ञाकारी हो जायेंगे? क्या ॐ आनन्दमय भगवान के विधान अनुसार देह और अर्थ द्वारा समाज की सेवा करने से समाज और अर्थ हमारे आज्ञाकारी हो जायेंगे? इस शंका के समाधान में श्री महापुरूष भगवान ने इस श्लोक में यह तो पहले ही कह दिया है कि ऐसा करने से तुम्हारे सब दु:खों का नाश हो जायेगा। परन्तु यह शरीर और समाज पूर्णतया आज्ञाकारी होंगे कि नहीं इसके लिये चेष्टस्य शब्द का प्रयोग किया। अभिप्राय यह है कि मनुष्य को अहंता, ममता, आसक्ति, कामना से रहित होकर चेष्टा करनी चाहिये। ॐ आनन्दमय भगवान के भक्त शरीर पर और धन-जन पर अपनी अहंता, ममता नहीं रखते। इसलिये उनके लिये धन-जन को आज्ञाकारी बनाने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। अत: युक्त योग, युक्त आहार, युक्त विहार, युक्त कर्म और युक्त सोने का बोध प्राप्त कर लेने पर सारे दु:खों का नाश तो हो जाता है परन्तु यह शरीर और धन-जन सर्वथा आज्ञाकारी होने सम्भव नहीं।

स्मृति रहे!

प्रतिदिन एक-दो घन्टा ध्यान करने के अभ्यासी छात्र-छात्राएँ सदाचारी होकर आप सहित देश का भाग्य उदय करेंगे अन्यथा ध्यानयोग के त्यागी और इच्छा-द्वेष, काम-क्रोध के रागी बालक-बालिकाएँ अपने परिवार सहित देश को आजीवन उबालते रहेंगे।

दम्भ, दर्प और अभिमान के परिणाम का ज्ञान

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारूष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संम्पदमासुरीम।।श्री गीता १६/४।।

''असुर'' मनुष्यों के लक्षण

दम्भ, दर्प, अभिमान, क्रोध, कठोर वाणी और अज्ञान यह ''असुर'' मनुष्यों के लक्षण हैं।

प्रश्न- दम्भ किसका वाचक है?

उत्तर- *सज्जनता की आड़ में छिपकर किये जाने वाले समस्त तामसी भाव-आचरण दम्भ के अन्तर्गत हैं। जैसे-*

झूठ, कपट, चोरी आदि ठगी को सिद्ध करने के लिये वाणी, लेखनी द्वारा प्रिय हितकारक, सदाचारी बनना। अपने को दानी या भक्त प्रसिद्ध करके धोखा देने के उद्देश्य को सिद्ध करना। काम, क्रोध, लोभ आदि दुर्गुणों को शान्त किये बिना ही पाप नाशक मुक्ति व आनन्द शान्ति दाता पण्डा, पुजारी, साधु, महात्मा, पंडित, गुरू आदि उपदेशक ''देवों'' का व प्रजापालकों का स्वांग धारण करना। इत्यादि सात्विक आचरणों की आड़ में तामसी भावों की सिद्धि करने वाले व्यक्तियों को दम्भी-पाखण्डी कहा है।

बहन आनन्द निधि जी
श्री गीता ज्ञान की मर्मज्ञ

प्रश्न- दर्प किसका वाचक है?

उत्तर- *प्राप्त धन, जन, भूमि, भवन, पद, प्रतिष्ठाजन्य घमण्ड के भावों का नाम दर्प है।*

प्रश्न- अभिमान किसका वाचक है?

उत्तर- ग्रंथों में पढ़कर रटन कर विभिन्न प्रकार के ज्ञान का तथा जाति व वर्णाश्रम का तथा नाम, ग्राम, देश, भेष, भाषा, मान, पद, आयु, विद्या, रूप, धन इत्यादि का व अन्य किसी प्रकार के बड़प्पन के भावों से युक्त अहंकार के भावों का नाम अभिमान है।

प्रश्न- आसुरी सम्पदा किसका वाचक है?

उत्तर- *दम्भ, दर्प और अभिमान का नाम आसुरी सम्पदा है। इन दुर्गणों से युक्त राजसी, तामसी मनुष्यों को श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु निम्न प्रकार से दण्ड प्रदान करते आये हैं*

१- हृदय में नाराजगी, उलाहना देने व जिद्दवाद, हठ, जबरदस्ती, कटु व कठोर वचन बोलने की आदत के परिणाम में कलह-क्लेशमय जीवन।

२- समस्त प्राणियों में भोग दर्शन व दोष-दर्शन का स्वभाव तथा दर्शन-श्रवण जन्य प्रतिकूलता और क्रोध।

३- अशान्तिदायक संकल्प-विकल्पों का प्रवाह बहाते हुये विपरीत बुद्धि द्वारा जीवन पर्यन्त तामसी ज्ञान प्रदान करते रहना। विस्तार ज्ञान अ० १६ श्लोक ७ से २१ तक प्रकाशित है। और परिणाम का ज्ञान अ० ९ श्लोक १२ और अ० १८ श्लोक ३५ में

प्रकाशित है। इन्हीं दुर्गुणों का नाम है रावण, ताड़का, हिटलर और रियास्ती राजा आदि।

हे मन! तू बारम्बार पठनकर! हे बुद्धि! तू बतला कि मैं देव हूँ अथवा असुर व राक्षस हूँ? मैं सरस्वती हूँ या सूपनखा? अर्जुन हूँ या दुर्योधन? मैं वसिष्ठ हूँ या कालनेमी मैं राम हूँ या रावण?

उपसंहार

दम्भ विषैले वृक्ष का बीज है, दर्प उसका विषैला वृक्ष रूप है, अभिमान उस वृक्ष का विषदायक मधुर फल है, उस स्वादिष्ट विषैले फल का सेवन का परिणाम दण्ड कठोरवाणी है। कठोर वाणी का परिणाम दण्ड क्रोध है। क्रोध का परिणाम दण्ड हृदय का अज्ञानमय-पागल होना अर्थात् अशान्तिमय जीवन।

''आसुरी योनी मापन्ना मूढ़ा जन्मनि-जन्मनि (अ० १६/२०)''

आसुरी पापों के प्रायश्चित का ज्ञानः— दम्भ का प्रायश्चित श्री प्रभु न्याय के भय से होता है। दर्प का प्रायश्चित श्री ध्यानमग्न सज्जनों की सेवा में रत व सज्जन बनाने में प्रयत्नशील रहने से होता है। अभिमान का प्रायश्चित समस्त जड़-चेतन आदि प्राणियों में भगवत् भाव करने से होता है कठोर वाणी का प्रायश्चित सत्य, प्रिय, हितकर वाणी उच्चारण करने के अभ्यास से होता है। क्रोध का प्रायश्चित सहनशीलता से होता है। अशान्तिदायक अज्ञान का प्रायश्चित इन्द्रियों के संयम व ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र के जप का अभ्यास व श्री आनन्द-शान्ति सम्पन्न भगवान के स्वरूप का सतत् स्मरण करने से होता है। समस्त मानसिक रोग दायक दुर्गुण-दुराचारों के त्याग का व सद्गुण-सदाचारों के ग्रहण का ज्ञान श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ के स्वाध्याय से होता है। **ॐ शान्तिमय**

ब्रह्मचर्य का प्रभाव

(रज-वीर्य की रक्षा से लाभ का ज्ञान)

पुरुषों के वीर्य की रक्षा से और देवियों के रज-वीर्य के संचय से शरीर में बल, तेज, उत्साह और ओज की वृद्धि होती है, शीत-उष्ण, पीड़ा आदि सहन करने की शक्ति आती है, अधिक परिश्रम करने पर भी थकावट कम आती है, शरीर में फुरती एवं चेतनता रहती है, आलस्य तथा तन्द्रा कम आती है, बीमारियों के आक्रमण को रोकने की शक्ति आती है, मन प्रसन्न रहता है, कार्य करने की क्षमता प्रचुर मात्रा में रहती है, दूसरों के मन पर प्रभाव डालने की शक्ति आती है, इन्द्रियाँ सबल रहती हैं, शरीर के अंग-प्रत्यंग सुदृढ़ एवं सुडौल रहते हैं, आयु बढ़ती है, वृद्धावस्था जल्दी नहीं आती, शरीर स्वस्थ एवं हल्का रहता है, स्मरण शक्ति बढ़ती है, बुद्धि तीव्र होती है, मन बलवान होता है, कायरता नहीं आती, कर्तव्य-कर्म करने में अनुत्साह नहीं होता, बड़ी से बड़ी विपत्ति आने पर भी धैर्य नहीं छूटता, कठिनाइयों एवं विघ्न-बाधाओं का वीरतापूर्वक सामना करने की शक्ति आती है, अन्तःकरण शुद्ध रहता है, आत्म-सम्मान का भाव बढ़ता है, दूसरों के प्रति सहिष्णुता तथा सहानुभूति बढ़ती है, दूसरों का कष्ट दूर करने तथा श्री सज्जनों की सेवा करने का भाव बढ़ता है, रज-वीर्य में अमोघता आती है, प्राणीमात्र में भगवत् भाव की जाग्रति होती है, नास्तिकता तथा निराशा के भाव कम होते हैं, असफलता में भी विषाद नहीं होता, सबके प्रति प्रेम एवं सद्भाव रहता है, श्री विश्वपिता आनन्दमय प्रभु के युवराज पद प्राप्त करने की योग्यता आती है।

-ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

श्री गीता विधान में प्रत्येक कार्य के तीन भेद बतलाये हैं। जो कर्म मनसा, वाचा कर्मणा राजसी मनुष्य करते हैं उनसे सर्वथा विपरित सात्त्विक मानव करते हैं और जो कर्म, तन, मन, वचन से सात्त्विक मानव करते हैं उनसे सर्वथा विपरीत तामसी मनुष्य करते हैं।

श्री गीता विधान में राजसी मनुष्यों के जो भाव आचरण बताये हैं वह अधिकांश वर्तमान में दूर देशवासियों के देखे सुने जाते हैं। जो पचास वर्ष पूर्व किसी अंश में भारत देश में भी थे।

बहन आनन्द निधि जी

गीता विधान में तामसी मनुष्यों के जो भाव आचरण बताये हैं वह वर्तमान में अत्यधिक मात्रा में भारत वासियों में व्यापक हुए हैं।

गीता में जो सात्त्विक सुख, शान्ति का वर्णन किया है वह ध्यानयोग अभ्यासी कुछ प्रेमी जनों ने किसी अंश में अनुभव किया है और करने में प्रयत्नशील हैं। जैसे विवाह कर्म के विषय में विचार करने से यह ज्ञान इतिहासों में पाया जाता है कि पहले विवाह की प्रथा स्वयंवर से थी परन्तु इस पद्धति को तामसी गुरूओं ने सर्वथा बन्द करके सात वर्ष की आयु में ही विवाह करना सर्वश्रेष्ठ धर्म बताया और कन्यादान का विशेष महात्म्य लिखा परन्तु इस पद्धति का दूर देशों में अभाव है। विवाह सम्बन्ध में उनके गुरूओं ने और माता-पिताओं ने स्वतंत्रता दे रखी है। वही राजसी प्रथा अब पुन: भारत देश में किसी अंश में आ रही है जिसका स्वार्थी लोग घोर विरोध कर रहे हैं।

विवाह के सम्बन्ध में सात्त्विक मर्यादा इस राजसी से भी विपरीत है। ध्यानयोग जनित आनन्द-शक्ति के ज्ञाताओं ने बतलाया कि ब्रह्मचारी बनों। यह प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जिन भगवतियों का और भगवत् भक्तों का ध्यान लगा है उन्होंने इन वर्षों में नवीन सन्तानें तैयार नहीं की। अब जो सन्ताने ध्यानयोग व सेवायोग का अभ्यास करेंगी वह सन्तानें विवाह कदापि नहीं करेंगी उन्हें यह ज्ञान हो गया है कि विवाह वही करेगा जो श्री प्रभु की जेल जाने का पात्र बन गया है।

अब मृत्यु के विषय में विचार किया जाय तो यही देखा-सुना जा रहा है कि राजसी मनुष्य न जीवन मुक्ति के विश्वासी हैं और न वह मृत्यु के पश्चात् किसी की मुक्ति करते हैं परन्तु तामसी मनुष्य जीवित माता-पिताओं को तो चिन्ता, क्रोध, भय, नाराज़गी और रूदन प्रदान कर तिरस्कार करते हैं तथा मृत्यु के पश्चात् आजीवन मुक्ति करते रहते हैं। यह उनके गुरूओं की आज्ञा है।

सात्त्विक मानव दोनों के विचारों से भिन्न हैं। वह अपनी मुक्ति जीवित अवस्था में अपने पुरूषार्थ में स्वयं करते हैं। यह कार्य अपने बेटे-पोतों पर नहीं छोड़ते।

इसी प्रकार तीनों के समस्त कर्म-धर्म भिन्न हैं। एक दूसरों से मेल नहीं हो सकता।

पदाधीश का सुख जेल निवासियों से भिन्न है और जेल निवासियों से कालापानी की मर्यादा भिन्न है। जेल निवासी पदाधीश हो सकता है परन्तु कालापानी वाला आजीवन कारावास में ही जीवन बितावे यही विधान सात्त्विक राजसी और तामसी नाम से श्री प्रभु पिता का है।

ॐ शान्तिमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

मुझे श्री महापुरूष भगवान जी की शरण में आए हुए आठ माह हो गये हैं, इन दिनों मेरा क्या से क्या हो गया है यह मेरे बयान से बाहर है।

मेरे एक मित्र ने मुझे श्री आश्रम का परिचय दिया। प्रथम दिन स्थान ढूढ़ने का विचार करते ही एक श्री आश्रम प्रेमी मिल गये जो वहाँ ले गये। श्री प्रभु का यह पहला अनुभव समझ में आया। प्रथम ही दिन सायंकाल के सत्संग में ऐसा मालूम दिया कि अपार आनन्द और शान्ति की वर्षा हो रही है।

केवल दो दिन के सत्संग में जाने से मेरा बीड़ी पीना व पान खाना बन्द हो गया। चार दिन के बाद ही भोजन सात्विक हो गया। १५ दिन में ही वजन दस पौंड बढ़ गया। कुछ ही दिनों में लिवर में फोड़ा बनने का मर्ज, जिससे मुझे बड़ी पीड़ा होती थी तथा जो बहुत दवाइयों के करने पर भी अच्छा नहीं होता था, ठीक हो गया। अभी तक तो केवल सायंकाल का सत्संग करता था परन्तु श्री महापुरूष भगवान जी की कृपा से व्यवस्था बनी तो चार दिन प्रात:काल के सत्संग में ध्यान लगने लगा और अब मैं डेढ़-दो घन्टे ध्यान में बैठ जाता हूँ।

इस प्रकार मेरा अत्यन्त दु:खी जीवन, जिसमें केवल पेरशानी ही परेशानी थी तथा जिसमें संसार की सभी वस्तुएँ काटने को दौड़ती सी मालूम देती थी, सुधर गया है। अब आनन्द ही आनन्द हो गया है। तकलीफ व परेशानी दीखती ही नहीं।

श्री महापुरूष भगवान जी की कृपा से मेरे बालकों को भी ध्यान का आनन्द प्राप्त हुआ है। ध्यान का इतना विचित्र आनन्द, विश्व में हजारों वर्ष बीत जाने के बाद, फिर महापुरुष आनन्दमय देव की कृपा से आज पुन: विकास को प्राप्त हुआ जिससे हजारों प्रेमी लाभ को प्राप्त कर रहे हैं।

मेरी सभी से प्रार्थना है कि श्री महापुरुष भगवान जी का संग कर ध्यान जनित लाभ को अवश्य प्राप्त करें।

ॐ शान्तिमय

गुप्त प्रेमी का अनुभव

श्री गुरुदेव श्री आनन्दमय भगवान जी के श्री चरणों में श्रद्धा के फूल, जिसमें केवल प्रेम की सुगन्ध तथा विश्वास का ही सौन्दर्य है अर्पित कर रहा हूँ। जिस प्रकार की अत्यन्त धूप में चलकर पथिक पेड़ की छाया में सुख का अनुभव करता है। वैसे ही श्री महापुरुष भगवान जी की छत्र छाया में आकर मुझे आनन्द और शान्ति का अनुभव हुआ है। जिस प्रकार की जल ऊँचे स्थान से नीचे की ओर बहने लगता है। उसी प्रकार श्री महापुरुष देव भगवान के आदेशानुसार चलने से श्री आपके प्रभाव से मेरे में आनन्द की धारा बहने लगी है।

मुझको तथा मेरे परिवार को श्री आपने अपार आनन्द व शान्ति का अनुभव कराया है जिस कारण मेरी श्रद्धा श्री भगवान के चरणों में एकनिष्ठ हो गयी है और आत्मसमर्पण का भाव जाग्रत हो गया है। श्री भगवान जी के शब्द नहीं अमृत की बूँदे है जिनको ग्रहण करने से हमारे जीवन में आनन्द का अनुभव हो रहा है।

सुख शान्ति अभिलाषी सभी श्री प्रेमियों से मेरी सविनय प्रार्थना है कि वे इधर-उधर न भटककर श्री महापुरुष भगवान की वाणी में विश्वास करें। ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप प्रारम्भ कर दे तथा श्री आपके आदेशों को कार्य रूप में परिणित करें। आनन्दमय शान्तिमय बन जायेगे। भारत वर्ष की तोपभूमि में बहुत वर्षों के पश्चात ऐसे महान शक्तिशाली श्री महापुरुष भगवान की प्रतिष्ठा हो रही है। अत: सभी का कर्तव्य है कि श्री चरणों का आश्रय लेकर आनन्दमय खजाने को इच्छानुसार लूटकर आनन्द मग्न हो जाय।

भगवन् सभी से प्रार्थना करता हूँ कि लोग कुछ ही दिन श्री महापुरुष भगवान का सत्संग कर अनुभव करें आपको अपरिमित आनन्द शान्ति का अनुभव होगा।

ॐ शान्तिमय

ॐ श्री गुरुदेव प्रणाम

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सेवा में,

सविनय निवेदन है कि ईश्वर की कृपा चारो ओर विखर रही है, लेकिन मनुष्य अधर्म रूपी अत्याचार से पिड़ित हैं। और क्षण-क्षण में पाप का भण्डार बढ़ता ही जा रहा है। कुछ मनुष्य जप, ध्यान, भजन में संलग्न है किन्तु यथा पूर्वक कर नहीं पाते। क्योंकि दारा, सुत तथा बन्धु के माया जाल में रचे-पचे होने के कारण उचित रूप से नहीं कर पाते।

सबसे बड़ी चीज़ माया है जो अपने मार्ग में खड़ी होकर ईश्वर से विचलित कराती है। ठीक ही है कि–

कामी-क्रोधी लालची, इनसे भक्ति न होय।
भक्ति करे सोई सूरमा, जाती वरन कुल खोय।।

और जो अच्छे मनुष्य है यदि वे किसी प्रकार की हितोउपदेश देते हैं तो वे उसे मिथ्या कहकर वर्जन कर देते हैं। हे श्री आनन्दमय प्रभु कोई ज्ञान की ऐसी ज्योति जलाइये। जिससे कि विश्व का कल्याण हो। हे प्रभो जब तक अंधकार में, मैं भटकता रहा तब तक मुझे कष्ट ही कष्ट प्रतीत होता था किन्तु जबसे यह महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय ज्ञान रूपी ज्योति जली तब से जो आनन्द प्राप्त होता है वह अकथनीय है जिन लोगों के हृदय में ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय की छाप पड़ चुकी है वे उच्च से उच्च शिखर पर पहुँचने का प्रयत्न कर रहे हैं। प्रभु जबसे यह मंत्र मालूम हो गया है तबसे बहुत प्रसन्नचित्त हूँ। हे नाथ मैं धन धान्य से परिपूर्ण हूँ। ॐ आनन्दमय की कृपा से वह शरीर मुझे दिया है जो कि बड़े प्रयत्न के साथ मिलता है, मुझे कृपा करके दिया। उसपर भी मैं आपसे कुछ मांगना चाहता हूँ। यह मेरा मन बहुत चंचल है वह हर समय विषय रूपी मीन की तरह है वह हमारे तालाब रूपी हृदय में प्रत्येक समय लगी रहती है उससे एक पल भी विलग नहीं होती जिसके कारण अनेकों जो कि कष्ट सहता आ रहा हूँ। तो उसे आप कृपा रूपी डोर, बंसी रूपी अंकुश के द्वारा मुझे बाहर निकाल लीजिये, इस प्रकार मेरे कष्ट को हरण कीजिये। हे प्रभु आप बहुत उदार हैं आप दीन दयालु हैं। आनन्दमय प्रभु, आप करूणा सागर हैं। आपकी कीर्ति विश्व में, पताका के समान फहरा रही है।

हे प्रभु जब तक कोई कष्ट नहीं पाता तब तक वह किसी की आराधना नहीं करता। हे प्रभु जब मैं ईश्वर को न मानूगाँ तब तक भला नहीं हो सकता, किसी भी देवता को मानू किन्तु मुझे शरण ॐ आनन्दमय के ही पास मिलेगी, जिस प्रकार कि उड़ता हुआ पक्षी अथाह समुद्र में जहाज के ऊपर बैठा है। और उड़ता है जब थक जाता है तो जहाज पर ही बैठता है क्योंकि उसे कहीं दूसरे स्थान पर आश्रय नहीं मिल सकता, क्योंकि या तो जहाज पर बैठूँ या तो अथाह समुद्र में गिरकर मर जाऊँ, उसी प्रकार मैं चाहे, जिस देवी-देवता को मानूँ किन्तु आश्रय मिलेगा तो आनन्दमय की शरण में मिलेगा। हे प्रभु आपके जो ॐ आनन्दमय रूपी नाम का पान कर चुका है, उसे दूसरे देवता की करील रूपी भक्ति को क्यों पान करेंगे। क्योंकि जो आपके कमल रूपी चरण के दर्शन कर चुका है वह देवी-देवता को क्यों मानेगा। जिस मनुष्य के अन्दर आनन्दमय रूपी ज्योति नहीं जली है तो वह चाहे काशी में बसे, सन्यास धारण करे। कंठी के बोझ धारण करें, केशों को बढ़ाकर जोगी बने, यह सब व्यर्थ है।

हे प्रभु, मैं अनेक प्रकार के भजन-भाव कीर्तन में जाया करता था किन्तु वह आनन्द नहीं प्राप्त होता था जो इस सत्संग से लाभ हो रहा है। हे प्रभु इस सत्संग से लाभ हो रहा है तो वह अवर्णनीय है। हे प्रभो-प्रेमी आपसे इस बात की प्रार्थना करता है कि आप अपने श्री चरण-कमलों का दर्शन अवश्य दे। जो भी चीज़ भगवत प्रेमियों के लिए कर रहे हैं वह बहुत ही अच्छा फल देगा।

–श्री कमल चरणों का दर्शन
रामसुमेर आनन्दमय

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

अनुभव

एक जिज्ञासु के आये हुये पत्र का समाधान हेतु आश्रम से दिये गये पत्र की प्रतिलिपि।

सुख शान्ति आनन्द प्राप्त करने वाले साधनों में अनुराग पूर्वक श्रद्धा प्रेम रखने वाले श्री नौरंग राय गुप्ता जी।

आप द्वारा प्रेषित पोस्टकार्ड प्राप्त हुआ।

भगवत् कृपा से आपने-अपने शुद्ध भावों के प्रभाव से अपार आनन्द का अनुभव किया, यह आपके अपने पुनीत कर्मों का प्रभाव है।

सांसारिक मनुष्यों द्वारा बांधे जाने वाले अधिकांश बन्धनों से आप मुफ्त हो गये और अब आपको ॐ आनन्दमय प्रभु कृपा से निर्भय-निश्चित करने वाले आनन्दमय शान्तिमय मार्ग से परिचय होकर आनन्द का भी अनुभव हो गया, यह सब दयामय भगवान की क्रम-क्रम से ऊपर उठाने की सीढ़िया हैं।

सर्वशास्त्रमयी श्री गीता ज्ञान से आश्रम का सिद्धान्त–

१- *संसार से सम्बन्ध रखने वाली संस्थाओं का मेम्बर बनने से बारम्बार जन्म-मरण दायक दु:खदायक संसार में आना पड़ता है। और ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के विधान का मेम्बर बन जाने से सदा के लिए भूत-भविष्य में आने वाले जन्म-मरण दु:खदायक संसार-सागर से मुक्त हो जाता है।*

२- *मन के संकल्प-विकल्पों का परिवर्तन करने के पश्चात् जीवन यात्रा को निर्विघ्न पूर्वक चलाने के लिए किसी अन्य स्थानों पर व्यवस्था करने करवाने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। (अर्थात आश्रम, मठ-मन्दिर आदि)*

३- *श्री गीता-ज्ञान के प्रवक्ता योगेश्वर महापुरुष श्री कृष्ण भगवान ने अनन्य जन्मों के दु:खों में ग्रहण करते व भविष्य में आने-वाले महान संकटों से मुक्त होने के लिए, जीवों के उद्धार होने के लिये अखण्ड आनन्द शक्ति दायक जो पत्रिका निकाली है वह गीता अ०-८ श्लोक १४,१५,१६ और श्री गीता अ० १२ श्लोक ६,७,८ है।*

इस पत्रिका को अध्ययन कर श्रद्धा-प्रेम-विश्वास के साथ धारण करने के बाद फिर किसी भी अन्य सांसारिक पत्रिका की आवश्यकता नहीं रहती, गम्भीरता पूर्वक मनन विचार कर स्वयं निर्णय लें।

आप अपने पूज्य पिता जी एवं श्री माता जी सहित सभी बच्चों को बहुओं को ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय योग सिद्ध महामंत्र को हर समय जप करने की शुभ प्रेरणा दें, जिससे सभी पारिवारिक जन इस अमृत रूप आनन्द-शान्ति का अमृतपान कर सदा जीवन में आने वाली विघ्न बाधाओं का सामना करते हुए हर समय प्रेम प्रसन्नता पूर्वक आनन्द शान्ति में मग्न रहें और इससे अधिक शब्द क्या लिखा जाये और न इससे अधिक लिखा ही जा सकता है।

श्री आश्रम से प्रकाशित एक छोटे से ग्रन्थ को अध्ययन कर आपका आश्रम से सम्बन्ध हुआ और आप आनन्द में विह्वल हो गये अब अधिक आनन्द प्राप्त करने के लिए और सभी को प्राप्त कराने के लिए सतत् साधन में प्रयत्नशील हो जायें।

–प्रार्थी की पुनः सप्रेम पूर्वक सादर पुष्पांजलि

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय
ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष भगवान् शरणम्

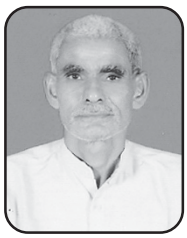

मैं सर्व प्रथम ॐ आनन्दमय भगवान के सत्संग में उपस्थित सभी भगवन का हार्दिक नमन करता हूँ। भगवन्! ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी के मिलन के पूर्व मैं क्या था वह दशा अवर्णनीय है। दुःख ही दुःख, चिन्ता ही चिन्ता से घिरा था। यद्यपि मेरे पास धन-जन सम्पत्ति की कमी नहीं है। फिर भी घर परिवार में अशान्ति ही अशान्ति है। मैंने देखा कि मेरे परिवार के लोग सदैव से ही देवी देवताओं के उपासक रहे हैं। मेरी माता जी चारो धाम का दर्शन कर आयी हैं। पिता जी गया में पूर्वजों के लिए पिंड दान भी कर आये हैं। हमारे बड़े भ्राता श्री राम गोविन्द जी भगवन एक तपस्वी का जीवन व्यतीत कर रहे हैं तथा श्री रामचन्द्र जी भगवन एक ऐसे विद्यालय में कार्यरत हैं जहाँ भगवान का मन्दिर भी है। और वे उस मन्दिर के पुजारी भी हैं। तथा परिवार के सम्पूर्ण सदस्यों में भगवान के प्रति आस्था है। इतने पर भी हमारे परिवार का रूप कहने योग्य नहीं है। महापुरूषों का ज्ञान है कि संसार में जो कुछ भी हो रहा है सब भगवान की लीला है सब उन्हीं माया शक्ति का खेल है। श्री गीता अ० १८/६१ परम पद दायक सात्विक और दण्ड दायक राजसी-तामसी आचार विचारों के अनुसार ही ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी छोटे-बड़े नारी नरों को भरमाते रहते हैं। कुछ महीने से मैं ॐ आनन्दमय भगवान के दिमागी चिकित्सा की पाठशाला में प्रवेश लिया हूँ जिससे मेरे जीवन में भारी परिवर्तन हुआ है। प्रभु जी की पाठशाला में हमें ज्ञान हुआ कि दुख अशान्ति दायक तन और मन द्वारा सेवा योग ध्यानयोग का अभ्यास करवाना ही आनन्द शान्ति और मुक्ति दायक है। और भगवत विधान से पूर्ण श्री विश्व शान्ति ग्रन्थ में प्रकाशित ब्रह्म विधान को धारण करने से दिमागी निरोगता युक्त सुखशान्ति की प्राप्ति होने का विधान है यद्यपि यह सब कार्य करने की क्षमता हमारे दिमाग व शरीर में नहीं है क्योंक १७ नवम्बर १९६८ से ही देह और दिमाग मेरा दोनों ही रोगी है दिमाग में कुछ भी सही रूप से पढ़ने लिखने की क्षमता नहीं है। फिर भी यथा शक्ति तथा भक्ति ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान के नाम व रूप की स्मृति से हमारे मुर्दे शरीर व मन में आनन्द शक्ति व ज्ञान शक्ति का संचार हुआ जिससे हमारी चिन्ता दिमागी अशान्ति व्यथा व्याकुलता काफी कम हुई। इन सबको पूर्णतया समाप्त करने के लिए अब मैं ॐ आनन्दमय भगवान की शरण में हूं। ॐ शान्तिमय।

–सेवक
जगदीश नारायण मिश्र
प्र०अ०पू०मा०वि० असढ़िया।

श्री विश्वशान्ति आश्रम से लाभ उठाने के पात्र कौन हैं?

१- मनुष्य मात्र ही श्री विश्वशान्ति आश्रम की सेवाओं से लाभान्वित होने के अधिकारी है।

२- वेश, भाषा, जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म आदि का कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

३- श्रद्धा-प्रेम पूर्वक श्री विश्वशान्ति भाग १ के पृष्ठ १३ से १६ तक प्रकाशित सात नियमों को पालन करने का अभ्यास करने वाले बालक, वृद्ध, युवा, नर-नारी, सभी हैं सदस्य बनने के अधिकारी।

४- शारीरिक श्रम द्वारा तथा अन्य किसी भी प्रकार से बार-बार सेवा करने वाले अथवा यथा समय विशेष सहयोग देने वाले भी सदस्य समझे जाते हैं।

५- श्रद्धा-प्रेम पूर्वक नियमों को पालन कर दिमागी शान्ति का अनुभव करना ही सदस्यता का मुख्य शुल्क है। ***ॐ शान्तिमय***

ॐ श्री महापुरूष देव भगवान शरणं
ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

एक भक्त को दूसरे श्रद्धालू का पत्र

शुभ आशिर्वाद,

प्रेषित पत्र प्राप्त हुआ, समाचारों से अवगत हुआ। यह जानकर कि श्री गुरू भगवान जी का दर्शन अभी तक तुम्हें प्राप्त नहीं हुआ, इतना दु:ख जितना किसी घर वाले के मर जाने से होता है। पूर्वजन्म के किसी बड़े पाप के कारण तुम्हें अब तक श्री आनन्दमय भगवान का दर्शन नहीं हो सका। मैं और श्री गिरधारी लाल जी प्रतिदिन इसी बात की प्रतिक्षा किया करते थे कि तुम्हारा पत्र आयेगा जिसमें श्री गुरू भगवान जी की भेंट की चर्चा होगी। सत्संग प्रेमियों की बातें होंगी और अनेक प्रकार की भगवत् प्रेम की बातें होंगी जिन्हें जानकर महान प्रसन्नता प्राप्त होगी। किन्तु सारी आशाओं पर पानी फिर गया। खैर भगवान जी की ऐसी ही प्रेरणा थी। यदि तुम लोंगो के दिल साफ होते और सच्ची लगन मन में लेकर के जाते तो पहले ही दिन गुरू भगवान जी के दर्शन हो जाते। गुरू भगवान जी तो सबके मन की बात जानने वाले अन्तर्यामी हैं, उनका दर्शन अत्यन्त दुर्लभ है। लोग सैकड़ों मील दूर से गुरू भगवान जी का दर्शन करने के लिये आते हैं और एक तुम लोग हो कि बैठे-बैठाये भी उनका दर्शन नहीं कर सके। मेरी अम्मा से पुन: प्रार्थना है कि रोज नहीं तो कम से कम इतवार को ही दोनों टाइम तुम्हारे साथ सत्संग में जाया करें। मैं नहीं चाहता कि उनके विश्वास को मैं तोड़ूँ। यदि वे समझती हैं कि गंगा नहाने से ही उनके पाप कट जायेंगे तो मुझे बड़ी खुशी है वे अवश्य रोज गंगा नहायें लेकिन प्रार्थना है कि इतवार को किसी प्रकार तुम्हारे साथ वहाँ जाकर कुछ लाभ उठाने की कोशिश भी करें। यदि वे इतवार को भी साथ न दे सकें तो मेरी आज्ञा है कि तुम अकेली ही वहाँ अवश्य चली जाया करो। भगवान का भक्त बड़ा वीर होता है। उसे किसी बात की चिन्ता नहीं करनी चाहिये। मीरा ने सबको छोड़-छाड़ कर भगवद् प्राप्ति की थी। तुलसीदस ने भी अपनी स्त्री को त्यागकर श्री राम की उपासना की थी। प्रहलाद ने पिता को त्यागकर ईश्वर-प्राप्ति की थी। कोई कुछ भी कहे तुम्हें फिकर नहीं करनी चाहिये। डाक्टर साहब की बहनों से तुम वीरता का पाठ सीख सकती हो। उन्होंने माता-पिता को त्यागकर आजन्म ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर श्री गुरू भगवान जी की शरण में सदैव के लिये आ गई हैं। यदि वे भी अपने मूर्ख माता-पिता की बात मानकर सबकी तरह विवाह करके अनेक संतानों को उत्पन्न करके जीवन बितातीं तो उन्हें क्या मिलता? उन दिव्य विभूतियों को देखो और अज्ञान फंदे को काटकर नित्य निरन्तर भगवान को याद करते हुये अपने सारे गृहस्थी के कार्यों को करो। सब लोगों से प्रेम करो। क्रोध-चिन्ता का त्याग करो। केवल भगवान जी पर विश्वास रखो। मैं स्वस्थ एवं प्रसन्न हूँ। मेरे लिए तनिक भी चिन्तित होने की आवश्यकता नहीं। दोनों समय संध्या-प्रार्थना करना। **ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय सत्संग में जाने के लिए एक सत्संग भाई ने अपने भाई को जो पत्र लिखा उसकी कापी–

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

प्यारे भाई अवधेश! सदा प्रसन्न रहो!

मैंने तुम्हे एक कार्ड दिया था। तुमने कोई उत्तर नहीं दिया। पुन: पत्र देता हूँ आशा है कि कुछ लाभ उठाओगे। जाते समय तुमने बचन दिया था कि मैं प्रतिदिन सत्संग में जाया करुँगा किन्तु अत्यन्त दु:ख की बात है कि तुम वहाँ न जाकर अपने अमूल्य मानव जीवन को बुरी तरह नष्ट कर रहे हो। पुन: हाथ जोड़कर प्रार्थना है कि समय रहते चेत जाओ वर्ना पीछे पछताने से कुछ लाभ नहीं होगा। जहाँ तुम सारे दिन व्यर्थ घूम-घाम करके अपना स्वास्थ्य चौपट कर रहे हो। क्या वहाँ केवल एक घन्टा तुम सत्संग के लिए अर्पण नहीं कर सकते हो। सोचो बार-बार सोचो। उठ पड़ो अज्ञान का नाश करके भगवान की प्राप्ति के लिये तैयार हो जाओ। क्या अभी तक अवारा घूमने से कोई लाभ तुम्हें मिला है? यदि नहीं तो क्यों विष का सेवन करते चले जा रहे हो? केवल एक सप्ताह सत्संग में जाओ। यदि वहाँ कुछ न मिले तो मत जाना। यदि कुछ गल्ती लिख दिया हो तो हमें माफ करना। यदि तुम सुखी हो जाओगे तो मुझे भी खुशी होगी। शेष कुशल। **शुभेच्छु**

चेतावनी

उम्र बीत रही है, रोज-रोज हम मौत के नजदीक पहुँच रहे हैं। वह दिन दूर नहीं है जब हमारे इस लोक से कूच कर जाने की खबर अड़ोसी-पड़ोसी और सगे सम्बन्धियों में फैल जायेगी। उस दिन सारा गुड़ गोबर हो जायेगा। सारी शान धूल में मिल जायेगी। सबसे नाता टूट जाएगा। जिनको मेरा-मेरा कहते जीभ सूखती है, जिनके लिये आज लड़ाई उधार लेने में भी इन्कार नहीं, उन सबसे सम्बन्ध टूट जायेगा, सब कुछ पराया हो जायेगा। मन का सारा हवाई महल पल भर में ढह-जायेगा। जिस शरीर को रोज धो-पोछकर सजाया जाता है- सर्दी गर्मी से बचाया जाता है, जरा सी हवा से परहेज किया जाता है। सजावट में तनिक सी कसर मन में संकोच पैदा कर देती है, वह सोने सा शरीर राख का ढेर होकर मिट्टी में मिल जायेगा। जानवर खायेंगे तो विष्ठा बन जायेगा, सड़ेगा तो तो कीड़े पड़ जायेगे। यह सब सत्य, परम सत्य होने पर भी हम उस दिन की दयनीय दशा को भूलकर याद नहीं करते। यही बड़ा आश्चर्य है। श्री समाधिमग्न महापुरुषों का ज्ञान है– प्रतिदिन जीव मृत्यु के मुख में जा रहे हैं, पर बचे हुए लोग अमर रहना चाहते हैं इससे बढ़कर आश्चर्य क्या है। अतएव भाई! बेखबर मत रहो। उस दिन को याद रखो। सारी शेखी चूर हो जायेगी। ये राजमहल, सिंहासन, ऊँची-ऊँची इमारतें किसी के काम में न आवेंगी। बड़े शौक से मकान बनाया था, सजावट में धन की नदी बहा दी थी, पर उस दिन उस प्यारे महल में दो घड़ी के लिए भी इस देह को स्थान न मिलेगा। घर की सारी मालिकी छिन में छिन जायेगी। सारी पद-मर्यादा मटियामेट हो जायेगी।

इस जीवन में किसी की कुछ भलाई की होगी तो लोग अपने स्वार्थ के लिये दो-चार दिन तुम्हें याद करके रो लेंगे। सभाओं में शोक प्रस्ताव पास कर रश्म पूरी कर दी जायेगी। दु:ख देकर मरोगे तो लोग तुम्हारी लाश पर थूकेंगे, वश न चलेगा, तो नाम पर तो चुपचाप जरूर ही थूकेंगे। बस इस शरीर का इतना सा नाता यहाँ रह जायेगा।

अभी कोई भगवान का नाम लेने को कहता है तो जवाब दिया जाता है- ***''मरने की भी फुरसत नहीं है, काम से वक्त ही नही मिलता''*** पर याद रखो उस दिन अपने आप फुरसत मिल जायेगी। कोई बहाना बचेगा ही नहीं। सारी उछल कूद मिट जायेगी, तब पछताओगे, रोओगे पर ***''फिर पछताये का बनै जब चिड़िया चुग गई खेत।''*** मनुष्य जीवन जो भगवान को प्राप्त करने का एक मात्र साधन था, उसे तो यों ही खो दिया, अब बस रोओ। तुम्हारी गफलत का नतीजा ठीक ही तो है।

और कोई-कोई तो कहते हैं कि बात सब ठीक है, पर अभी तुम्हारी उम्र नहीं है साधन करने की तो उनसे पूछो कि क्या तुमने अपने मौत की तारीख की रजिस्ट्री करा ली है कि मैं अमुक तारीख को मरुँगा। यदि बुढ़ाई आ गई तो क्या खाक छानोगे। जब हाथ पैर में दम न रह जायेगा, इन्द्रियाँ शिथिल हो जायेगी, तृष्णा बढ़

जायेगी और चाह न बुझेगी तब क्या साधन करोगे। अगर बृद्धावस्था में भजन-ध्यान की बात होती तो ५० वर्ष की आयु के पश्चात सभी देवी पुरुष अपने-अपने घरों का त्याग कर वानप्रस्थी बनते और हम सभी लोगों को अपने-अपने घरों में वृद्धाओं का दर्शन न होता। इसी परिणामस्वरूप आज नवीन सन्तानें उनके दर्शन श्रवण से चिन्तित, क्रोधित, मानसिक रोगी होती जा रही हैं।

पर अब भी चेतो। विद्या, बुद्धि वर्ण, धन, मान पद का अभिमान छोड़ कर सरलता से परमात्मा की शरण लो। भगवान की शरण के सामने ये सभी तुच्छ है नगण्य हैं।

विद्या-बुद्धि के अभिमान में रहोगे तो फल क्या होगा? तर्क विवाद करोगे, हार गये तो रोओगे, पश्चाताप होगा। जीत गये तो अभिमान बढ़ेगा। अपने सामने दूसरे को मूर्ख समझोगे। 'हम शिक्षित हैं' इसी अभिमान से तो आज हमारे मन में बड़े-बड़े पुरुखाओं को मूर्खता की उपाधि प्रदान कर दी है। इस बुद्धि के अभिमान ने श्रद्धा का सत्यानाश कर दिया है। आज परमेश्वर भी कसौटी पर कसे जाने लगे। जो बात हमारी तुच्छ तर्क से कभी सिद्ध नहीं होती, उसे हम किसी के भी कहने पर कभी मानने को तैयार नहीं। इसी दुरभिमान ने सतशास्त्र और संतो के अनुभव सिद्ध वचनों में तुच्छ भाव पैदा कर दिया। हम उन्हें कवि की कल्पना मात्र समझने लगे। धन के अभिमान ने तो हमे गरीब भाइयों से अपने ही जैसे हाथ-पैर वाले भाइयों से सर्वथा अलग कर दिया। ऊँची जाति के घमण्ड ने मनुष्यों में परस्पर घृणा उत्पन्न कर एक दूसरे को बैरी-बना दिया। व्यभिचार, अत्याचार, अनाचार आज हमारे चिरसंगी बन गये। बड़े से बड़े पुरुष आज हमारी तुली मपी अक्ल के सामने परीक्षा में फेल हो गये।

पद-मर्यादा की तो बात ही निराली है, जहाँ कुर्सी पर बैठे कि आँख फिर गई, आसमान उल्टा दिखाई पड़ने लगा। दो दिन की परतन्त्रता मूलक हुकूमत पर इतना घमंड, चार दिन की चाँदनी पर इतना इतराना, अरे, रावण, हिरण्यकश्यप सरीखे धरती तौलने वालों का पता नहीं लगा, फिर हम तो किस बाग की मूली हैं। सावधान हो जाओ। छोड़ दो इस विद्या, बुद्धि, वर्ण, धन, परिवार पद के झूठे मद को तोड़ दो अपने आप बाँधी हुई इन फाँसीओं को फोड़ दो भण्डा जगत के मायिक रूप का, जोड़ दो मन उस अनादि काल से स्थित श्री आनन्दमय भगवान में और मोड़ दो निश्चयात्मिक बुद्धि की गति को निज निकेतन नित्य सत्य आनन्द के द्वार की ओर।

ॐ आनन्दमय

शान्त स्वभाव रहो, किसी के द्वारा कैसा भी लांच्छन लगाये जाने पर भी अपने मन को मत बिगाड़ो।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

सुगमतम साधन

हमें जो मानव-शरीर मिला है, यह हमारे लिये बहुत ही सुयोग की बात है। इसे हम अपने प्रयास से नहीं प्राप्त कर सकते। यह तो भगवान् की अहैतुकी करूणा से ही प्राप्त होता है। इस तरह हमारा यह मानव-तन अत्यन्त दुर्लभ है। इसका पुन: मिलना उतना ही कठिन है, जितना पके फल के गिर जाने पर फिर उसका डाल में आ लगना।

इस मानव-तन का महत्व भी अद्वितीय है। चौरासी लाख योनियों में मानव-योनि ही ऐसी योनि है, जिसमें आत्मा का मुख्यतया त्राण किया जा सकता है। कीट-पतंग, पक्षी, पशु आदि प्राणी, भला ईश्वर, जीव और प्रकृति के सम्बन्ध में क्या विचार कर सकते हैं! अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय और आनन्दमय कोषों में से कुछ कोष ही इन प्राणियों में होते हैं। कोषों का समग्र विकास तो केवल मनुष्य-शरीर में ही होता है। इसलिये मनुष्य की ही 'आत्मा-नित्य है, इसके अतिरिक्त शरीर, इन्द्रिय, विषय आदि सब अनित्य है' ऐसा, विवेक कर सकता है इसका अभ्यास कर सांसारिक भोगों से, विरक्त हो सकता है, इस वैराग्य को दृढ़ कर शम-दम-उपरति-तितिक्षा-श्रद्धा-समाधान-रूप सम्पत्तियों को प्राप्त कर सकता है, तब मुमुक्षता आती है और तब कही जाकर ब्रह्मविचार का अधिकारी बन सकता है। मनुष्य से भिन्न पशु आदि योनियों में साधन-चतुष्टय का यह तारतम्य सम्भव नहीं है। उनके पास वह बुद्धि नहीं होती, जो ब्रह्म का साक्षात्कार कर सकती है। अत: मनुष्य-शरीर में ही चौरासी लाख योनियों के प्रवाह के थपेड़ों से उत्पीड़ित आत्मा का त्राण सम्भव है। आत्मा का त्राण होता है- भगवान् की प्राप्ति से। आत्मा पूर्ण अमरता, पूर्ण ज्ञान, पूर्ण सुख चाहता है। इसकी पूर्ति सच्चिदानन्द ब्रह्म की प्राप्ति से ही सम्भव है, क्योंकि भगवान् के अतिरिक्त कोई पूर्ण अमर, पूर्ण ज्ञान स्वरूप और पूर्ण आनन्दस्वरूप नहीं है। इस तरह यह स्पष्ट है कि मानव-तन का एकमात्र लक्ष्य है- भगवत प्राप्ति। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये भगवान् ने अनादि काल से चेतावनी भी दे रखी है। कह रखा है कि इस शरीर के रहते-रहते भगवान् को अवश्य प्राप्त कर लो, नहीं तो विनाश-ही-विनाश हाथ लगेगा।

किंतु माया के चक्कर में पड़कर हमने भगवान् की इस चेतावनी पर कभी ध्यान नहीं दिया। परिणामत: अब तक हमें विनाश-ही-विनाश हाथ लगता आया है। अनादि काल से हम भटकते, ढहते, ढिमलाते चले आ रहे हैं। कभी-कभी घोर यन्त्रणाओं के मध्य से होकर गुजरना पड़ता है। गणित के पास वह अंक नहीं है जिससे हमारे भटकाव के लम्बे वर्षों की गणना की जा सके। इस लम्बी अवधि में कई बार भगवान् की दया प्राप्त हुई होगी, कई बार हमें मानव-तन मिले होंगे, किन्तु तबसे विनाश-ही-विनाश झेलते आ रहे हैं- पूर्ण सुख, पूर्ण ज्ञान और पूर्ण अमरता की प्राप्ति तो दूर की बात रही। यह परिणाम है भगवान् की चेतावनी की अनुसुनी करने का। प्रश्न उठता है कि मानव माया की इस लपेट से निकले कैसे! माया की असीम ऊँचाई के सामने बौना मानव खड़ा भी कैसे हो! जिस माया ने अपनी लपेट से आजतक हमें निकलने न दिया, वह इस बार भी कैसे निकलने देगी! क्या ऐसा कोई उपाय है, जिससे हम पर माया का वश न चले!

इसका उपाय भी उसी करूणालय ने अनादि काल से बता रखा है, जिसने हमें मानव तन प्रदान किया है और जिसने उसके उपयोग के लिये सतर्क भी किया है वह उपाय बहुत ही सरल है, और व्यापक इतना है कि मानव-जीवन का प्रत्येक क्षण उसके दायरे में आ जाता है। तब प्रत्येक श्वास साधनामय बन जाता है। माया भी इस दायरे में पैठ नहीं पाती-वर्तमान में वह उपाय है- ***योगसिद्ध महामंत्र- ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय का जप और श्री विश्व शान्ति भाग- १ के पृष्ठ १३ से १६ तक प्रकाशित ७ नियमों का पालन।*** इससे बढ़कर और सुविधाजनक साधन क्या हो सकता है? भगवान् की करुणा की कोई सीमा नहीं। उसने आत्मा के त्राण के लिये हमें मावन-तन दिया, उसके उपयोग के लिये चेताया, उपयोग न करने पर होने वाले कटु परिणामों को दरसाया और सुगम साधन दिया जिससे बढ़कर और कोई साधन हो नहीं सकता। ऐसे सुगम साधन का परिचय प्राप्त कर भी जो आलस्य-प्रमाद वश उसकी उपेक्षा कर देता है उसका जीवन पश्चातापमय बन जाता है और प्राप्त होता है शोक व रोना ही रोना। **ॐ शान्तिमय**

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय

धर्म क्या है?

१- जो मनुष्य के सम्पूर्ण दु:खों की निवृत्ति कर, उसे परमानन्द की प्राप्ति करा देता है वही तत्त्व धर्म कहलाता है

२- ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का जो परमपद दायक सत्य विधान है उसी का नाम धर्म है।

३- धर्माचरण ही सदा कल्याण करता है।

४- सत्य धर्म की महिमा में कोई सन्देह नहीं है।

५- सब कुछ सत्यधर्म में ही प्रतिष्ठित है।

६- सत्य विधान, सत्यधर्म, सत्यमार्ग पर चलने वालों का भटकना मिट जाती है।

७- जो मनुष्य ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के सत्य विधान-सत्य धर्म को त्याग कर, क्षण भंगुर दु:खालय स्वरूप संसार में सुख-शान्ति की खोज करते हैं, उन्हें सुख कहाँ मिलेगा?

८- जो मनुष्य सुख तो चाहते हैं परन्तु सुख के मूल धर्म आचरण को नहीं करते अर्थात् ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के विधान अनुकूल कर्म नहीं करते, उन्हें सुख कैसे मिल सकता है?

९- सुख की चाह रखने वालों को तत्परता पूर्वक सत्य धर्म को धारण करना चाहिये।

१०- यदि सच्चे सुख की चाह है, तो ध्यान समाधिमग्न सच्चे संत महापुरुषों का संग करें, सत्य महापुरुषों की सेवा करें, उनके सानिध्य में रहें तथा श्री प्रभु पिता की ओर मोड़ने वाले श्री विश्वशान्ति, श्री गीता आदि सत्य शास्त्रों को पठन करें। असमर्थों की सेवा का ध्यान रखें, अवश्य सुख-शान्ति का अनुभव होगा।

सत्य शास्त्रों की अवहेलना करने वाले मनुष्य महान दु:ख-अशान्ति को प्राप्त होते हैं।

स्मृति रहें! जिस मार्ग पर, ब्रह्मवेता, तत्त्ववेता सत्य महापुरुष चले हो, वही चलने योग्य सन्मार्ग है, उसी का नाम धर्म है। सत्य धर्म ही रक्षा करता है। दु:खों से मुक्त होने का दूसरा कोई उपाय नहीं है। सत्यधर्म की विस्तार पूर्वक व्याख्या श्री विश्वशान्ति आदि ग्रन्थों में प्रकाशित है।

ॐ शान्तिमय

योगशक्ति का चमत्कार

दिमागी शान्ति, आत्मिक आनन्द और भगवन् पद-शक्ति ध्यानयोग के अभ्यास द्वारा प्राप्त होने का विधान है।

ध्यानयोग के अभ्यास से ही मन-इन्द्रियाँ अपने वश मे होती है। अन्यथा मन-इंद्रियाँ मनुष्य को व्याकुल रखती हैं व कलह कराती हैं और दुराचारी बना देती हैं।

ध्यानयोग के अभ्यास बिना धनी और निर्धनी सभी मनुष्य चिन्ता-शोक, क्रोध, भय और नाराजगी की अग्नियों से जलते हुए आजीवन दुःखी-अशान्त रहते हैं।

स्मृति रहे, प्रतिदिन एक-दो घण्टा ध्यान करने के अभ्यासी छात्र-छात्राएँ सदाचारी होकर आप सहित देश का भाग्य उदय करेंग अन्यथा ध्यानयोग के त्यागी और इच्छा-द्वेष, काम-क्रोध के रागी बालक-बालिकाएँ अपने परिवार सहित देश को आजीवन उबालते रहेंगे।

योग सिद्ध महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय द्वारा ही ध्यान लगने का विधान है, प्रचलित बाजारु मंत्रों से ध्यान लगना सम्भव नहीं। सेवायोग और ध्यानयोग के त्यागी मनुष्यों द्वारा ध्यानयोग जनित आनन्द-शान्ति की प्राप्ति होने का विधान नहीं है।

बालक, वृद्ध, युवा, नर-नारी।
सब कोई हैं ध्यान के अधिकारी।।

ध्यान का माहात्म्य

ध्यान सिन्धु मुक्ता घने, जो खोजे सो पाय ।
चंचलता मन की मिटे, सहज शान्ति मिल जाए ।1।

ध्यान बिना नहीं भक्ति है, ध्यान बिना नहीं ज्ञान ।
ध्यान बिना शान्ति कहाँ, कहते श्री भगवान् ।2।

विधि ध्यान की यों करो, जैसे लोभी दाम ।
कहे आनन्द बिसरे नहीं, पल पल लेत सम्भाल ।3।

ध्यान सिद्धि को यों करो, जैसे कामी काम ।
एक पल बिसरे नहीं, निसदिन आठों याम ।4।

ध्यान भगवत् प्रेमी करें, पावें परमानन्द ।
ध्यान बिना जो सुख चाहें, वह नर हैं मतिमंद ।5।

सिमरत सुरत लगाए के, मुख से कछु न बोल ।
बाहर के पट देय कर, अन्दर के पट खोल ।6।

आँख, कान, मुख मूँद कर, तुरत आनन्द लखाय ।
आनन्दमय के सुमिरन से , आनन्दमय बन जाए ।7।

–ॐ शान्तिमय